आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अक्टूबर, 2014
वर्ष : 72 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अक्टूबर, 2014 ★ कार्तिक, 2071

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

\- आचार्य हस्ती

(गांधीनगर)
पि. ३८२००९

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

\- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

\- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

31372

।। महावीराय नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

With Best Compliments From : -आचार्य श्री हीरा

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।
- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com
Website: www.jinvani.net

सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अधुवे असासयंमि,
संसारंमि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं,
जेणाऽहंदोग्गइं न गच्छेज्जा।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.1

यह नश्वर और अशाश्वत जग,
जो प्रचुर दुःख का स्थानक है।
मैं करूँ यहाँ पर कौन कर्म,
जो दुर्गति-दुःखनिवारक है।।

अक्टूबर, 2014
वीर निर्वाण संवत्, 2540
कार्त्तिक, 2071

वर्ष 72 अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
आजीवन देश में : 1000 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-
एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	प्राकृत भाषा एवं उसका महत्त्व	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	सम्यग्ज्ञान (2)	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी	13
प्रवचन-	दुःख की परिस्थिति में होती है साधना	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी	14
शोधालेख-	स्वाध्याय : एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री	19
	चतुर्विध कषायों के विविध नाम	-डॉ. दिलीप धींग	31
प्रासंगिक-	सफलता के सूत्र	-गणाधिपति तुलसी	25
अध्यात्म-	सम्पन्नता का सूत्र	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	28
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Conflict Removing Vision of Jainism	*-Dr Dharmchand Jain*	43
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (90)	-श्री धर्मचन्द जैन	50
धारावाहिक-	लग्न की वेला (8)	-आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'	54
नारी-स्तम्भ -	भूल हुई है मुझसे	-श्री युगराज जैन	61
युवा-स्तम्भ-	बचें रात्रि-भोजन के दोष से	-श्री पारसमल चण्डालिया	64
स्वास्थ्य-विज्ञान -	क्या हम स्वस्थ रहना चाहते हैं?	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	71
बाल-स्तम्भ -	बचें हम बारूद पटाखों से	-श्रीमती कमला सुराणा	86
कविता/गीत-	परवशता में इस जीव ने, कितने कष्ट उठाये हैं	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	27
	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (3)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी	40
	दीक्षा-मुक्तक	-श्री मगनचन्द जैन	49
	गुरुवर हीरा-मान बड़े उपकारी हैं	-श्री कुनाल सतीश जैन	53
	समता का सागर	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	68
	अहो गुरुवर!	-सौ. छाया मनोहर भण्डारी	69
	रहो सप्त व्यसनों से दूर	-सुश्री निधि जैन	70
	मोबाइल नहीं, मुसीबत है.....	-श्री राजीव नेपालिया	79
	काव्यांजलि	-श्री विनोद कुमार सेठ	89
विचार-	कतिपय न्यायोक्तियाँ एवं उनका तात्पर्य	-डॉ. श्याम बहादुर वर्मा	39
शिविर-अनुभव-	वीतराग ध्यान साधना शिविर : अनमोल खजाना	-श्री प्रमोदचन्द महनोत	84
प्रेरक-प्रसंग-	ब्लू क्रास ऑफ इण्डिया	-संकलित	63
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें	-संकलित	81
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	90
परिणाम-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड	-संकलित	92
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	99
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	120

सम्पादकीय

प्राकृत भाषा एवं उसका महत्त्व

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

प्राकृत भाषा भारत की प्राचीन भाषा है। यह जनभाषा के रूप में लोकप्रिय रही है। जनभाषा अथवा लोकभाषा ही प्राकृत भाषा है। इस लोक भाषा 'प्राकृत' का समृद्ध साहित्य रहा है, जिसके अध्ययन के बिना भारतीय समाज एवं संस्कृति का अध्ययन अपूर्ण रहता है। प्राकृत में विविध साहित्य है। यह जैन आगमों की भाषा मानी जाती है। भगवान महावीर ने भी इसी प्राकृतभाषा के अर्धमागधी रूप में अपना उपदेश दिया था। यह शिलालेखों की भी भाषा रही है। हाथीगुंफा शिलालेख, नासिक शिलालेख, अशोक के शिलालेख प्राकृत भाषा में ही हैं। कथा साहित्य की दृष्टि से सर्वाधिक प्राचीन रचना वड्ढकहा (बृहत्कथा) भी प्राकृत भाषा में ही लिखी गयी थी। पादलिप्तसूरि की तरंगवई, संघदासगणि की वसुदेवहिण्डी, हरिभद्रसूरि विरचित समराइच्चकहा, उद्योतनसूरिकृत कुवलयमाला आदि कृतियाँ उत्कृष्ट कथा-साहित्य की निदर्शन हैं। विमलसूरि विरचित 'पउमचरियं' जैन रामायण का ग्रन्थ है जो प्राकृत में ही लिखा गया है। जंबूचरियं, सुरसुन्दरीचरियं, महावीरचरियं आदि अनेक प्राकृत चरितकाव्य हैं जिनके अध्ययन से तत्कालीन समाज एवं संस्कृति का बोध होता है। हालकवि की गाहासतसई (गाथा सप्तशती) बिहारी की सतसई का प्रेरणास्रोत आधारग्रन्थ रही है। गाहा सतसई शृंगाररस प्रधान काव्य है, जिस पर 18 टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं। रुद्रट, मम्मट, विश्वनाथ आदि काव्य शास्त्रियों ने गाहासतसई की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है तथा संस्कृत के काव्यशास्त्रों में गाहासतसई आदि अनेक प्राकृतग्रन्थों को उदाहरणों में उद्धृत किया है। राजस्थान के प्रसिद्ध संस्कृत कवि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने इस पर 'सर्वङ्कषा' संस्कृत टीका लिखी है। जयवल्लभ द्वारा रचित 'वज्जालग्ग' भी प्राकृत की एक महत्त्वपूर्ण रचना है, जिसमें प्राकृत भाषा के सम्बन्ध में कहा है-

ललिए महुरक्खरए जुवईयणवल्लहे ससिंगारे।
सन्ते पाइयकव्वे को सक्कइ सक्कयं पढिउं।।

अर्थात् ललित एवं मधुर अक्षरों से युक्त, युवतियों को प्रिय तथा शृंगाररसयुक्त प्राकृत काव्य के होते हुए संस्कृत को कौन पढ़ना चाहेगा। यह कथन प्राकृत की महत्ता को सुबोधता, सुग्राह्यता, सरसता आदि विशेषताओं से स्थापित करता है।

वाक्पतिराज के गउडवहो में कहा है-

सयलाओ इमं वाया विसंति, एत्तो य णेंति वायाओ।
एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ च्चिय जलाइं।।

समस्त भाषाएँ प्राकृत भाषा में ही प्रवेश करती हैं तथा सभी भाषाएँ प्राकृत भाषा से ही निकलती हैं। यह उसी प्रकार होता है जिस प्रकार कि समस्त जल समुद्र में ही जाकर गिरता है तथा समुद्र से ही निकलता है।

संस्कृत जहाँ संस्कारित अथवा परिष्कृत भाषा है, वहाँ प्राकृत लोकभाषा है। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि प्राकृत भाषा का उद्भव कब हुआ? कुछ विद्वान् इसे संस्कृत से उत्पन्न मानते हैं, किन्तु जनभाषा को संस्कृतभाषा से उत्पन्न नहीं माना जा सकता। प्राकृत में एवं वैदिक संस्कृत में अनेक शब्दों का साम्य है। लौकिक संस्कृत एवं प्राकृत में भी साम्य है तथापि प्राकृत अलग भाषा है एवं संस्कृत अलग। संस्कृत जहाँ शिक्षितों की भाषा है वहाँ प्राकृत आमजन की भाषा है। प्राकृत एवं संस्कृत में वही भेद है जो हिन्दी एवं मारवाड़ी में है। हाँ, यह अवश्य है कि जिस प्रकार मारवाड़ी एवं हिन्दी में परस्पर संवाद सम्भव है इसी प्रकार प्राकृत एवं संस्कृत में भी संवाद सम्भव है। संस्कृत नाटकों में इसके उदाहरण भरे पड़े हैं। वहाँ शिक्षित ऋषि, राजा आदि संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं तथा रानी, विदूषक, नटी, द्वारपाल, सभी स्त्री पात्र एवं सामान्यजन प्राकृत भाषा में अपने विचार सम्प्रेषित करते हैं।

महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव महाकाव्य में शिव एवं पार्वती परिणय पर सरस्वती द्वारा शिव को संस्कृत में तथा पार्वती को प्राकृत भाषा में आशीर्वचन प्रदान कराया है, यथा-

द्विधा प्रयुक्तेन च वाङ्मयेन, सरस्वती तं मिथुनं नुनाव।
संस्कारपूतेन वरं वरेण्यं, वधूं सुखग्राहिनिबन्धनेन।।

-कुमारसम्भव, 7.90

संस्कृत को परुषबन्ध अर्थात् कठोरबन्ध वाली तथा प्राकृत को सुकुमारबन्ध वाली भाषा मानते हुए दोनों में उतना ही अन्तर माना गया है जितना स्त्री एवं पुरुष में-

परुसो सक्कयबंधो, पाउअबंधो वि होइ सुउमारो।
पुरिसमहिलाणं जेत्तिअमिहंतरं तेत्तिअमिमाणं।।

प्राकृत लोकभाषा है, इसलिए उसके विविध रूप हैं। इन रूपों में महाराष्ट्री, शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, पैशाची आदि अनेक प्राकृत भाषाएँ प्रयुक्त रही हैं। जैन वाङ्मय में प्राकृत प्रमुख भाषा है, किन्तु प्राकृत के प्रकारों की दृष्टि से विचार करें तो श्वेताम्बर आगम जहाँ अर्धमागधी प्राकृत में हैं, वहाँ दिगम्बर आगम ग्रन्थ शौरसेनी प्राकृत में हैं। प्राकृत के ये

नाम क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होने से पड़े हैं। संस्कृत नाटकों में जो प्राकृत प्रयुक्त हुई है उसमें शौरसेनी, मागधी एवं महाराष्ट्री का प्रयोग अधिक हुआ है। कालिदास, भवभूति, भास आदि के नाटक इसके साक्षी हैं।

प्राकृत भाषा में जो वैशिष्ट्य है उसका अनुमान कालिदास के नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रयुक्त शब्दावली 'सउंदलावण्णं पेक्ख' से किया जा सकता है। प्राकृतभाषा में प्रयुक्त इस शब्दावली से दो अर्थ स्पष्ट होते हैं- 1. शकुन्त (सउंद) अर्थात् पक्षी का लावण्य (लावण्णं) देखो (पेक्ख)। 2. शकुन्तला के वर्ण (सउंदला-वण्णं) को अर्थात् शकुन्तला पुत्र भरत को देखो (पेक्ख)। ये दो अर्थ संस्कृत पंक्ति 'शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व' से नहीं निकलते हैं। उसका एक ही अर्थ 'शकुन्त के लावण्य को देखो' निकलता है। उपमा, श्लेष, रूपक आदि अलंकारों के साथ व्यंजना शक्ति के प्रयोग भी प्राकृत भाषा में भरपूर हुए हैं। एक उदाहरण देखिए जिसमें एक भील की तीन पत्नियों द्वारा पूछे गए तीन प्रश्नों का एक ही उत्तर देकर तीनों को सन्तुष्ट कर दिया गया है-

भिल्लस्स तिण्णि भज्जा, इक्का मग्गइ पाणिं देहि।
बीआ मग्गइ हरिणं, तईआ गवरावए गीअं।।

एक पत्नी कहती है- पानी दीजिए, दूसरी कहती है हरिण चाहिए, तीसरी पत्नी गीत सुनाने की याचना करती है। भील ने तीनों प्रश्नों का एक ही उत्तर दिया 'सरो नत्थि'। प्राकृत भाषा में प्रयुक्त इस वाक्य के तीन अर्थ हैं- 1. सर नहीं है, तालाब नहीं है अतः पानी नहीं दिया जा सकता है। 2. शर अर्थात् बाण नहीं है इसलिए हरिण का शिकार नहीं हो सकता, 3. स्वर नहीं है अतः गीत नहीं गाया जा सकता। सर, शर एवं स्वर इन तीनों के लिए प्राकृत में 'सर' शब्द है।

प्राकृत भाषा से ही अपभ्रंश एवं फिर हिन्दी तथा अनेक ग्रामीण भाषाओं का विकास हुआ। प्राकृत के बहुत से ऐसे शब्द हैं जो भारत की ग्रामीण भाषाओं में उपलब्ध हैं, किन्तु संस्कृत में वे शब्द नहीं है। प्राकृत के ऐसे शब्दों को प्राकृत वैयाकरणों ने देशज शब्द कहा है। डंडा, नाहर, छोयर (छोरा), चिडय (चिडी), बइल्ल (बैल) आदि देशज शब्द हैं। ईसर, सीस, जणा, लोग आदि ऐसे अनेक शब्द हैं जो राजस्थानी एवं प्राकृत में ज्यों के त्यों हैं।

प्राकृत भाषा की यह विशेषता है कि इसमें द्विवचन का प्रयोग नहीं है। वर्णमाला में ऋ, लृ आदि कुछ वर्ण नहीं है। तीन प्रकार के श ष स में से मागधी को छोड़कर मात्र 'स' का ही प्रयोग मिलता है। इसमें मुखसौकर्य है। जो आसानी से बोले जा सकें, ऐसे ही रूपों की प्रधानता है। इसमें 'सहस्र' 'शीर्ष', 'प्रव्रज्या', 'कृतज्ञता' जैसे संयुक्त व्यंजन वाले शब्द नहीं होते। इसमें संयुक्त व्यंजन वाले शब्द होते हैं, किन्तु उनमें प्रायः एक ही वर्ग के संयुक्त

वर्ण पाये जाते हैं, यथा- 'सहस्स', पवज्जा, धम्म आदि शब्दों में एक ही वर्ग के संयुक्त अक्षर हैं। संधियाँ प्राकृत में दो ही हैं- दीर्घ सन्धि एवं गुण सन्धि। अन्य संधियों का प्रयोग इसमें नहीं है। विसर्ग का प्रयोग भी प्राकृत में नहीं है। समास का प्रयोग भी कम है। इन विभिन्न विशेषताओं के आधार पर प्राकृत भाषा संस्कृत की अपेक्षा सरल है।

एक विचित्र बात यह है कि प्राकृत भाषा में साहित्य रचना होने के कारण वैयाकरणों ने प्राकृतभाषा का व्याकरण तो बनाया है, किन्तु व्याकरण-ग्रन्थों की रचना संस्कृत भाषा में की है। संस्कृत शब्दों को आधार मानकर उनके प्राकृत परिवर्तनों का निर्देश किया गया है। किन्तु यह प्राकृत को समझाने का आधार मात्र है। इससे यह नहीं कहा जा सकता कि प्राकृत का उद्भव संस्कृत से हुआ है। वररुचि, चण्ड, मार्कण्डेय आदि अनेक प्राकृत वैयाकरण हुए हैं, किन्तु उनमें हेमचन्द्रसूरि द्वारा रचित प्राकृत व्याकरण अधिक व्यवस्थित एवं विस्तृत है। उन्होंने अपभ्रंश का भी व्याकरण दिया है। हेमचन्द्र के 'शब्दानुशासन' के प्रथम सात अध्यायों में संस्कृत भाषा का व्याकरण है तथा अन्तिम आठवें अध्याय के चारों पाठों में प्राकृत का व्याकरण दिया गया है।

लोक संस्कृति को जानना हो तो प्राकृत साहित्य अधिक महत्त्वपूर्ण है। कुवलयमाला में खेतों में हल जोतने वाले कृषकों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि बैलों के नथुने बिंधे हुए हैं, उनके गले में रस्से बंधे हुए हैं और तेज नुकीले चाबुक से मारकर हांके जाने से उनके शरीर से रक्त बह रहा है।

विदेशियों ने भी प्राकृत भाषा एवं उसके साहित्य का अध्ययन किया है जिनमें याकोबी, वूल्नर एवं रिचर्ड पिशेल के नाम प्रमुख हैं। रिचर्ड पिशेल ने प्राकृत भाषाओं पर जर्मन में व्याकरण ग्रन्थ लिखा था, जिसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित है।

आज भी भारत एवं विदेश के कुछ विश्वविद्यालयों में प्राकृतभाषा का अध्ययन-अध्यापन होता है, तथापि इसे अभी वह स्थान प्राप्त नहीं है, जिससे यह कहा जा सके कि आज का आम व्यक्ति प्राकृत भाषा के नाम से परिचित है। लाडनूँ, श्रवणबेलगोला, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, चेन्नई आदि ऐसे स्थान हैं जहाँ प्राकृत का अध्यापन होता है। वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा ने प्राकृत एवं अपभ्रंश में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए हैं। देश के कुछ विश्वविद्यालयों में संस्कृत एवं प्राकृत के संयुक्त विभाग हैं। प्राकृत भाषा को सिखाने के प्रयत्न आज भी चल रहे हैं, किन्तु अनेक विश्वविद्यालयों में प्राकृत-गाथाओं को संस्कृत-छाया के माध्यम से पढ़ाया जा रहा है, जो प्राकृत का तिरस्कार है। इसे दूर कर सीधे प्राकृत का अध्यापन किया जाए तो उसके प्रति रुचि का विकास हो सकता है तथा भारतीय थाती की अक्षुण्णता को सुरक्षित रखा जा सकता है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि। सच्चस्स आणाए से उवट्ठिए मेधावी मारं तरति। सहिते धम्ममादाय सेयं समणुपस्सति

-आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, सूत्र 127

अर्थ- हे पुरुष! तुम सत्य को ही भलीभांति जानो। सत्य की आज्ञा में उपस्थित मेधावी पुरुष मृत्यु को तर जाता है। सत्य से युक्त साधक धर्म को ग्रहण कर श्रेय का साक्षात्कार करता है।

विवेचन- आचारांगसूत्र में सत्य को जानने, समझने, उसे धारण करने एवं उसके अनुसार आचरण करने हेतु भूरिशः प्रेरणा की गई है। जीवन में सत्य को जानना ही महत्त्वपूर्ण है। सत्य को जान लेने पर ही जीवन की दिशा निर्धारित होती है। ऋग्वेद में कहा गया है कि स्वर्णपात्र की चकाचौंध से सत्य का द्वार आच्छादित है-"**हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।**" भौतिक प्रलोभनों में अटके हुए लोग सत्य के बोध से अपरिचित रहते हैं। इसीलिए आचारांगसूत्र सत्य को जानने की प्रेरणा करता है।

प्रश्न यह है कि सत्य क्या है? सत्य वह है जो सम्यग्ज्ञान से बाधित नहीं होता, जिसका स्वरूप किसी भी प्रकार से खण्डित नहीं किया जा सकता तथा जिसे समझकर एवं जिस पर चलकर दुःखमुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। जो खण्डित होता है, सम्यग्ज्ञान से बाधित होता है वह असत्य है। उदाहरण के लिए यह सत्य है कि जिसका जन्म हुआ है उसका मरण/मोक्ष भी होगा। उपासकदशा सूत्र में कहा गया है कि जो जिनेन्द्रों के द्वारा प्ररूपित है वह ही सत्य है एवं शंका रहित है- "**तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेदितं।**" जिनेन्द्रों ने सत्य को जाना है, अनुभव किया है, उसके माध्यम से ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय एवं अन्तराय नामक चार घाति कर्मों का क्षय किया है, अतः उनके वचन भी सत्य हैं। उनके वचनों पर श्रद्धा कर जो सत्य को जानने, अनुभव करने एवं उस पर आचरण करने का पुरुषार्थ करता है वह दुःखमुक्ति को प्राप्त करने में सफल होता है। जिनेन्द्र कोई भी हो सकता है। जो राग-द्वेष का विजेता है वह जिन है। उसे हम किसी एक धर्म की सीमा में नहीं बाँध सकते। प्रत्येक बुद्ध एवं अन्यलिंग सिद्ध की अवधारणा भी जैन धर्म में मान्य है। अतः जो भी राग-द्वेष या मोह के जेता हैं, वे जिन हैं एवं उनके वचन हमारी साधना के लिए प्रमाणभूत हैं।

सत्य को धर्म का एक प्रकार माना गया है। स्थानांगसूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र में क्षमा,

मार्दव, आर्जव आदि दश धर्मों में सत्य की भी गणना की गई है। इसी प्रकार मनुस्मृति में भी धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, सत्य, अक्रोध आदि दशविध धर्म कहे गए हैं। सत्य जानने का ही विषय नहीं, अभिव्यक्ति का भी विषय है। हम जैसा जानते हैं वैसा कहते हैं तो उसे सत्य बोलना कहा जाता है। आप्त पुरुषों अथवा जिनेन्द्रों के वचन इसी दृष्टि से सत्य माने गए हैं, क्योंकि वे जैसा जानते हैं वैसा ही करते हैं। जैनदर्शन में सत्यभाषा पर बल दिया गया है। सत्य बोलना भी धर्म का ही एक रूप है। दशविध धर्मों में उसका समावेश हो जाता है।

जैनागमों में मृषावाद-विरमण व्रत सत्य भाषण की ही प्रेरणा करता है। सत्य बोलने वाला जगत् में विश्वसनीय होता है एवं स्वयं अनेकविध उलझनों से रहित हो जाता है। धम्मपद (गाथा 223) में कहा गया है कि जिस प्रकार क्रोध को अक्रोध से, असाधु को साधुता से, कंजूस को दान देकर जीता जा सकता है उसी प्रकार झूठ बोलने वाले को सत्य बोलकर से जीता जा सकता है।

मुण्डकोपनिषद् (3.5) में कहा गया है कि आत्मस्वरूप की प्राप्ति सत्य एवं तप से होती है- **'सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा।'** आचारांग भी आत्मस्वरूप की प्राप्ति हेतु सत्य को साधन मानता है। इसीलिए वहाँ कहा गया है कि सत्य को जानकर जो सत्य की आज्ञा में उपस्थित रहता है, अर्थात् सत्य का आचरण करता है वह मेधावी मृत्यु को तैर जाता है अर्थात् जन्म-मरण से छुटकारा पा लेता है। मार का दूसरा अर्थ- 'कामदेव' होता है। इस अर्थ को स्वीकार करने पर कहा जा सकता है कि जो सत्य का आचरण करता है वह काम को जीत लेता है। काम-वासना को जीतकर ही मोह कर्म का क्षय किया जा सकता है एवं दुःखमुक्ति स्वरूप निर्वाण की प्राप्ति की जा सकती है। जो सत्य धर्म को अपनाता है वह ही अपना श्रेय जान पाता है। असत्य के मार्ग पर चलने वाले को श्रेय एवं प्रेय में भेद ज्ञात नहीं होता। अतः कल्याणकारी श्रेय पर बढ़ने के लिए सत्य को जानने की प्रेरणा करते हुए आचारांग सूत्र में कहा गया है- **सच्चम्मि धितिं कुव्वह। एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावं कम्मं झोसेति।** (आचारांग, प्रथम श्रुत स्कन्ध, सूत्र 117)। अर्थात् सत्य में बुद्धि करो, अथवा सत्य को धारण करो। जो सत्य में सन्नद्ध हो जाता है वह मेधावी समस्त पाप कर्मों का क्षय कर देता है। कर्मक्षय ही मुक्ति है। इस प्रकार आचारांग में सत्य का मुक्ति को साधन प्रतिपादित किया गया है। **-सम्पादक**

सुविचार

1. किसी इंसान के सबसे करीब कुछ है तो वह है 'सच्चाई'।
2. आप जिनसे डरते हैं, उनसे कभी प्यार नहीं कर पाते।

-प्रेषकः आशीष जैन, आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (राज.)

विचार-वारिधि

सम्यग्ज्ञान (2)

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जिसके भीतर की ज्ञान-चेतना जागृत हो गई, वह आत्मा बिना सुने, बिना पढ़े भी ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करती है, जैसे नमिराज की ज्ञान-चेतना चूड़ियों की झंकार को सुनकर जागृत हो गई। मृगापुत्र ने मुनियों को देखकर ज्ञान प्राप्त कर लिया। ऐसे अनेक उदाहरण शास्त्र व साहित्य में उपलब्ध होते हैं। ऐसा भी उदाहरण उपलब्ध होता है कि चोर को वध-स्थल पर ले जाते देखा और समुद्रपाल को ज्ञान उत्पन्न हो गया। यद्यपि चोर ज्ञान-प्राप्ति का निमित्त नहीं है, लेकिन सोचने वालों ने उसे अपनी ज्ञान-चेतना को जागृत करने का साधन बनाया। इसका तात्पर्य यह हुआ कि ज्ञान अपने अनुभव से भी प्राप्त किया जा सकता है और सन्त-समागम एवं उपदेश से भी मिलाया जाता है। आज सर्वसाधारण के लिए संत-समागम का साधन सुलभ है। अधिकतर लोगों को अधिकांश ज्ञान सत्संग के साधन से ही उपलब्ध होता है। लेकिन अनुभूति के आधार पर अपने ज्ञान-बल से भी बहुत से व्यक्ति वस्तुतत्त्व का बोध प्राप्त कर सकते हैं।
- जिसने जीव और पुद्गल का सच्चा ज्ञान प्राप्त कर आत्मतत्त्व को पहचान लिया हो, जिसकी बुद्धि परिपक्व हो और उसमें ज्ञान के साथ वैराग्य हो तो उसको कोई खतरा नहीं रहता। जैसे दीपक में तेल है और बत्ती ठीक स्थिति में है तो हवा के साधारण छोटे-मोटे झोंकों से वह दीपक बुझ नहीं सकता। लेकिन यदि तेल ही समाप्त हो गया तो वह दीपक साधारण-सा झोंका पाकर भी बुझ जाएगा। यदि हम चाहते हैं कि हमारा गृहस्थ जीवन और त्यागमय जीवन कुमार्ग और कुसंगति में पड़कर गलत रास्ते पर नहीं लगे, तो श्रुत-ज्ञान का जल अधिक मात्रा में डालना चाहिए, तभी खतरे से बचे रहेंगे।
- ज्ञान का धर्म यह है कि वह मानव में एक विशेष प्रकार का प्रकाश उत्पन्न करता है। जिसकी रोशनी में ज्ञेयता के साथ हेय-उपादेयता का बोध होता है।
- ज्ञान के सम्यग्-बल के बिना दर्शन की शुद्धि नहीं होती। दर्शन से तात्पर्य श्रद्धा-विश्वास से है। ज्ञान के बिना श्रद्धा की पवित्रता, निर्मलता में व्यवस्थित रूप नहीं आता।
- कोई भी जीव, कोई भी प्राणी चेतनाशून्य और ज्ञानशून्य नहीं है। उसमें बोध है, चेतना है, लेकिन उसमें हिताहित का खयाल नहीं है, इसलिए हम उसे सामान्य ज्ञान कहेंगे। वह जरा घट गया तो अज्ञान की स्थिति में चला जायेगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

दुःख की परिस्थिति में होती है साधना

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा रामपुरा-कोटा में रविवार, 07 सितम्बर 2014 को फरमाए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनजी मेहता द्वारा किया गया है।**-सम्पादक**

धर्मनिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं!

इन दिनों मध्याह्न में व्याख्याप्रज्ञप्ति अर्थात् भगवती सूत्र की वाचना चल रही है। भगवती सूत्र जिज्ञासा और समाधान का भण्डार है। अनेक जिज्ञासाएँ गणधर गौतमस्वामी के द्वारा तथा अन्यान्य संत-सती व श्रावकवर्ग द्वारा की गई। एक जिज्ञासा है- संसार क्या है? संसार कैसा है? प्रश्न आपके सामने है। उत्तर के लिए (प्रतीक्षा कर कहते हैं) मैं आपकी ओर न देखूँ, मैं ही समाधान दे दूँ। संसार क्या? प्रतिकूलता में समभाव न रखकर आर्त्तध्यान करना एवं अनुकूलता के लिए प्रयास करना संसार का हेतु है। अनेक परिभाषाएँ हैं। उदहरण के लिए संसरण करना संसार है। जहाँ राग-द्वेष हैं, वह संसार है। जहाँ क्रोधादि कषाय हैं, वह संसार है। ऐसी अनेक परिभाषाएँ हैं, अनेक परिभाषाएँ की जा सकती हैं।

मैं समाधान की नई बात नहीं रख रहा हूँ। एक आदमी तीव्र गर्मी में ठण्डी हवा की जगह देखता है, कूलर-पंखे-ए.सी का स्थान ढूँढ़ता है, पेड़ की शीतल छाया कहाँ है, पता करता है। गर्मी है तो मलमल के कपड़े पहनता है इस तरह की जो भी इच्छाएँ हैं, उनको पाने का प्रयास करता है। कहना चाहिए वह संसार बढ़ा रहा है। मतलब क्या? प्रतिकूल परिस्थिति में आए दुःख से दुःखी होना तथा उससे छुटकारा पाने के लिए आर्त्तध्यान करना साधक के लिए उचित नहीं।

आर्त्तध्यान के चार लक्षण बताये जाते हैं। पूछूँ आपसे? वे चार कारण क्या-क्या हैं? कोई ध्यान के 48 भेद बताता है। चार लक्षण, चार पाये, चार अवलम्बन, चार अनुप्रेक्षा। भेद करना चाहें तो आर्त्त, रौद्र, धर्म, शुक्ल ध्यान के भेद किए जा सकते हैं। मैं अभी आर्त्त के विषय में कह रहा हूँ कि प्रतिकूलता से घबराना एवं अनुकूलता के लिए चिन्तन करना आर्त्तध्यान है। यह बात आपके लिए ही नहीं है, सबके लिए है। मैं भी सोच सकता हूँ इतनी गर्मी पड़ रही है, अभी पट्टा ऐसी जगह रखना चाहिए जहाँ थोड़ी-बहुत हवा आती हो।

शारीरिक प्रतिकूलता को सहन न कर अनुकूलता चाहना आर्त्तध्यान है। कर्मों से हटकर शुभ्रता की ओर जाना धर्मध्यान है।

अपना प्रश्न चल रहा है- संसार क्या? दुःख से सुख की ओर जाने का कार्य- एकेन्द्रिय का जीव भी करता है। वृक्ष एकेन्द्रिय है। वह भी अपनी जड़ें उधर फैलाता है, जिधर नमी है। जहाँ पत्थर है, कठोरता है उधर जड़ें नहीं फैलाता। आपने देखा होगा- कीड़ी-मकोड़े-मच्छर कहाँ जाते हैं? एक मक्खी भी जानती है कि छिपकली मुझे खा न जाय इसलिए वह जहाँ भी सुरक्षित जगह देखती है वहाँ जाकर बैठती है। घर में कहीं रस्सी-डोर लटक रही है, मक्खी उस सुरक्षित जगह का चयन करती है। डोरी पर मक्खी रोज बैठती है। मक्खी के रोज-रोज बैठने से डोरी काली पड़ जाती है। आप मक्खी जैसे छोटे जानवर की जिजीविषा देखते हैं। मतलब क्या? दुःख की परिस्थिति से सुख में जाने की कला मक्खी-मच्छर-कीड़ी-मकोड़े में भी है। अर्थात् बस मरण से बचना, जीवन को बचाना, दुःख से हटना, सुख की खोज करना यही संसार का कारण है।

सम्यग्दर्शन क्यों? दुःख को दुःख के रूप में जानना और सुख को सुख के रूप में जानना सम्यक् दर्शन है। दुःख आया तो सम्यग्दर्शनी सोचेगा- यह किसी और के द्वारा उत्पन्न किया हुआ नहीं, मेरे अपने द्वारा उत्पन्न किया हुआ है। मैं ही इस दुःख को समाप्त करने वाला हूँ। दुःख का कर्त्ता मैं हूँ तो भोक्ता दूसरा कैसे हो सकता है? दुःख में हाय-त्राय करोगे तो भी भोगना पड़ेगा और समत्व से सहन करोगे तो नए कर्म-बन्ध से बचना हो सकेगा। दुःख किसी को आ सकता है, कभी भी आ सकता है, पर संसारी की सोच एक-सी नहीं रहती। एक बीमार हुआ तो डॉक्टर घर आकर देखता है, दवा देता है और एक है जिसे सामने जाकर दिखाने के बावजूद ठीक से इलाज नहीं हो पाता। आदमी की सोच देखिए। फलां बीमार हुआ तो डॉक्टर-वैद्य सब हाज़िर और गरीब को कोई पूछने वाला नहीं। कभी-कभी तो तंग आकर लोग हम संतों को यहाँ तक कह देते हैं कि बाबजी! संथारा पच्चक्खा दो।

मिथ्यात्वी जीव एक असाता कर्म के उदय पर सात तथा आठ कर्म बांधता है, जबकि सम्यग्दर्शनी सोचता है- मेरे द्वारा किए गए कर्म मुझे भोगने हैं। कर्म का कर्जा है तो भोगना- चुकाना -उतारना तो पड़ेगा ही। कर्म हँस-हँस कर चुकावें, भोगें या रो-रो कर, बांधे कर्मों का कर्जा तो चुकाना पड़ेगा। सम्यग्दर्शनी समभाव से हर स्थिति-परिस्थिति को सहन करता है। वह न आर्त्त-चिन्तन करता है, न अन्यथा ही सोचता है। वह विचार करता है कि मेरी पुण्यवानी इतनी ही थी।

सुख-सुविधाएँ सबको नहीं मिलती हैं। किसी के पास एक कमरा है। उसी में खाना,

उसी में सोना, उसी में आए-गए मेहमानों को बैठाना। संसारी कहेगा- म्हारा तो भाग फूटियोड़ा है। वह छोटे-से-छोटा दुःख आने पर शिकायत करेगा।

भगवन्त (गुरु हस्ती) एक उदाहरण दिया करते थे। एक जगह मंदिर बन रहा था। एक भाई उधर से निकला। उस भाई ने मज़दूर से पूछा- क्या कर रहे हो? मजदूर बोला-"म्हारे भाग में भाटा फोड़ना लिखियोड़ा है। देख लो, भाटा फोड़ा हाँ। केई अफसर है, केई सेठ है, केई अधिकारी है, पर मैं न तो पढ़ियो-लिखियो हूँ, और न मने कोई दूजो काम आवे। म्हारे भाग में भाटा फोड़ना इज लिखियोड़ा है।"

दूसरे आदमी ने जो यही काम करता है बोला- "दुनिया में जितने लोग हैं सबको कोई न कोई काम तो करणो पड़े। मैं पेट भरण रे वास्ते पत्थर फोड़ूँ हूँ।"

तीसरे से पूछा- "भाई, तुम क्या कर रहे हो?" उसका जवाब था- "दुनियाँ में कई काम हैं, मेरी पुण्यवानी से मुझे यही काम मिला। पत्थर का काम भी पुण्य का काम है। मैं पत्थर घड़कर सुन्दर-सी मूर्ति बनाऊँगा, मेरे द्वारा निर्मित मूर्ति की लोग पूजा करेंगे, उसका कुछ लाभ मुझे भी मिलेगा।"

मेरा प्रश्न था- संसारी कौन? सम्यग्दर्शनी कौन? साधक कौन?

दुःख की परिस्थिति आने पर हाय-त्राय करके कर्म बांधने वाला संसार बढ़ाता है। दुःख आने पर समत्व भाव से दुःख सहन करना सम्यग्दर्शनी का लक्षण है। दुःख आने पर उसका भोग समता से करने वाला सम्यग्दर्शनी है। सम्यग्दर्शनी सुख को सुख और दुःख को दुःख जानता है, पर वह छोड़ता नहीं। पास में बंगला है, कार है, पैसा है, बैंक-बैलेंस है, फिर भी वैराग्य नहीं आता। दुःख के कारणों को जानकर उन्हें छोड़ने पर विरति शुरु होती है। विरति से ही साधना का प्रारम्भ होता है।

साधक कौन? जो जानते भी हैं, मानते भी हैं और करते भी हैं। करने वाले साधक होते हैं। अभी पर्वाधिराज पर्युषण में आपने कुछ-न-कुछ किया। करने वाले कौन होते हैं? घर में खाने की प्रचुर सामग्री है तब भी कुछ हैं जो एकाशन तप करते हैं, कुछ आयंबिल करते हैं, कुछ उपवास करते हैं, कुछ बड़ी तपश्चर्या करते हैं। मेरा कहना यही है- करने वाला साधक होता है। साधक सुख के साधनों को छोड़कर प्रतिकूलता को निमन्त्रित करता है।

दुःख की परिस्थिति से घबराना एवं अनुकूल परिस्थिति की प्राप्ति के लिए चिन्तन करना कर्म बांधना है तथा कष्ट को हर्षपूर्वक अपनाना साधकपन है। आपके घर पर पंखा है, कूलर है, ए.सी. है, फिर यहाँ सामायिक करके क्यों बैठे हैं? क्यों संवर-साधना और पौषध आराधना करते हैं? क्यों ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में पुरुषार्थ करते हैं?

श्रमण भगवान महावीर ने आर्य क्षेत्र छोड़कर अनार्य क्षेत्र में विचरण किया। क्यों? प्रभु के चिन्तन में था कि यहाँ सब मुझे जानते हैं, अनार्य क्षेत्र में जानने वाले नहीं, वहाँ ज्यादा कष्ट हैं। भगवान पर शिकारी कुत्ते छोड़े गए, डंडों से मारा गया। भिक्षा मांगने निकलते तो लोग कहते- हट्टा-कट्टा है, जवान है फिर माँग कर क्यों खा रहा है? हाथ-पैर हैं तो कमाकर खाओ। भगवान हर स्थिति को समभाव से सहन कर रहे थे। भगवान को निश्चित केवलज्ञान होने वाला था, परन्तु भगवान ने कर्मक्षय के लिए अनार्य क्षेत्र का चयन किया।

साधना के लिए ही नहीं, संसार के लिए भी दुःख उठाने पड़ते हैं। पेट भरने के लिए, प्रतिष्ठा के लिए, पद-प्राप्ति के लिए, ज्ञानार्जन के लिए कष्ट उठाने पड़ते हैं, दुःख सहने पड़ते हैं तो फिर कर्म काटने के लिए दुःख सहन करने का प्रयास क्यों नहीं किया जाय? मजबूरी में सहन करना कर्म काटना नहीं है। लेकिन सुख में रहते हुए ममता हटाकर, इन्द्रियों को वश में करना, संवर-सामायिक करना साधना है, कर्म काटना है।

अनुस्रोत की लहर में दिन-रात बह रहा हूँ।
दे दिव्य दृष्टि भगवन् प्रतिस्रोत में लगा दो।।

इस जीव ने कड़कड़ाती सर्दी, प्रचण्ड गर्मी और क्या-क्या कष्ट सहन नहीं किए। जिनको दो समय खाने को नहीं था, न्याय-नीति पर रहे तो आज करोड़पति हैं। सुख-दुःख का आना-जाना तो झूले की तरह है। कभी पाप का उदय हुआ तो नीचे चले गए, पुण्य का उदय हुआ तो ऊपर उठ गए। इसलिए ज्ञान जगाकर सहन करने की कोशिश करें।

साधन साधना में सहयोगी हो सकता है, पर साधन का होना साधना नहीं है। आपने धर्मस्थान को बड़ा बना लिया, पहले छोटा था। आज स्थानक बड़े हो गए, हर स्थानक में बैठके मिलेंगे, संवर-साधना के लिए उपकरण मिलेंगे। ओढ़ने-बिछाने तक का साधन सुलभ है, पर साधना करने वाले कितने हैं? जब तक संत-सती हैं तब तक दैनिक कार्यक्रमों में कुछ लोग मिलते हैं, लेकिन संत नहीं हो तो.......?

धर्म के जो भी साधन मिले हैं उनका उपयोग होना चाहिए। कर्म काटने के इस स्थान पर आकर कुछ नहीं करोगे तो सिवाय पश्चात्ताप के कुछ नहीं मिलेगा। आप सुख को छोड़कर कर्म काटने के लिए तत्पर रहेंगे तो ही कुछ साधना हो सकेगी, वरना तो जन्म लिया, बड़े हुए, खाए-पीए-सोए और चल बसे।

सुख में साधना नहीं होती, प्रमाद बढ़ता है। दुःख में माँ और भगवान याद आते हैं। कभी किसी की किसी से टक्कर हो गई तो मुँह से 'हे माँ' निकलता है। दुःख में या तो माँ याद आती है या फिर भगवान। पुण्यशाली हैं वे लोग जो सुख में एक व्याख्यान सुनकर

वैरागी बनते हैं। पूज्य श्री जयमलजी महाराज ने एक व्याख्यान सुना, दीक्षा ली और दीक्षा लेने के साथ एकान्तर शुरू किया। सत्रह साल तक एकान्तर-तप का अनुष्ठान किया। भरी जवानी में दीक्षा ली। उस महापुरुष ने कैसे तपाराधन किया? आज किसी को उपवास करना हो तो मन करता है पहले एकाशन करके देखूँ, फिर उपवास की तरफ बढ़ूँ। उन्होंने पूनम को प्रवचन श्रवण किया और दूज को वे दीक्षित हुए। दीक्षा लेकर जहाँ अच्छे-अच्छे आचार्य जाने में संकोच करते, उन स्थानों में विचरण-विहार किया। यह वह समय था जब यतियों का जोर था। वह स्थान चाहे बीकानेर हो या जैसलमेर हो। चार स्थान यतियों के जोर के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध रहे-

चत्तारि खलु खेत्ताणि, दुल्लहाणि य साहुणो।
नागाणी य बीकाणी-जोधाणी य मेड़ता।।

बीकाणी, जोधाणी, नागाणी, मेड़ता चार क्षेत्र यतियों के कारण स्थानकवासी सन्तों के लिए दुर्लभ माने जाते थे, पर पूज्य श्री जयमल जी महाराज उन क्षेत्रों में गए। साधक सुख छोड़कर दुःख में जाता है। भगवान महावीर अनार्य क्षेत्र में गए इसी तरह पूज्य श्री जयमल जी महाराज उन क्षेत्रों में गए जहाँ यतियों का जोर रहा। उतरने के लिए मकान नहीं, छतरियों में ठहरे। गोचरी बहराने को कोई तैयार नहीं तो छाछ में राख मिलाकर दिन बिताए। उस महापुरुष ने क्यों कष्ट सहे? साधना के लिए।

आप कोटावासी कहते हैं- सौ साल में यहाँ किसी आचार्य का चातुर्मास नहीं हुआ। यहाँ संतों के चातुर्मास प्रायः हर साल होते रहे हैं, आचार्य का पहली बार चातुर्मास का सुयोग बना है। मुझे यही कहना है कि अगर संसार का संसरण मिटाना है तो आए अवसर का लाभ हाथ से नहीं निकलने दें।

जो अवसर का लाभ उठाता है वह आगे बढ़ता है। सुबाहुकुमार ने भगवान को इसलिए याद किया कि श्रावकव्रत पालते-पालते पन्द्रह साल हो गए, भगवान पधार जायें तो मैं प्रवजित हो जाऊँ। क्या आप भी इस तरह सोचते हैं? सब दीक्षा लेने वाले नहीं होते। स्वयं भगवान पधार जायें तब भी सब साधु बनने वाले नहीं हो सकते। सब न भी बनें तब भी कोई-न-कोई वैरागी तो बने। आप सब दीक्षा नहीं ले सकते तो भी कोई-न-कोई वैरागी बने, वैराग्य-पथ पर बढ़े। आप दीक्षा तो करवाना चाहते हैं, किन्तु अपने बच्चों में से नहीं। यदि कोई वैरागी है तो दीक्षा दिलाने के लिए तैयार हैं। बाबजी! आप म्हारे अठे दीक्षा कराओ। आप शासन की दीप्ति चाहते हैं तो स्वयं धर्माचरण करें, स्वयं पुरुषार्थ करें, स्वयं आगे बढ़ें। जो खुद करेगा, वह शासन की शान बढ़ायेगा। ■

शोधालेख

स्वाध्याय : एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री

श्रमण संस्कृति यथार्थ में तप प्रधान संस्कृति है। तप इस संस्कृति का प्राणभूत तत्त्व है। तप आत्मा की अन्तःस्फूर्त पवित्रता है। तप की जो महिमा है, गरिमा है, वह वास्तव में वर्णनातीत है। इस महतो महीयान् संस्कृति का सजग प्रहरी 'श्रमण' है। श्रमण का जीवन तपःसाधना का पर्याय होता है। वास्तविकता यह है कि जब 'तप' का योग आत्मा से होता है तो वह 'तपो योग' बन जाता है। यह तप सीमातीत शक्ति को प्रस्फुटित करता है।

तप वस्तुतः अभेद्य है, अविभाज्य है, तथापि विवक्षा की दृष्टि से उसका वर्गीकरण दो प्रकार से संभव हो सका है। प्रथम 'बाह्य' तप है और द्वितीय 'आभ्यन्तर' तप है।[1] जिस तप में शारीरिक क्रिया की प्रधानता होती है और जो बाह्य-द्रव्यों की अपेक्षा युक्त होने से अन्य को दृष्टिगत होता है, वह बाह्य तप है तथा जिस तप में मानसिक-क्रिया की प्रधानता होती है, अन्तरंग-वृत्तियों की परिशुद्धि मुख्य रूप से होती है और जो मुख्य रूप से बाह्य द्रव्यों की अपेक्षा न रखने के कारण दूसरों को भी दृष्टिगोचर नहीं होता है वह आभ्यन्तर तप कहलाता है।[2] इन दोनों तपों के छह-छह प्रकार प्रतिपादित हैं। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचरी, रस-परित्याग, कायक्लेश और प्रतिसंलीनता ये बाह्य तप[3] हैं तथा प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग ये छह भेद आभ्यन्तर तप[4] के हैं। ये दोनों तप एक-दूसरे के पूरक हैं। जैन साधना में इन दोनों का सुमेल, आवश्यक ही नहीं, अपितु नितान्त रूपेण अनिवार्य है, अपेक्षित है।

आभ्यन्तर तप के षड्विध भेदों में 'स्वाध्याय' तप का चतुर्थ क्रम है तथा द्वादश तप में इसका दशम प्रकार है। स्वाध्याय एक निर्मल-दर्पण है। मानव अपना मुख-मण्डल दर्पण में निहार कर उस पर लगी हुई कालिमा, जमी हुई धूल, मैल आदि को स्पष्टतः जान लेता है। तदनन्तर उसे दूर करने का प्रयास करता है। उसी प्रकार स्वाध्याय रूपी उज्ज्वल-दर्पण में सम्यग्दृष्टि मानव गुण-दोष को देखकर दोषों को निकालने हेतु चिन्तन-मनन करता है। इसीलिये प्रत्येक-साधक की चर्या में रात्रि और दिन के चार-चार प्रहरों में प्रथम प्रहर में 'स्वाध्याय' और द्वितीय प्रहर में 'ध्यान' करने का निर्देश किया गया है। तृतीय प्रहर में भिक्षा चर्या और चतुर्थ प्रहर में पुनः स्वाध्याय करने का विधान है। रात्रिकालीन चार प्रहर के प्रथम और चतुर्थ प्रहर में स्वाध्याय करने का स्पष्टतः उल्लेख[5] प्राप्त होता है। प्रस्तुत संविधान से

भी यह पूर्ण-स्पष्ट हो जाता है कि साधक की दैनिकचर्या और रात्रिकचर्या में 'स्वाध्याय' का विशेष महत्त्व रहा है।

स्वाध्याय मानसिक-भूमिका पर होता है। मन के प्रधान कार्य तीन हैं- मनन, स्मरण और तत्त्व-विचार। शास्त्रीय दृष्टि से मतिज्ञान के चार प्रकार हैं[6]- अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा। ये मुख्य भेद हैं। इन चारों में अवग्रह, ईहा और अवाय तक मन द्वारा मनन एवं स्मरण किया जाता है। धारणा में स्मृत विषय को अन्तर्मन में स्थिर किया जाता है। स्वाध्याय का अर्थ केवल ग्रन्थ पढ़-सुन लेना ही नहीं है, अपितु शास्त्र अथवा ग्रन्थ में अंकित तत्त्वों अथवा तथ्यों पर विचारणा करके अन्तर्बोध करना है। अनुप्रेक्षा एवं भावना के माध्यम से अन्तर की गहराई में उतर कर सत्य के तट तक पहुँच जाना है। सत्य का आन्तरिक-परीक्षण एवं बोध कर लेना भी स्वाध्याय है। इसलिये स्वाध्याय के परम-निर्मल दर्पण में मन एवं बुद्धि के द्वारा अन्तरंग-निरीक्षण करने के कारण स्वाध्याय आभ्यन्तर तप है। यद्यपि स्वाध्याय तप में तन एवं वाणी का भी सम्बन्ध अवश्य रहता है। परन्तु इतना गौण होता है कि समग्र चिन्तन का अमृतप्रवाह अन्तःस्तल की ओर होता है, बहिर्जगत् की ओर नहीं। स्वाध्याय वाणी से अथवा समौन करते हुए भी उसमें पठित शब्दों का तार अन्तर्मन से और बौद्धिकता से जोड़ा जाता है। वास्तव में स्वाध्याय अन्धकार पूर्ण जीवन-पथ को आलोकित करने के लिये प्रदीप के समान है। इसके स्वर्णिम-प्रकाश में हेय, ज्ञेय एवं उपादेय का स्पष्ट रीत्या परिज्ञान हो जाता है। अन्तरात्मा में संनिहित ज्ञान-गुण को प्रकाशित करने, आत्मा में निहित ज्ञान, दर्शन प्रभृति गुणों की अनन्त-अक्षय निधि को बताने के लिये स्वाध्याय वस्तुतः प्रदीप का कार्य करता है।

यह ध्रुव सत्य है कि स्वाध्याय नन्दनवन के सदृश है। जिस प्रकार नन्दनवन में चारों ओर अन्तर्मन और अन्तरात्मा को प्रमुदित करने वाले सुरम्य दृश्य होते हैं, जहाँ पहुँच कर मानव अपने शारीरिक एवं मानसिक कष्ट को मिटा देता है, सर्व प्रकार की आधि, व्याधि एवं उपाधि को मूलतः विनष्ट करता है और असीम-आनन्द के झूले में झूलने लगता है। उसी प्रकार स्वाध्याय रूपी नन्दनवन में पहुँचकर मानव अपूर्व-अलौकिक आनन्द की अनुभूति करता है। अपनी मानसिक एवं बौद्धिक समस्याएँ सुलझा कर शान्ति एवं संतोष भी प्राप्त कर लेता है। वास्तव में स्वाध्याय अज्ञान मूलक दुःख-क्लेश के निवारण का उपाय बताने वाला पथ-प्रदर्शक है।[7] स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है। ज्ञानावरणीय कर्म की निर्जरा, क्षय अथवा क्षयोपशम होने से आत्मा में निर्मल ज्ञान की दिव्य ज्योति जगमगा उठती है। जिसके स्वर्णिम-प्रकाश में आत्मार्थी एवं मुमुक्षु आत्मा मोक्ष की दिशा की ओर अग्रसर हो जाता है। स्वाध्याय करना ही श्रुत देवी की उपासना है।

वह भगवद् वाणी है। अज्ञान तिमिर हरिणी है। वास्तव में नित्य-निरन्तर स्वाध्याय करने से मानव की दृष्टि सम्यक् हो जाती है। बोधि की उपलब्धि हो जाती है। इस अपेक्षा से स्वाध्याय एक अपूर्व तप है। इसकी समानता करने वाला तप न तो अतीत काल में कभी हुआ है, न भविष्य में कभी होगा और न वर्तमान-समय में है। अतएव यह एक दृष्टि से अद्भुत तप है।

स्वाध्याय के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं, बहुविध परिभाषाएँ हैं। उन सभी के विषय में विस्तार से विचार करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि सद्शास्त्रों को मर्यादा पूर्वक पढ़ना, विधि सहित श्रेष्ठ ग्रन्थों और उत्तम पुस्तकों को पढ़ना एवं सुनना 'स्वाध्याय' है। तत्त्वज्ञान को पढ़ना-पढ़ाना तथा स्मरण करना- स्वाध्याय है। निश्चय दृष्टि से अपनी आत्मा का अध्ययन करना 'स्वाध्याय' है। आलस्य त्यागकर, आत्मकल्याणकारी पठन-पाठन रूप श्रेष्ठतम अध्ययन का नाम 'स्वाध्याय' है।[8] निष्कर्ष यह है कि अपना अपने ही भीतर अर्थात् आत्म-चिन्तन एवं आत्म-मनन करना ही स्वाध्याय है। यही स्वाध्याय शब्द का आशय है। तपोयोगी उत्तम साधक आत्म-कल्याण मार्ग दर्शक ग्रन्थों का भी स्वाध्याय करता है। वह अपनी आत्मा के सन्दर्भ में विचार-चिन्तन करता है। वह स्वात्मा के स्वरूप को जानने का विशेष प्रयास करता है। आत्मा के ज्ञायक-स्वभाव तथा आत्मिक गुणों का अतिशय रूप से संवेदन करता है। यह स्वाध्याय तप तब सर्वथा सफल एवं सर्वथा सार्थक होता है जब तपोयोगी साधक समस्त-विकारों एवं विभावों से दूर होकर आत्मा के ज्ञान-गुण में स्वाद लेने लगता है। निज आत्मा का अनुभव होने लगता है।

यह ज्ञातव्य है कि ज्ञान को सुस्थिर और सुरक्षित रखने की दिशा में स्वाध्याय के मुख्य पाँच भेद प्रतिपादित हुए हैं।[9] स्वाध्याय के जो पाँच प्रकार हैं, वे वास्तव में अतिशय व्यवस्थित, अत्यधिक क्रमबद्ध और आत्यन्तिक वैज्ञानिक हैं। इन्हीं पंचभेदों के संदर्भ में विचारणा की जा रही है।

1. वाचना- स्वाध्याय का प्रथम प्रकार 'वाचना' है। परन्तु इसमें एक नहीं, अनेक अर्थ गर्भित हैं। निर्दोष ग्रन्थ, उसके अर्थ का उपदेश, अथवा दोनों ही उसके पात्र को प्रदान करना 'वाचना' है। सद्ग्रन्थों, धार्मिक पुस्तकों एवं शास्त्रों को स्वयं पढ़ना, सुयोग्य-व्यक्तियों को पढ़ाना भी वाचना है। जो नहीं पढ़ सकते हों, उन्हें सुनाना अथवा स्वयं द्वारा सुनना ये सभी अर्थ वाचना के अन्तर्गत आ जाते हैं। वाचन अर्थात् अध्ययन मानव को पूर्ण बनाता है, भाषण परिपूर्ण बनाता है और लेखन प्रामाणिक बनाता है। चार प्रकार के व्यक्तियों को वाचना देने-लेने अथवा करने के लिये अयोग्य बताया है- जो अविनीत हो, दूध-घृत

आदि विकृतिजन्य पदार्थों का सेवन करने में आसक्त हो, जिसका कलह और क्रोध उपशान्त नहीं हुआ हो तथा जो मायाचारी हो।[10] वास्तव में वाचना के द्वारा साधक कर्मों की महानिर्जरा करता है।[11] वाचना करने वाला साधक हीनाक्षर, अत्यक्षर, घोषहीन, पदहीन प्रभृति दोषों से बचता है। वास्तव में शास्त्रों एवं ग्रन्थों के पठन-पाठन से उपार्जित ज्ञान भी तलस्पर्शी एवं प्रखर हो जाता है।

2. पृच्छना– स्वाध्याय का द्वितीय प्रकार 'पृच्छना' है। पृच्छना की परिभाषा इस रूप में हुई है- आत्मोन्नति, परातिसन्धान, परोपहास, संघर्ष एवं प्रहसन प्रभृति दोषों से रहित होने के साथ संशय-छेद अथवा निर्णय की पुष्टि के लिये ग्रन्थ, अर्थ अथवा उभय को दूसरे से पूछना 'पृच्छना' है।[12] पढ़ने अथवा वाचना लेने के अनन्तर किसी विषय में शंका हो तो जिज्ञासा और विनयपूर्वक उस विषय के विद्वान् अथवा विशेषज्ञ से पूछना, अपनी जिज्ञासा का समाधान करना, जिज्ञासा वृद्धि से धर्म-चर्चा करना पृच्छना है। यह भी ज्ञान-प्राप्ति अथवा ज्ञान-वृद्धि करने के कारण स्वाध्याय-अंग है। जिज्ञासा पूर्वक विनय-भावना से अपनी शंका, सन्देह अथवा संशय प्रगट करना प्रबुद्ध-चेतना का लक्षण है। जिज्ञासापूर्ण प्रश्न भी पृच्छा 'स्वाध्या ा' की कोटि में आते हैं। अध्येता पृच्छना से अपनी शंकाओं से सर्वथा निवृत्त होकर कांक्षा मोहनीय कर्म को नष्ट कर देता है, ज्ञान वृद्धि भी करता है।

3. परिवर्तना– परिवर्तना स्वाध्याय का तृतीय प्रकार है। पढ़े हुए, सुने हुए, सीखे हुए अथवा कण्ठस्थ किये हुए ज्ञान अथवा पाठ को बार-बार दोहराना, पुनरावर्तन करना 'परिवर्तना' कहलाता है। परिवर्तना से ज्ञान स्थिर एवं प्रखर हो जाता है। महापुरुषों का पावन नाम-स्मरण, नवकार महामंत्र का जाप, अरिहन्तों एवं सिद्धों का स्तोत्र, स्तव स्तुति आदि का पुनः-पुनः उच्चारण करना भी परिवर्तना 'स्वाध्याय' के अन्तर्गत आता है। परिवर्तना के माध्यम से ज्ञान भी पच जाता है, परिपक्व हो जाता है, चिर स्थायी हो जाता है।

4. अनुप्रेक्षा– स्वाध्याय का चतुर्थ प्रकार 'अनुप्रेक्षा' है। जाने हुए अर्थ का मन में अभ्यास करना 'अनुप्रेक्षा' है।[13] पढ़े हुए सूत्रार्थ के किसी एक विषय पर एकाग्रचित्त होकर गम्भीरता पुरस्सर तदनुकूल चिन्तन एवं सूक्ष्मतम मनन करना 'अनुप्रेक्षा' है। जैसे किसी व्यक्ति ने महाप्रभु पर अनुप्रेक्षा की। यही सोचा- भगवान् कौन होते हैं? उनका क्या स्वरूप है? वे साकार हैं अथवा निराकार हैं? इस प्रकार तदनुकूल प्रेक्षण करते हुए स्वाध्यायी एक सोपान से दूसरे सोपान पर, आगे से आगे विषय की ऊँचाई पर पहुँच जाता है। अनुप्रेक्षा वास्तव में एक प्रकार से चिन्तन का सोपान है।

5. धर्मकथा– स्वाध्याय का पंचम प्रकार 'धर्मकथा' है। पढ़ा हुआ, चिन्तन-मनन किया

हुआ अथवा कण्ठस्थ किया हुआ श्रुतज्ञान जब लोक कल्याण की भावना से शब्दों के द्वारा प्रगट करके भावुक श्रोताओं को सुनाया जाता है तब वह तत्त्व-कथन 'धर्मकथा' कहलाता है। धर्म-कथा से श्रुतज्ञान की अभिवृद्धि होती है। मोक्ष-मार्ग में प्रवृत्ति होती है। एक अंग के, एक अधिकार के उपसंहार का नाम 'धर्मकथा' है। जिससे जीवों को स्वर्गादि अभ्युदय तथा मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। वास्तव में इस प्रकार के धर्म से सम्बन्ध रखने वाली जो कथा है। वह धर्मकथा है[14] धर्मकथा का वर्गीकरण चार प्रकार से हुआ है- आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेगिनी और निर्वेदिनी। इन चार कथाओं के बहुविध भेद-प्रभेद प्रतिपादित हुए हैं।[15] धर्म कथा केवल निर्जरा के उद्देश्य से करनी चाहिये। वास्तविकता यह है कि धर्म कथा के माध्यम से प्रवचन की प्रभावना भी हो जाती है।

स्वाध्याय से आत्मतुष्टि होती है। जीवन में संवेग, समता और संयम की सम्प्राप्ति हो जाती है। इतना ही नहीं स्वाध्यायशील साधक विषय-जनित सुख एवं पदार्थजन्य सुख में दुःख-क्लेश के विष-बीज जानकर कदापि आसक्त नहीं होता है। जीवन में जो कुछ भी दुःख-दैन्य के काले-कजराले बादल उमड़-घुमड़ कर आते हैं उनका प्रमुख कारण भी अज्ञान है। स्वाध्याय अज्ञान को सर्वथा रूपेण विनष्ट कर देता है, जिसके कारण मानव दुःख पाता है। अतएव स्वाध्याय अज्ञान-मूलक दुःखों के निवारण का अमोघ-उपाय बताने वाला पथ-प्रदर्शक है। वास्तव में जिन्होंने उत्तम प्रकार से स्वाध्याय किया है, उनका ज्ञान सहस्र-किरण दिनकर के समान निर्मल होता है। इतना ही नहीं, वह स्वाध्याय-निष्ठ साधक दुष्कर्मों, दुर्व्यसनों एवं दुराचारों के प्रगाढ़ जाल में आबद्ध नहीं हो सकता है। उसका अन्तर्मन वास्तव में पर-भाव एवं विभाव में न लग कर स्वभाव अर्थात् आत्मभाव में स्थिर हो जाता है, तन्मय हो जाता है। जिससे वह अनेक प्रश्नों का उचित रूपेण समाधान कर लेता है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि अध्यात्मज्ञान रूपी चन्द्र की चान्दनी को श्रेष्ठ ग्रन्थों एवं ज्येष्ठ शास्त्रों के स्वाध्याय द्वारा ही प्रगट किया जा सकता है। बहिर्मुखता को अन्तर्मुखता में बदलने के लिये 'स्वाध्याय' की अपेक्षा अवश्य रहती है। यथार्थता यह है कि स्वाध्याय के माध्यम से न केवल अन्तर्मन, अपितु अन्तरात्मा भी परम शान्त एवं अतीव निर्मल होता जाता है। कार्मिक-आवरण भी क्षीण होने लगता है, तदनन्तर प्रशान्त एवं उज्ज्वल चित्त में परमात्मा की दिव्य छवि स्फुरित हो जाती है, और अनुभव गम्य हो जाती है।

संदर्भः-

1. (क) उत्तराध्ययन सूत्र, 30.7 (ख) मूलाचार गाथा, 345
(ग) सर्वार्थसिद्धि, 9.19.438.2 (घ) चारित्र सार, 133.3

2. (क) समवायांग सूत्र, समवाय-6, अभयदेवसूरि कृत वृत्ति
(ख) अनगार धर्मामृत, 7.6 (ग) भगवती आराधना, 107.254.4
3. (क) उत्तराध्ययनसूत्र, 30.8 (ख) भगवती सूत्र, 25.7.802
(ग) तत्त्वार्थ सूत्र, 9.19 (घ) मूलाचार-वट्टकेर, गाथा 346
4. (क) स्थानांग सूत्र, 6.551 (ख) प्रवचन सारोद्धार, गाथा 270-272
(ग) द्रव्य संग्रह,57.228 (घ) उववाइ सुत्तं, सूत्र 19
5. (क) उत्तराध्ययन सूत्र 26.12,18 (ख) ओघ निर्युक्ति-वृत्ति पत्र, 115
6. (क) नन्दीसूत्र, सूत्र 27 (ख) तत्त्वार्थ सूत्र, अध्याय-1,सूत्र 15
(ग) पंच संग्रह प्राकृत, 1.21 (घ) हरिवंश पुराण-सर्ग-10, श्लोक-145-150
(ङ) तत्त्वार्थ सार, 1.20-23 (च) जंबूदीव पण्णत्ति संगहो, 13.55,56
7. (क) उत्तराध्ययनसूत्र, 26.10 (ख) चन्द्र प्रज्ञप्ति सूत्र, 91.
8. (क) स्थानांग सूत्र, 5.3.465 टीका (ख) चारित्र सार, 44.3
(ग) कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 462 (घ) सर्वार्थसिद्धि, 9.20.439.7
(ङ) दशवैकालिकसूत्र, जिनदासचूर्णि, 287 (च) आवश्यकसूत्र, अध्ययन-4
9- (क) उत्तराध्ययन सूत्र, 30.34 (ख) स्थानांग सूत्र, 5.3.465
(ग) भगवती सूत्र, श.25,उ.7,सूत्र-802 (घ) तत्त्वार्थ सूत्र, 9.25
(ङ) औपपातिक सूत्र, सूत्र 30 (च) मूलाचार, गाथा-393
(छ) अनगार धर्मामृत श्लोक-7 (ज) चारित्र सार, 152.5
10. (क) तत्त्वार्थ सार, 7.17 (ख) चारित्र सार, 153.1
(ग) अनगार धर्मामृत, 7-83.714 (घ) राजवार्तिक, 9.25-1-624.9
11. (क) स्थानांग सूत्र, 4.3.452 (ख) उत्तराध्ययन सूत्र, 29.19
12. (क) चारित्र सार, 153.1 (ख) तत्त्वार्थ सार, 7.18
(ग) अनगार धर्मामृत, 7.84 (घ) सर्वार्थ सिद्धि, 9.25.443.4
13. (क) राजवार्तिक, 9.25.3.624 (ख) तत्त्वार्थ सार, 7.20
(ग) चारित्र सार, 153.3 (घ) अनगार धर्मामृत, 7.86.715
14. (क) धवला, 14.5,6,14.9.6 (ख) महापुराण, 1.120, 118
15. (क) महापुराण, 1.118 (ख) भगवती आराधना, 655.852
(ग) अनगार धर्मामृत, 7.88.716 (घ) धवला, 1.1, 1.2,104.6
(ङ) सूत्रकृतांग सूत्र, श्रुत-2, अध्ययन-1, (च) स्थानांग सूत्र, स्थान-4, उद्देशक 2
(छ) दशवैकालिकसूत्र- अध्ययन3 की निर्युक्ति गाथा-197-198

-द्वारा, एच.एम. टेक्सटाईल्स, 94 नवकार लाभ मार्केट,
ए.एम.लेन, चिकपेट क्रास, बैंगलोर (कर्नाटक)

प्रासंगिक

सफलता के सूत्र

गणाधिपति तुलसी

(गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी के जन्मदिवस की शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित)

निष्ठा सफलता का प्रथम सूत्र है। व्यक्ति जो कुछ करना चाहता है, जो कुछ बनना चाहता है या किसी को कुछ बनाना चाहता है, उस काम में उसकी निष्ठा जितनी सघन होती है, सफलता की संभावना उतनी ही तीव्र बनती है। निष्ठा एक खूंटी है। उस पर व्यक्ति अपने संकल्प-विकल्पों की पोटली टांग कर निश्चिन्त हो जाता है। जब तक निष्ठा निश्छिद्र नहीं होती, संकल्प-विकल्पों का प्रवाह बहता रहता है। इस प्रवाह को रोके बिना कोई भी व्यक्ति पूर्णता के बिन्दु तक नहीं पहुँच सकता।

निष्ठा और बाधाओं में सहानवस्थान नहीं है। निष्ठाहीन व्यक्ति के जीवन में जितनी कठिनाइयाँ आती हैं, निष्ठावान् के मार्ग में उनसे अधिक मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। निष्ठाहीन व्यक्ति कठिनाइयों को देखकर अपनी गति को मोड़ देता है, पर निष्ठाहीन व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में पीछे नहीं देखता। वह जीवन में आए उतार-चढ़ावों की मीमांसा करता है, उनके कारणों को खोजता है, कारणों का निवारण करता है और निर्बाध रूप में मंजिल की ओर प्रस्थान कर देता है।

संसार में जितने व्यक्ति अच्छे, बड़े और महत्त्वपूर्ण काम करने वाले हुए हैं, वे संकल्प की शक्ति के सहारे ही शिखर पर आरूढ़ हुए हैं। निष्ठा हो और वांछित सफलता न मिले, यह कभी संभव नहीं हैं। वर्षा के लिए प्रार्थना करने वाले बड़े व्यक्ति संदेह से भरे थे। पर एक छोटे बालक का आत्मविश्वास इतना प्रबल था कि उसकी प्रार्थना सच्ची होगी तो वर्षा होकर रहेगी। इसी विश्वास के आधार पर वह अपने साथ छाता लेकर गया। कुछ लोगों ने उसका उपहास किया। किन्तु जब वह प्रार्थना सभा से बाहर आया तो वर्षा प्रारम्भ हो चुकी थी। बालक की निष्ठा ने सबको आश्चर्य में डाल दिया।

बीसवीं सदी की कुछ विशेष समस्याएँ हैं। उनमें एक बड़ी समस्या है निष्ठा का अभाव। निष्ठा चुक जाने का अर्थ है जीवन का रसातल की ओर प्रयाण। जिस व्यक्ति के पाँवों के नीचे से धरातल ही खिसक जाए, वह भला खड़ा कैसे रह पाएगा? इस सदी के लोग अनैतिक आचरण कर रहे हैं, यह कोई बड़ी त्रासदी नहीं है। चिन्ता का विषय है आस्थाहीनता। मनुष्य यह मान बैठा है कि नैतिकता के सहारे जीवन नहीं चल सकता। यह

एक ऐसा संक्रामक रोग है, जो दूर से ही व्यक्ति को पकड़ लेता है।

नैतिक लोगों को नीति का आचरण करते देखकर भी कोई व्यक्ति शायद ही यह संकल्प स्वीकार करे कि वह आचार को उज्ज्वल बनाए रखने के लिए अनैतिक आचरण नहीं करेगा। नैतिक मूल्यों की बात को ऊपर-से-ऊपर उड़ जाती है। ऐसी परिस्थिति में संसार भर की नैतिक शक्तियाँ कुछ सार्वभौम मुद्दे उठाकर नैतिकता के आलोक को घर-घर पहुँचा सकती हैं। पर यह काम भी गहरी निष्ठा के द्वारा ही संभव है। वह निष्ठा अपने प्रति, अपने सिद्धान्तों के प्रति और अपने कार्य के प्रति समन्वित रूप से ही हो तो उसके परिणाम को रोका नहीं जा सकेगा।

दृढ़ इच्छाशक्ति सफलता का दूसरा सूत्र है। एक विशाल सेना के सेनापति को हराया जा सकता है। किन्तु एक मनुष्य की दृढ़ इच्छा शक्ति को कोई भी नहीं हरा सकता। कन्फ्यूशियस के इन विचारों में मुझे सत्य का दर्शन होता है। जिस व्यक्ति की इच्छाशक्ति प्रबल होती है, वह जैसा सोचता है, वैसा बन जाता है। उसके लिए कोई भी काम कठिन नहीं होता। वह अपने आपको या अपने परिवार को ही नहीं, एक समूचे युग को अपनी इच्छा के सांचे में ढाल सकता है।

दृढ़ इच्छाशक्ति का धनी व्यक्ति सबसे पहले अपने जीवन का उद्देश्य स्थिर करता है। उद्देश्य की अस्थिरता गतिशीलता में सबसे बड़ी बाधा है। अच्छे से अच्छा उद्देश्य स्थिरता के अभाव में हाथ से छूट जाता है। सामने दिखाई देने वाली मंजिल भी लक्ष्यबद्धता के बिना दूर सरक जाती है। स्वीकृत उद्देश्य के प्रति सर्वात्मना समर्पित रहने वाला व्यक्ति ही उस दिशा में आगे बढ़ता है और रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर हटाकर कृतार्थ बनता है।

जिस व्यक्ति की इच्छाशक्ति प्रबल नहीं होती, वह अवसरवादी होता है। उसके मन में अपने लक्ष्य के प्रति गहरी निष्ठा नहीं होती, इसलिए वह हवा के रुख के साथ बदल जाता है, अपने लक्ष्य को बदल देता है। चार हाथ जमीन खोदने पर पानी नहीं निकला तो उसे छोड़ दूसरे स्थान पर खुदाई करने वाला व्यक्ति कभी सफलता का जल नहीं पा सकता। गहराई में उतरने से घबराकर लम्बाई में जमीन खोदने वाला व्यक्ति अपना पूरा जीवन खपा देगा, फिर भी उसे सफलता का जल नहीं मिलेगा।

सफलता के लिए गहराई में उतरने की अपेक्षा है। एकनिष्ठ होकर पुरुषार्थ करने की अपेक्षा है। जब तक सफलता न मिले तब तक चलने की अपेक्षा है। लक्ष्यहीन पुरुषार्थ की तुलना घाणी के बैल से की जाती है। वह दिन रात चलता है, पर एक परिधि में घूमता रहता है। उसकी गति से कुछ निष्पत्ति तो होती है, किन्तु लक्ष्यहीन पुरुषार्थ करने वाले को तो कोई उपलब्धि नहीं हो सकती।

दृढ़ इच्छाशक्ति, लक्ष्य की स्थिरता और प्रबल पुरुषार्थ- इस त्रयी का योग हो जाए तो व्यक्ति असंभव को संभव बना सकता है। इस युग में नैतिकता के आधार पर जीवन यापन संभव नहीं है, यह चिंतन दुर्बल इच्छाशक्ति का सूचक है। इस चिन्तन की उपस्थिति में कोई भी व्यक्ति सही लक्ष्य का निर्धारण नहीं कर सकता। जब सामने कोई लक्ष्य ही न हो तो पुरुषार्थ का दीप कैसे जलेगा? पुरुषार्थ के सही नियोजन और लक्ष्य प्राप्ति की भावना का मूल्य इच्छाशक्ति की प्रबलता पर ही निर्भर है।

-बैशाखियाँ विश्वास की'' पुस्तक से साभार

परवशता में इस जीव ने, कितने कष्ट उठाये हैं

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

परवशता में इस जीव ने, कितने कष्ट उठाये हैं,
कष्टों का कोई पार नहीं था, भव-भव में दुःख पाये हैं।
परवशता में इस जीव ने.....।। टेर।।
पुण्यवानी का हुआ उदय तब, मानव का यह भव मिला,
अवसर मिला दूर करने का, महादुःखों का सिलसिला।
स्वाधीन बन कर सुखी होने के, अवसर हाथ में आये हैं,
परवशता में इस जीव ने.....।। 1।।
इतना ऊँचा अवसर पा कर, फिर भी है पराधीन बना,
कोहिनूर हीरे का मालिक, देखो कैसा दीन बना।
आत्मविश्वास की घोर कमी से, अनमोल क्षण गंवाए हैं,
परवशता में इस जीव ने.....।। 2।।
बना दीवाना सुविधाओं का, कीमत त्याग की भूल गया,
कर्म काटने को तज करके, विषयों में ही झूल गया।
हार जायेगा इस जीवन को, ज्ञानी यह समझाते हैं,
परवशता में इस जीव ने.....।। 3।।
स्वावलम्बी बन अन्तर्मन का, सोया शौर्य जगाले तू,
मिथ्यात्व का है घोर अंधेरा, इसको दूर हटाले तू।
जिसने धारी प्रभु आज्ञा है, अपने भाग्य जगाये हैं,
परवशता में इस जीव ने.....।। 4।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

अध्यात्म

सम्पन्नता का सूत्र

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

संसार में सम्पन्न और विपन्न दो तरह के व्यक्ति होते हैं। विपन्न वह है जो अभावग्रस्त है और संपन्न वह है जिसके अभाव नहीं है। जिसके जितना अभाव कम है वह उतना ही संपन्न है। अब विचार यह करना है कि अभाव का कारण क्या है तथा अभाव के निवारण का उपाय क्या है अर्थात् सम्पन्नता किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है?

अभाव एक प्रकार के दुःख का अनुभव है जो इच्छित वस्तु के न मिलने से अर्थात् कामनापूर्ति न होने से होता है। जहाँ जितनी अधिक संख्या में कामनाएँ हैं वहाँ उतने ही गुना अधिक अभाव व अभावजन्य दुःख है। उदाहरणार्थ वर्तमान में रेडियो, टेलीफोन, टेलीविजन, कार आदि विषय-सुख की अगणित-विपुल सामग्री है, जो बादशाह अकबर के समय में नहीं थी। परन्तु उस समय इनके अभाव से कोई दुःखी नहीं था, क्योंकि उस समय में इनकी जानकारी नहीं होने से इनकी कामना नहीं होती थी। जबकि आज के प्रत्येक व्यक्ति के पास इनमें से जितनी वस्तुएँ नहीं हैं, उन सबके अभाव से वह दुःखी है। उसे टेलीविजन के अभाव का दुःख है, टेलीफोन के अभाव का दुःख है, कार के अभाव का दुःख है। इस प्रकार वह अनेक अभावों से दुःखी है। उसे जितनी अधिक वस्तुओं के अभाव का अनुभव है उतने ही गुना उसका दुःख अधिक है। परिणाम यह निकला कि जहाँ कामना की उत्पत्ति है वहाँ ही अभाव के दुःख का अनुभव होता है और जहाँ कामना उत्पन्न ही न हो वहाँ न अभाव का अनुभव होता है और न अभावजनित दुःख होता है। यही कारण है कि आज भी साधु-संन्यासियों के पास घर-बार, धन-धान्य, भूमि-भवन, वस्त्र-पात्र, टेलीफोन-टेलीविजन आदि वस्तुएँ नहीं हैं, फिर भी उनको इनकी कामना नहीं होने से इनके अभाव से कुछ भी दुःख नहीं है।

वस्तुतः दुःख का कारण वस्तुओं का अभाव नहीं प्रत्युत कामनाएँ हैं। यदि दुःख का कारण वस्तुओं का अभाव होता तो निर्धन सदा दुःखी व चिंताग्रस्त रहते और धनवान सदा सुखी व निश्चिंत रहते। परन्तु देखा जाता है कि निर्धन की अपेक्षा कितने ही धनवान अधिक चिंताग्रस्त व दुःखी हैं। कारण कि एक गरीब को एक हजार रुपये की भूख है तो लखपति को लाख की व करोड़पति को करोड़ रुपये की भूख है। जो जितना बड़ा धनवान है उसकी भूख उतनी ही अधिक है। जिसको जितनी अधिक भूख है वह उतना ही अधिक भूखा है। जो जितना अधिक भूखा है वह उतना ही अधिक दुःखी है, उसकी उतनी ही अधिक मांग होती है। जिसकी जितनी अधिक मांग है वह उतना ही बड़ा मंगता है, उतना ही बड़ा

भिखारी है, उतना ही बड़ा दरिद्र है। अभिप्राय यह है कि जहाँ जितनी अधिक कामनाएँ हैं, वहाँ उतनी ही अधिक दरिद्रता है।

कामनापूर्ति से अर्थात् इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति हो जाने से कोई व्यक्ति सुखी या संपन्न हो जाता है, यह बात नहीं है। क्योंकि सुखी वही व्यक्ति होता है जिसकी भोगेच्छा की तृप्ति हो गई हो अर्थात् वह इच्छा रहित रहे। इच्छा का बना रहना अतृप्ति का द्योतक है, अतृप्ति दुःख ही है। कामनापूर्ति के समय जो तृप्ति व सुख अनुभव होता है वह आभास या प्रतीति मात्र है। क्योंकि वह सुख तो क्षणमात्र (अल्प समय) में क्षीण हो जाता है। उस सुख की अनुभूति तो केवल तब तक रहती है जब तक कि भोग प्रवृत्ति के कारण शक्ति क्षीण हो जाने से भोगी में भोग करने की शक्ति शेष नहीं रहती है। यह नियम है कि प्रवृत्ति (श्रम) से शक्ति क्षीण होती है और निवृत्ति से शक्ति का संचय होता है। जैसे ही भोग-निवृत्ति (विश्राम) से शक्ति का संचय होता है, भोगी पुनः भोग-प्रवृत्ति के लिए उद्यत हो जाता है। क्योंकि भोग-निवृत्ति काल में प्रवृत्ति नहीं होती है, परन्तु भोगेच्छा तो ज्यों की त्यों बनी रहती है। भोगेच्छा की तृप्ति नहीं होती है, केवल भोगने की शक्ति न रहने से भोगी की प्रवृत्ति रुकती है। उस व्यक्ति का भोग नहीं भोगना केवल उसकी असमर्थता है, भोगेच्छा की निवृत्ति या तृप्ति नहीं है। भोग से किसी को कभी तृप्ति हो ही नहीं सकती। कारण कि भोग से जिस सुख (जो वस्तुतः सुखाभास है) की प्रतीति होती है वह सुख सदा बना रहे तभी तृप्ति हो सकती है, परन्तु वह सुख तो क्षण में क्षीण (नाश) हो जाता है और उस क्षणिक सुख को पुनः भोगने की इच्छा ज्यों की त्यों बनी रहती है। अर्थात् वस्तु की प्राप्ति होने पर भी इच्छा की तृप्ति नहीं होती है और इच्छा की अतृप्ति दुःख ही है। इस प्रकार कामना-अपूर्ति की अवस्था में वस्तु के अभाव का दुःख व कामना-पूर्ति की अवस्था में अतृप्ति का दुःख बना ही रहता है। इस दृष्टि से कामनापूर्ति-अपूर्ति अर्थात् वस्तु की प्राप्ति-अप्राप्ति का परिणाम समान ही है और वह है दुःख की अग्नि में जलते रहना।

तात्पर्य यह है कि वस्तुओं की प्राप्ति से सुख व संपन्नता का कोई संबंध नहीं है। सुखी व सम्पन्न वही मनुष्य हो सकता है जिसने अपने विवेक से 'सुख कामना पूर्ति में नहीं है, कामना के अभाव में है' यह तथ्य जानकर, कामनाओं का त्याग कर दिया है। वह कामना विजेता है, निष्काम-वीतराग हो गया है, वही पूर्ण सुखी है, पूर्ण संपन्न है, शहंशाह है, राजाओं का राजा है। जिस व्यक्ति ने कामनाओं को परिमित कर उन पर नियंत्रण कर लिया है, नई प्रकार की कामना उत्पन्न नहीं करता है, वह कामना का स्वामी है, वह शाह है, संपन्न है, श्रेष्ठी है, धनवान है। जो व्यक्ति अपना समस्त सामर्थ्य, समय व श्रम कामनापूर्ति में लगाता है वह कामना का दास है, वह श्रमिक है, मजदूर है। जो व्यक्ति अपने सामर्थ्य से

अधिक कामना करता है, वह अभाव पीड़ित है, कंगाल है, निर्धन है।

आर्थिक, भौतिक संपत्तियाँ क्षणिक हैं, स्थायी नहीं हैं। उनसे हमारी भिन्नता सदा बनी रहती है। इसलिए हम उन्हें अपनी नहीं कह सकते हैं। वे हमारे पास अल्पकाल के लिए हैं और हमारे नहीं चाहने पर भी वे चली जाती हैं। यहाँ तक कि हमारा शरीर और इन्द्रियाँ भी धीरे-धीरे निर्बल होकर जवाब दे देती हैं। परन्तु आंतरिक उदारता, प्रेम आदि दिव्य संपत्तियाँ स्थायी हैं। वे सदैव हमारे साथ रहती हैं। वे हमारा साथ कभी नहीं छोड़ती हैं। हम ही अपनी अज्ञानतावश उन्हें छोड़ें तो छूटती हैं। वे इतनी भली भी हैं कि हमारे साथ जबरदस्ती कर रहना नहीं चाहती हैं। निःस्वार्थता ऐसी ही आध्यात्मिक संपत्ति है जो उस व्यक्ति को प्राप्त होती है जो प्राप्त आर्थिक संपत्ति को अपने सुख-भोग के लिए नहीं समझकर दूसरों के हित के लिए समर्पण करने को तत्पर रहता है।

निःस्वार्थी मनुष्य धनवान होने पर भी अपने मन में उस धन से अपने को अलग समझता है। वह अपने धन की प्राप्ति को कुछ भी महत्त्व नहीं देता है। न उस धन से सुख भोगता है और न धन के आधार पर अपना मूल्यांकन करता है। इसलिए वह उस भय, चिंता व कटुता से बचा रहता है जो लोभी-स्वार्थी मनुष्य को अपने धन के कारण से होती है। निःस्वार्थी जन धन की हानि या नाश को अपनी हानि नहीं समझता है। अतः धन के जाने से उसे कष्ट या दुःख का अनुभव नहीं करना पड़ता है।

आप ही सोचिये, सुखी मनुष्य कौन है? क्या वह है जो अपनी भौतिक संपत्ति, धन आदि के संग्रह को बढ़ाता चला जाता है, साथ ही साथ उसके संरक्षण, वियोग व नाश के भय और चिंता को भी बढ़ाता चला जाता है तथा अपने को ही सुख पहुँचाने का विचार रखता है। सुखी मनुष्य वह है जो अपने पास जो कुछ भी है उसे दूसरों के सुख व हित में समर्पित कर उनके सुख से आह्लादित-प्रमुदित होता है। संपत्ति के संग्रह या लोभ से सुख नष्ट होता है। संपत्ति का सेवा में सदुपयोग करने से दिव्य सुख की प्राप्ति होती है। अतः सच्ची संपत्ति संग्रह नहीं स्नेह है, प्रेम है।

-82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

सुभाषित

- लिखते वे लोग हैं, जिनके अन्दर कुछ दर्द है, लगन है और विचार है। जिन्होंने धन और भोग-विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया है, वे क्या लिखेंगे।

  -मुंशी प्रेमचन्द

- पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं। *- महात्मा गाँधी*

शोधालेख

चतुर्विध कषायों के विविध नाम

डॉ. दिलीप धींग

संसार और संसार की समस्याओं का मूल है कर्म और कर्म का मूल है – कषाय।[1] प्रेम, सरलता, निश्छलता और निरासक्ति जैसे सद्गुण कषायों के द्वारा हरण कर लिये जाते हैं। कषाय मानव को विपन्न बनाकर पतन के गर्त में गिरा देते हैं और लम्बे समय तक उसे वहीं रखते हैं। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है –

कोहं माणं च मायं च लोभं च पाववड्ढणं।

वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो।[2]

क्रोध, मान, माया व लोभ – ये चारों कषाय जीवन में पाप और सन्ताप बढ़ाते हैं। अपना भला चाहने वालों को इनका त्याग कर देना चाहिये। क्योंकि क्रोध 'प्रीति' का नाश करता है, मान 'विनय' को नष्ट करता है, कपट 'मित्रता' का नाश करता है और लोभ इन सबका नाश कर देता है।[3] आचार्य शिवार्य का कथन है कि वात, पित्त आदि विकारों से मानव इतना उन्मत्त (विक्षिप्त) नहीं होता जितना वह कषायों से होता है।[4] आचार्य भद्रबाहु कहते हैं – ऋण को थोड़ा, घाव को छोटा, आग को तनिक और कषायों को अल्प नहीं मानना चाहिये, क्योंकि ये थोड़े ही बहुत हो जाते हैं।[5] जैन परम्परा के आचार पक्ष में कषाय-त्याग का अत्यधिक महत्त्व रहा। कषाय-त्याग को मुख्य मानने से समाज में धार्मिक अन्धविश्वासों व कर्मकाण्डों पर चोट हुई। आचार्य हरिभद्र ने कहा – "किसी पंथ या वाद में मानव का कल्याण नहीं है, कल्याण तो कषायों को छोड़ने में है।"[6] यह कथन साम्प्रदायिक, सामाजिक व मानवीय एकता की राह प्रशस्त करने के साथ ही धर्म का आडम्बर-मुक्त स्वरूप का प्रतिपादन करता है। किसी भी प्रकार की साधना, उपासना या तपस्या की आराधना हो, सबका मुख्य लक्ष्य है- कषायों को कम करना। प्रत्येक कषाय के बारे में संक्षिप्त चर्चा यहाँ की जा रही है।

क्रोध

क्रोध प्रथम कषाय है और यह धर्म के प्रथम चरण 'क्षमा' को भारी नुकसान पहुँचाता है। उत्तराध्ययन सूत्र में क्रोध को भयंकर अग्नि कहा गया है।[7] क्रोध की आग में सहिष्णुता, दया, सत्य, शील, संतोष, तप, संयम, ज्ञान आदि सद्गुण जलकर भस्म हो जाते हैं।[8] प्राचीन ग्रन्थ इसिभासियाइं में कहा गया है –

कोहेण अप्पं डहती परं च, अत्थं च धम्मं च तहेव कामं।

तिव्वं य वेरं पि करेंति कोधा, अधमं गतिं वा वि उविंति कोहा।[9]

क्रोध स्वयं को जलाता है, दूसरों को जलाता है। यह धर्म, अर्थ और काम को जलाता है। तीव्र वैर कराने वाला क्रोध जीवन के पतन का कारण है। आचारांग में कहा गया है कि क्रोध आयु को नष्ट करता है।[10] व्यक्ति स्वयं क्रोध नहीं करे, यह एक पक्ष है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि वह दूसरों के क्रोध का निमित्त भी न बने। भगवती आराधना में क्रोध की हानियाँ बताते हुए कहा गया है कि क्रोधग्रस्त मानव का वर्ण नीला पड़ जाता है, वह हतप्रभ हो जाता है तथा उसका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। व्यग्रता और बेचैनी से उसे शीतकाल में भी प्यास लगने लग जाती है तथा वह पिशाच-ग्रस्त मनुष्य की तरह काँपने लगता है। क्रोध दुश्मन का उपकार करता है तथा परिवारजनों, मित्रों व अपनों के लिए समस्या का प्रत्यक्ष कारण बनता है।[11] भगवती सूत्र[12] में क्रोध के दस नाम बताये गये हैं -

1. **क्रोध :** गुस्सा करना, आग बबूला हो जाना आदि आवेश की सामान्य प्रवृत्तियाँ क्रोध है।
2. **कोप :** क्रोध उत्पन्न होने के उपरान्त अपने स्वभाव से विचलित हो जाना कोप है। आचार्य अभयदेव के अनुसार क्रोध के उदय को अधिक अभिव्यक्त नहीं करना कोप है।[13]
3. **रोष :** नाराजगी जताना, आवेशपूर्ण स्थिति में रहना, आँखें दिखाना और रूठे हुए रहना रोष है।
4. **दोष :** स्व-पर से द्वेष या अप्रीति रखना। स्वयं पर अथवा दूसरों पर दोषारोपण करना। स्वयं पर दोषारोपण या क्रोध करते हुए व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। कभी-कभी दूसरों पर आरोप लगाते हुए भी व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। इससे कौटुम्बिक और सामाजिक गौरव नष्ट होता है।
5. **अक्षमा :** किसी के द्वारा किये हुए अपराध को सहन नहीं करना तथा दूसरों की गलती या भूल को माफ नहीं करना अक्षमा है।
6. **संज्वलन :** बार-बार क्रोध की आग में जलना संज्वलन है। ईर्ष्या करना और मत्सरभाव रखना भी संज्वलन है।
7. **कलह :** वैर बढ़ाने वाला व्यवहार और वचन-प्रयोग करना कलह है। अनुचित, अप्रिय, मर्मभेदी, कर्कश भाषा-प्रयोग, वाक्-युद्ध आदि के माध्यम से तनावपूर्ण स्थिति निर्मित करना कलह है।

8. **चाण्डिक्य :** क्रोध का बीभत्स रूप चांडिक्य है। अति क्रोध की अवस्था में सिर पीटना, बाल नोंचना आदि चांडिक्य है।
9. **भण्डन :** किसी पर हाथ उठाना, हाथापाई करना या काया से अनुचित व्यवहार करना, लाठी या हथियार से प्रहार करना आदि भण्डन है।
10. **विवाद :** जैसे आग को प्रज्वलित रखने के लिए ईंधन डाला जाता है, वैसे ही झगड़े को कायम रखने के लिए अण्ट-शण्ट बोलना, गाली-गलौज करना, कुतर्क करना, अनावश्यक बहस करना आदि विवाद के रूप हैं।

कसायपाहुड में भी क्रोध के दस रूपों का वर्णन है, जिसमें चांडिक्य एवं मंडन के स्थान पर 'वृद्धि' (क्रोध बढ़ाना) एवं 'झंझा' (तीव्र संक्लेश) शब्द उपलब्ध होते हैं।[14] क्रोध के इन दस रूपों के सन्दर्भ में कह सकते हैं कि क्रोध नहीं करने वाला -

1. अपनी अपरिमित प्राण ऊर्जा बचा लेता है। तन-मन से स्वस्थ रहता है।
2. सहिष्णु, धैर्यवान, विवेकवान तथा विचारपूर्वक कार्य करने वाला होता है।
3. सबका प्रिय तथा सबके आदर का पात्र बन जाता है।
4. अच्छी निर्णय क्षमता वाला और दूरदर्शी होता है।
5. पारिवारिक विग्रह और क्लेश से बचा रहता है।

क्रोध नहीं करने वाला व्यक्ति स्वयं विकास करता है; साथ ही अपने परिवार, व्यवसाय, संघ, समाज और इनसे जुड़े व्यक्तियों के विकास का कारण बनता है।

मान

अमीरी जब मान पर आरूढ़ हो जाती है, तो पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, वर्गवाद आदि के दुष्परिणाम समाज को भोगने पड़ते हैं। अभिमान के वश हो व्यक्ति अपने आर्थिक और गैर-आर्थिक वैभव का अनुचित प्रदर्शन करता है तथा जाने-अनजाने में दूसरों का तिरस्कार करता है। ऐसा प्रदर्शन हमारी सामाजिक संरचना को विद्रूप बनाने में निमित्त बनता है। मद में चूर व्यक्ति अपने वैभव-प्रदर्शन से उत्पन्न होने वाले वैयक्तिक व सामाजिक दुष्प्रभावों की कोई चिन्ता नहीं करता है। भगवान महावीर अहंकार को अज्ञान का द्योतक मानते हैं।[15] वे व्यक्ति के जातीय और कौटुम्बिक अहंकार को अनुचित ठहराते हुए कहते हैं - **न तस्स जाती व कुलं व ताणं, नण्णत्थ विज्जाचरणं सुचिण्णं।**[16] कुल और जाति के अहंकार से कुछ भी हासिल नहीं होता है। विद्या (ज्ञान) और सदाचरण मनुष्य की श्रेष्ठता के प्रतीक हैं तथा ये दुर्गति से रक्षा करने में समर्थ हैं। जो निरभिमानी है, वह ज्ञान, यश व सम्पत्ति प्राप्त करता है और अपना प्रत्येक कार्य सिद्ध करता है।[17] भगवती सूत्र[18] में मान के

बारह नाम बताये गये हैं -

1. **मान :** अभिमान करना, दूसरों को हीन समझना मान है।

2. **मद :** कुल, जाति, अमीरी, बल, रूप आदि के अहंकार में जाने-अनजाने डूबे रहना मद है।

3. **दर्प :** घमण्ड में चूर होकर किसी के साथ अनुचित व्यवहार करना।

4. **स्तंभ :** स्तंभ यानी खंभा। अभिमानवश खंभे की तरह टस से मस नहीं होना स्तंभ है। हठीलापन, अकड़पन, कठोरता आदि स्तंभ के रूप हैं।

5. **गर्व :** देश, कुल, जाति आदि का अहंकार करना गर्व है।

6. **अत्युत्क्रोश :** आत्म-प्रशंसा करना और दूसरों को नीचा दिखाना।

7. **परपरिवाद :** परनिन्दा करना। डींगें हाँकना। प्राकृत शब्द 'परपरिवाए' का एक अर्थ परपरिपात भी किया जाता है।[19] जिसका आशय है, लोगों की दृष्टि में दूसरों को गिराना अथवा मान वश किसी के उच्चगुणों से उसे च्युत कर देना।

8. **उत्कर्ष :** अभिमानपूर्वक अपनी ऋद्धि, क्षमता, विद्वत्ता आदि का प्रदर्शन करना।

9. **अपकर्ष :** दूसरों को तुच्छ बताना तथा किसी को उसकी योग्यता से कम आँकना।

10. **उन्नत :** नम्रता की जगह नम्रता नहीं दिखाना। गुणों तथा गुणियों का अनादर करना, पैसे वालों का आदर करना। मूलपाठ में प्रयुक्त 'उन्नए' शब्द का दूसरा अर्थ 'उन्नय' भी होता है।[20] उन्नय का आशय है, अभिमानवश न्याय-नीति के विरुद्ध आचरण करना।

11. **उन्नाय :** वन्दनीय को वन्दन नहीं करना। अपने को नमस्कार करने वाले के प्रति मानवश उपेक्षा बरतना।

12. **दुर्नाम :** विनय के योग्य व्यक्ति का विधिपूर्वक विनय नहीं करते हुए आधा-अधूरा झुकना या अनुचित तरीके से नमस्कार करना दुर्नाम है।

मान के इन एक दर्जन नामों से यह पता चलता है कि व्यक्ति अपने जीवन में जाने-अनजाने में किस प्रकार मान-कषाय का पोषण करता रहता है। धन, सत्ता, ज्ञान, पद आदि का अहंकार करने वाला व्यक्ति योग्य व्यक्तियों की योग्यता, सलाह, स्नेह, सेवा व सच्चे आदर से वंचित रहता है।

माया

क्रोध आदि दूसरे कषाय बाहर से भी दृष्टिगत हो सकते हैं, लेकिन माया का एकाएक अनुमान लगाना संभव नहीं होता है। इसीलिए माया को मानव-मन में छुपा शल्य (काँटा)

कहा गया है। विश्वास और मैत्री के सम्बन्ध मायाचार से टूट जाते हैं। भगवती आराधना में कहा गया है कि **सच्चाण सहस्साणि वि, माया एक्का वि णासेदि।**[21] एक कपट हजारों सत्यों को नष्ट कर डालता है। मौजूदा बाजारवाद में मायाचार पसरा हुआ है। अण्डे को शाकाहारी कहना अव्वल दर्जे का मायाचार, झूठ और भाषिक छल है। व्यवसाय-जगत में अनेक मिथ्या और कपटपूर्ण विज्ञापन मानव के स्वास्थ्य और बजट को चौपट कर देते हैं। अनेक विज्ञापनों ने समाज में वस्तुओं के उपभोग की एक अनावश्यक होड़ा-होड़ी पैदा कर दी है। मायाचार झूठ का सहारा लेता है। ऐसे माया-मृषावाद से समाज में लोभ-लालच की दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं।[22] एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को मायाजाल में फँसा कर दूसरे से अनुचित लाभ प्राप्त करना चाहता है, उसे ठगना चाहता है। इस प्रकार माया बहुत ही चालाकी से दूसरे कषायों को उकसाती और पोषित करती है। भगवती सूत्र[23] के अनुसार माया के पन्द्रह नाम हैं -

1. **माया :** छल-कपट, धोखा, ठगाई, चालबाजियाँ और चालाकियाँ।
2. **उपधि :** ठगने के लिए किसी के पास जाना।
3. **निकृति :** पूर्वकृत माया को छिपाने के लिए नई माया करना। विश्वासघात करना।
4. **वलय :** ठगने के लिए बात को घुमा-फिराकर कहना। गोल-मोल वचन-प्रयोग करना। भाषागत कपट करना।
5. **गहन :** छलने के लिए गूढ़ भाषा का प्रयोग और भ्रामक आचरण करना।
6. **नूम :** साजिश या षडयंत्र रचना।
7. **कल्क :** दूसरों को हिंसा के लिए दुष्प्रेरित करना। पापकारी या हिंसक कार्य करते हुए छल करना।
8. **कुरूपा :** अभद्र व्यवहार करना। किसी को मोहजाल में फँसाकर ठगाई करना।
9. **जिह्मता :** किसी को ठगने के लिए मन्थर या टेढ़ी गति से कार्य करना।
10. **किल्विष :** मायाचार के लिए निम्न स्तर के कार्य या हरकतें करना। कुचेष्टा करना।
11. **आदरणता :** किसी को ठगने के लिए उसका आदर करना। ऐसा आचरण या वेष अपनाना, जिससे किसी को आसानी से ठगा जा सके।
12. **गूहनता :** अपनी असलियत या करतूतें छिपाना।
13. **वंचकता :** सामान्य जीवन-व्यवहार में छलपूर्ण आचरण करना।
14. **प्रतिकुंचनता :** किसी के सहज-सरल वचन या व्यवहार का कपट से गलत अर्थ लगाना।

15. **सातियोग :** अच्छी वस्तु में खराब वस्तु मिलाना। मिलावट करना।

माया के इन नामों से स्पष्ट होता है कि माया बहुत ठगिनी और बहुरूपिणी होती है। मायाचारी वचनबद्ध और सच्चा नहीं होता है, इसलिए विश्वसनीय नहीं होता है। वह स्वयं द्वारा किये वादों से छल, झूठ आदि का सहारा लेकर तरकीब से मुकर जाता है।

लोभ

लाभ अर्थशास्त्र का प्रेरक तत्त्व है; लोभ दुष्प्रेरक तत्त्व है। लाभ में साधन-शुद्धि का विवेक रखा जाता है। लोभ व्यक्ति को साधन-शुद्धि की फिक्र नहीं करने देता है। अर्थ-नीति को अनीति में बदलने में लोभ की मुख्य भूमिका है। लोभ की वजह से दुनिया भर में आर्थिक घोटाले, भ्रष्टाचार, झगड़े-फसाद, हिंसा, युद्ध आदि होते हैं। लोभ और तृष्णा के वशीभूत इंसान ने पर्यावरण और संस्कृति को अपूरणीय नुकसान पहुँचाया है। संसार की स्थायी भलाई और विश्व-शान्ति के लिए मानव में निर्लोभता की चेतना को जागृत करना बेहद जरूरी है। लाभ से लोभ बढ़ता है।[24] स्वर्ण-रजत और कीमती वस्तुओं के ढेर भी लोभी की तृष्णा को शान्त करने में असमर्थ हैं।[25] भगवान महावीर लोभ पर अंकुश के लिए सन्तोष की पावन प्रेरणा देते हैं,[26] सन्तोष और साधन-शुद्धि के लिए वे गृहस्थ के लिए इच्छा-परिमाण और दिशा-परिमाण व्रतों का विधान करते हैं।[27] लोभ के विभिन्न रूपों को लक्ष्य करते हुए भगवती सूत्र[28] में लोभ के सोलह नाम बताये हैं -

1. **लोभ :** मोहनीय कर्म के उदय से चित्त में उदय होने वाली संग्रह-वृत्ति। वस्तुओं के प्रति ममत्व और लालच।
2. **इच्छा :** वस्तुओं और भोग-सामग्रियों को प्राप्त करने की अभिलाषा।
3. **मूर्च्छा :** प्राप्त वस्तु के प्रति गहरा ममत्व तथा उसके रक्षण की निरन्तर चिन्ता।
4. **कांक्षा :** अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करने की आकांक्षा।
5. **गृद्धि :** वस्तुओं के प्रति गहरी आसक्ति।
6. **तृष्णा :** प्राप्त पदार्थ का व्यय या वियोग नहीं हो, ऐसी इच्छा।
7. **भिध्या :** एकाग्रतापूर्वक वस्तुओं के संग्रह में लगे रहना। शोषण करना।
8. **अभिध्या :** लोभजनित चित्त की व्यग्रता और चंचलता।
9. **आशंसना :** अभीष्ट पदार्थ या पद की लालसा रखना अथवा उसके लिए वरदान या आशीर्वाद की चाहत रखना।
10. **प्रार्थना :** लोभवश अनावश्यक और अनुचित याचना करना।
11. **लालपनता :** अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए अनावश्यक अनुनय-विनय करना।

12. **कामाशा :** मनोहर रूप, शब्द, सौन्दर्य आदि की कामना करना।

13. **भोगाशा :** सांसारिक और शारीरिक सुखों को भोगने की कामना करना।

14. **जीविताशा :** परिग्रह के संरक्षण और संवर्धन के लिए जीने की लालसा। इसका लक्षणार्थ है – मरण शय्या पर भी लोभ नहीं त्यागना।

15. **मरणाशा :** व्यवसाय में हानि होने या लोभ-लालच की पूर्ति नहीं होने पर मरने की इच्छा करना।

16. **नन्दिराग :** वस्तुओं की प्रचुरता और समृद्धि का अनुराग और आसक्ति रखना।

लोभ के इन नामों में लोभ के अनेक ऐसे रूप भी उजागर होते हैं, जिन्हें प्राय: लोभ नहीं माना जाता है, लेकिन गहराई से विचार करने पर वे लोभ की ही विविध परिणतियाँ होती हैं। अपरिग्रह-व्रत के समुचित पालन और न्यासिता (ट्रस्टीशिप) की अवधारणा को साकार करने के लिए लोभ-कषाय का त्याग आवश्यक है।

इस प्रकार चारों ही कषाय अनेक प्रकट और अप्रकट रूपों में व्यक्ति और समाज को घेरे हुए रहते हैं। कषाय विपन्नता, विषमता और विपत्तियों को न्यौता देते हैं, जबकि अकषाय से सम्पन्नता, समता और सम्पत्ति में अभिवृद्धि होती है। कषायों को परास्त करने के लिए क्षमा, मृदुता (विनय), ऋजुता (सरलता) और सन्तोष जैसे सद्गुणों को धारण करना चाहिये।[29] ये सद्गुण जीवन को रचनात्मक, सकारात्मक, साधनाशील और सत्पुरुषार्थी बनाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति सम्पन्नता की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। वह सम्पन्नता महज धन-साधन तक ही सीमित नहीं होनी चाहिये। जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यक्तित्व, कृतित्व और साधना का विमल आलोक प्रस्फुटित होना चाहिये। ऐसे सरल, सहज, सजग, सफल, सार्थक और आलोकमय बहुआयामी जीवन के लिए कषायों का परित्याग परम आवश्यक है। तनाव-मुक्ति का सशक्त आधार भी कषाय-मुक्ति है। कषाय-मुक्त व्यक्ति व्यवस्थित और प्रबंधन में कुशल होता है। कषाय-मुक्त जीवन में प्रेम, सुख, शान्ति, ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि और खुशियों के रंग-बिरंगे फूल खिल उठते हैं। कषाय-मुक्ति से जीवन और जगत् सर्व-मंगल जुड़ा हुआ है। कषाय-मुक्ति से ही मुक्ति का परम लक्ष्य पाया जा सकता है।

सन्दर्भ–

1. संसारस्स उ मूलं कम्मं, तस्स वि हुंति य कसाया - दशवैकालिक-निर्युक्ति, 189
2. दशवैकालिक सूत्र, 8.37
3. कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो। - दशवैकालिक सूत्र 8.38

4. होदि कसाउम्मत्तो, उम्मत्तो तध ण पित्तउम्मत्तो। - भगवती आराधना, 1331
5. अणथोवं वणथोवं, अग्गीथोवं कसायथोवं च। न हु भे वीससियव्वं, थोवं पि हु तं बहु होइ। - आवश्यक निर्युक्ति, 120
6. नाशाम्बरत्वे, न सिताम्बरत्वे, न तर्कवादे न च तत्त्ववादे।
न पक्षसेवाश्रयणेन मुक्ति:, कषायमुक्ति: किल मुक्तिरेव। - संबोध सप्तवर्तिका, गाथा 2
7. संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्ठइ - उत्तराध्ययन सूत्र 23.50
8. कुद्धो ..... सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज - प्रश्नव्याकरणसूत्र, 2.2
9. इसिभासियाइं 36.13
10. आचारांग सूत्र, 4.3.136
11. रोसाइट्ठो णीलो हदप्पभो अरदिअग्गिसंसत्तो। सीदे वि णिवाइज्जदि वेवदि य गहोवसिट्ठो वा। - भगवती आराधना 1360, कोधो सत्तुगुणकरो, भगवती आराधना-1365
12. कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे - व्याख्याप्रज्ञप्ति, बारहवाँ शतक, 'अतिपात' नामक पाँचवाँ उद्देशक, सूत्र 3
13. भगवती सूत्र, अभयदेववृत्ति, शतक 12, उद्देशक 5, सूत्र 2
14. कसायपाहुड चूर्णि, अध्ययन 9, गाथा 86 का अनुवाद। डॉ. सागरमल जैन के संपादन में साध्वी डॉ. प्रमुदिताश्री द्वारा लिखित 'जैन दर्शन में व्यवहार के प्रेरक तत्व',भाग-7, पृष्ठ 25 पर उद्धृत।
15. बालजणे पगब्भती - सूत्रकृतांग, 1.2.21. अन्नं जणं खिंसति बालपण्णे - सूत्रकृतांग, 1.13-14
16. सूत्रकृतांग, प्रथम श्रुतस्कंध, तेरहवाँ अध्ययन, ग्यारहवीं गाथा।
17. सयणस्स जणस्स पिओ, णरो अमाणी सदा हवदि लोए। णाणं जसं च अत्थं, लभदि सकज्जं च साहेदि। - भगवती आराधना 1379
18. माणे मदे दप्पे थंभे गव्वे अत्तुक्कोसे परपरिवाए उक्कासे अवक्कासे उन्नए उन्नामे दुन्नामे - व्याख्याप्रज्ञप्ति, बारहवाँ शतक, 'अतिपात' नामक पाँचवाँ उद्देशक, सूत्र 4
19. द्रष्टव्य, युवाचार्य मधुकरमुनि द्वारा सम्पादित व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, पृष्ठ 173
20. द्रष्टव्य, युवाचार्य मधुकरमुनि द्वारा सम्पादित व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, पृष्ठ 173
21. भगवती आराधना, 1384
22. मायामोसं वड्ढइ लोभदोसा - उत्तराध्ययन सूत्र 32.30
23. माया उवही नियडी वलये गहणे णूमे कक्के कुरूए जिम्हे किब्बिसे आयरणता गूहणया वंचणया पलिउंचणया सातिजोगे - व्याख्याप्रज्ञप्ति, बारहवाँ शतक, 'अतिपात' नामक पाँचवाँ उद्देशक, सूत्र 5
24. जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढइ। - उत्तराध्ययन सूत्र 8.17
25. उत्तराध्ययन सूत्र 9.48-49
26. लोभविजएणं संतोसं जणयइ। - उत्तराध्ययन सूत्र 29.70

27. आवश्यक सूत्र पाँचवाँ और छठवाँ व्रत

28. लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणता पत्थणता लालप्पणता कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदिरागे - व्याख्याप्रज्ञप्ति, बारहवाँ शतक, 'अतिपात' नामक पाँचवाँ उद्देशक, सूत्र 6

29. दशवैकालिक सूत्र 8.39 एवं नियमसार, गाथा 115

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

कतिपय न्यायोक्तियाँ एवं उनका तात्पर्य

डॉ. श्याम बहादुर वर्मा

1. **अन्धपरम्परा न्याय-** एक के पीछे एक चलने वाले व्यक्तियों में आगे वाला व्यक्ति कुएँ में गिर जाए तो पीछे के सभी कुएँ में गिर जाते हैं। इसी प्रकार किसी व्यक्ति/संस्था आदि के अन्धानुकरण से होने वाली हानि।

2. **अन्धसन्ध्या न्याय-** अन्धे व्यक्ति को प्रातः सन्ध्या या रात-दिन सब एक समान लगते हैं। इसी प्रकार अज्ञानी व्यक्ति के लिए लोक-परलोक अथवा धर्म-अधर्म सब समान लगते हैं।

3. **अन्धस्यैव अन्धलग्नस्येति-** अन्धे व्यक्ति का सहयोगी भी अन्धा हो तो वे मार्ग में ठोकरें ही खाते हैं। इसी प्रकार यदि मार्गदर्शक और अनुयायी अथवा गुरु और शिष्य दोनों विवेकहीन हों तो दोनों को हानि ही होती है।

4. **अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः-** हितकर परन्तु अप्रिय वचन को कहने वाला अथवा सुनने वाला दुर्लभ है।

5. **अभ्यर्हितं पूर्वम्-** अधिक माननीय का स्थान पहले होता है, कम माननीय का बाद में।

6. **अभ्युपगमसिद्धान्त न्याय-** एक सिद्धान्त-सूत्र मान्य होने पर उससे अभिप्रेत/उपलक्षित सिद्धान्त-सूत्र भी मान्य होते हैं।

7. **अरण्यरोदन न्याय-** निर्जन जंगल में रोना व्यर्थ होता है, क्योंकि वहाँ कोई सुननेवाला तो होता नहीं जो सहानुभूति/सहायता करे। इसी प्रकार ऐसे अवसर/स्थान पर अपनी बात रखना व्यर्थ होता है जहाँ कोई उस पर ध्यान देनेवाला न हो।

-'बृहत् हिन्दी शब्दकोश' पुस्तक से संकलित

गीत

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (3)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)
वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(नवम अध्ययन : नमिप्रवज्या)

नवमा अध्ययन नमिराज का बोध मिला कंगन से,
भावित हो एकत्व भाव से, मुक्त हुए बंधन से,
जहाँ एक वहाँ आत्मशान्ति है, द्वन्द्व से दूर हटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।38।।
चन्दन घिसने लगी रानियाँ, नमि का दाह मिटाने,
कंकण उनके बजे जोर से, नमि को लगे सताने,
नमि राजा आहत हो बोले, कंकण सभी निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।39।।
इक इक छोड़ सभी ने अपने, कंकण तभी उतारे,
बन्द हुई आवाजें सारी, नमि ने भाव सँवारे,
जहाँ भीड़ है द्वन्द्व वहाँ है, एकत्व भाव जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।40।।
एक अकेले आत्म भाव में, नीरवता है बसती,
पर भावों की भीड़ जहाँ है, दुःख की सरिता बहती,
भावित हो एकत्व भाव से, द्वन्द्व की पीड़ मिटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।41।।
वैराग्य भाव जगे राजन के, सर्व संग को छोड़ा,
सुत को राज्य सौंप नमि ने, मिथिला से मुख मोड़ा,

आया समय परीक्षा का अब, प्रण की परख करालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।42।।

इन्द्र ने पूछे प्रश्न नमि से, विप्र वेश में आकर,
प्रेरक उत्तर दिये ऋषि ने, करते सत्य उजागर,
उनके समाधान को सुन लो, सुनकर भरम मिटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।43।।

कोलाहल का मैं नहीं कारण, सब स्वारथ को रोते,
क्रन्दन करते पक्षी गण भी, जब जब वृक्ष को खोते,
सीमित जनों का मोह छोड़कर, जग मैत्री अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।44।।

मिथिला के जलने से यहाँ पर, मेरा कुछ नहीं जलता,
संयोगों से मुक्त भिक्षु का, धर्म एक ही समता,
एक अकेला आतम अपना, निज गुण को सरसालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।45।।

नश्वर नगरी छोड़ चले हम, कर्म युद्ध जीतेंगे,
आत्म नगर की रक्षा के हित, पल-पल सजग रहेंगे,
तप संयम आदि सद्गुण से, भव-भव भ्रमण मिटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।46।।

संशय में ही जीने वाला, जग में घर बनवाता,
दृढ़ विश्वासी आत्मगुणों का, शाश्वत घर को पाता,
नश्वर घर का मोह छोड़कर, आवागमन मिटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।47।।

राजनीति में राग-द्वेष से, कर्म बन्ध बढ़ जाते,
निरपराधी दण्डित होते, अपराधी बच जाते,
पाप कर्म से जुड़ी आत्मा, खुद पर न्याय जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।48।।

रण में जीते लाख सुभट, पर वो नहीं जयी कहाता,
आत्म शत्रुओं को जो जीते, परम विजय को पाता,
इन्द्रिय मन और चार कषाय को, जीत के आनन्द पालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।49।।

मास-मास दस लाख गाय का, दान पुण्य जो करता,
संयम ग्रहण श्रेय है उसको, भले दान नहीं करता,
षट्काया प्रतिपालक मुनि को, अपना शीश नमालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।50।।

बाल तपस्वी का तप भी, भले घोर हो कितना,
मुनि धर्म के आगे नहीं वह, कला सोलहवीं जितना,
संयम में ही जीना मरना, संयम भाव जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।51।।

धन के भी पर्वत मिल जाए, लोभी तृप्त न होता,
इच्छाओं का अन्त नहीं है, उनमें फँस कर रोता,
यदि चाहो शान्ति की इच्छा, इच्छा शान्त बनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।52।।

काम-भोग को विष सम जानो, दुर्गति में ले जाते,
प्राप्य-अप्राप्य की छोड़ो आशा, राजर्षि चेताते,
चार कषायों को तज करके, अधम गति को टालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।53।।

विप्र रूप को छोड़ इन्द्र ने, नमन किया मुनिवर को,
विस्मित हूँ तुमने जीता है, क्रोध-मान दुष्कर को,
छोड़ा लोभ मुनि ने जैसे, मन से लोभ निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।54।।

उत्तम तेरा मार्दव मुनिवर, उत्तम तेरी मृदुता,
क्षमा अलोभ उत्तम है तेरा, उत्तम तेरी सरलता,
कर्मों की रज धुल जायेगी, निश्चल धर्म निभालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।55।।

नमन किया पुनि-पुनि मुनिवर को, गाकर उनकी महिमा,
निश्चल आत्म भाव में मुनिवर, क्या उनकी थी गरिमा,
सम्बुद्ध भोगों से निवृत्त हो, नमि से भाव जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।56।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

English-Section

Conflict Removing Vision of Jainism*

Dr Dharmchand Jain

Today, we have conflicts in our life regarding mutual relations and behavior. Conflicts arise due to our wrong beliefs and misunderstanding. We adhere to our thoughts and opinions but discard others thoughts and opinions because of narrow mindedness and prejudices. Although the religions in the world have a motto to unite the people of the world in brotherhood and love, but due to mal-intentions of the leaders and staunchness of the followers some conflicts prevail among the religions. The humanity suffers from aversion to the followers of other religions. Conflict is not bad, if it gives a rise to the development of human values, philosophy and the nation*, but it is shocking when it converts into fundamentalism and intolerance. It is known from the history that countless wars have been fought in the name of the religions. Many staunch followers do not understand the heart of the religion and they develop a complex to understand themselves better than other religious followers. Hence they hate others. This tendency is found everywhere, among the family members, society and between the nations.

Future of the human world depends on education, which a person gets at home and through various courses and curriculum of the various institutes. Education has a very significant role in developing and building the mental understanding of a human being. If a person is lacking spiritual and moral values in education then conflicts among the people arise more frequently. For maintaining peace, harmony and mutual cooperation with positive attitude to all human beings and the other living beings of the world, spiritual and moral values must be included in the world education. A person faces

*Presented in an International Conference organised by Chinmaya Mission on "Education in All Inclusive Spirituality Science" from 14th to 19th November 2013 at Veliyanad, Kocchi (Kerala)

*Somewhere conflict inspires and motivates a person to become better in thoughts and deeds. He makes efforts to surpass his competent by increasing qualities within him. Hence sanskrit poet Bhāravi says-'Conflict with great pure hearted persons is good : (varaṃ virodhopi samaṃ mahātmabhiḥ.)

conflicts in his own life due to his mismanagement of thought process and misunderstanding about the reality and priority order of the works to be done. In this respect, proper education with spiritual and moral values can help.

Jain religion and philosophy has many tenets for development of right understanding and deciding the right conduct to avoid conflicts in the minds of the people. A few of them are- non-absolutism, non-violence, tolerance, forgiveness, truthfulness, honesty, celibacy, limiting the possessions, theory of karma etc. All of these provide vision and can change the mentality of a person in conflict removal. These can also help in bringing peace, harmony and solutions to many manmade problems.

ANEKĀNTAVĀDA AND *NAYAVĀDA*

Jaina philosophy has given us a thought of non-absolutism i.e. *anekāntavāda* which establishes unity in the diversities and harmony among the people of different ideologies. It gives an idea to honour others ideology. In the world, reality is one and the same, but the philosophers view it from different visions and mention the truth in different ways. We can't say that the views of one philosopher are right while others are wrong. They may be true from their angle, hence the harmony towards the persons of different ideas should be maintained. We can have an example of the photographs of a building taken from different angles. Every photograph is true from an angle, but we can't say that photograph taken by me is only true and other photographs are wrong. Here, all the photographs depict a photo of the same object from the different angles; hence all the photographs may be correct from different points of view. We have to examine the truth value of all the photographs. Similarly all the religious and philosophical thoughts have some truth value, but we have to examine and then accept them. This is the message of *anekāntavāda* of Jain philosophy.

Anekāntavāda suggests us that the thoughts of different individuals may have some component of truth, hence we should try to understand and respect others point of view. It will help us avoiding many possible conflicts and resolving them in a harmonious atmosphere.

Tīrthaṅkar Mahāvīra has propounded many views to know and to examine the objects. In Jaina canonical text *vyākhyāprajñapti sūtra*, a

question was raised about the universe (loka) - Is the loka endless or has an end? Mahāvīra replied this question from four points of views- from the substance (dravya) point of view the universe is finite. From the space point of view also it is finite. From the time point of view it is endless and from the view of modes (paryāya) also it is infinite.[1] This technique of understanding and explaining the things is found in Jain canonical literature. Many questions have been replied from the different views. A question was raised that the worldly souls are eternal or non-eternal? Mahāvīra replied that from the substantial point of view souls are eternal but from the view of modes (or change) they are non-eternal.[2] This method of answering has been accepted widely in Jain canonical literature. So in the case of conflicts we have to look at the problem from different viewpoints.

Non-absolutism of Jaina philosophy prevents an individual to be dogmatic and one sided in approach. It pleads for a broader outlook and an open mindedness which can resolve the conflicts that emerge from differences in ideologies and faiths. A renowned Jaina philosopher Siddhasen Divākara (5th Century) has rightly said-"All schools of thought *(nayas)* are valid when they are understood from their own standpoints and as far as they do not discard the truth value of others".[3]

Jainism has developed frameworks of *nayas* to observe the object in *Anekāntavād*. A *naya* can be defined as a standpoint (naya-siddhānta) to know the object. It does not rule out other different view-points and expresses a partial truth about an object.[4] These *nayas* or standpoints may be many in number, but Jaina philosophers have discussed mainly two *nayas* as 1. Substance stand point *(dravyārthika naya)*, 2. Mode view point *(paryāyārthika naya)*.[5] These two *nayas* solve the problems of eternality and non-eternality of reality, which are propounded respectively by Vendāntists and Buddhists. Both these schools have confrontation about defining the reality. Vedānta philosophy propounds reality as eternal and Buddhism explains it as non-eternal. Jaina philosophy solves this problem by giving theory of standpoints. According to Jainism, reality is eternal from the substance viewpoint and it is non-eternal from the viewpoint of modes. This *naya* theory weaves together the two opposite philosophical tenets and accepts that every substance of the world can be thought to have two

opposite characters. From the substance point of view everything is permanent, but from the viewpoint of modes everything is changing every moment.[6] In Jaina view, every entity of the world has multiple characters and we do not perceive all the characters at the moment. Hence, logically it will be wrong to deny the existence of characteristics that we do not perceive. The real entity is the same for all the viewers but there is a difference due to their own perspective. In other words we can say that unity and diversity are the two facets of the same reality. Reality itself is unity in diversity. From the generic point of view, unity is perceived and from the specific point of view diversity is observed.

Jainism also propounds two standpoints in a different way - *niścaya naya* (spiritual viewpoint) and *vyavahāra naya* (empirical viewpoint). Niścaya naya leads a person to the spiritual truth, whereas *vyavhāra naya* puts him forward for a good conduct. These two viewpoints are complementary to each other. If a person stresses only on *niścaya naya* then he may sideline the code of conduct and proper behavior. And if he stresses on *vyavahāra naya* then he may derail from his ultimate goal. Hence there is a need of both the *nayas* for real progress towards the ultimate goal.

Jaina Philosophers also propounded seven standpoints as *naigama naya, saṃgrahanaya, vyavahāranaya, ṛjusūtranaya, śabdanaya, samabhirūḍhanaya* and *evambhūtanaya.*[7] Out of these seven standpoints first three are substance viewpoints and next four depict the viewpoint of modes.[8] In another classification first four of these are considered as *artha naya* and rest three are classified as *śabda naya.*[9] These *nayas* help in understanding the motif of a speaker. Apart from these seven *nayas*, theory of sevenfold predication also exists. In these predications a word *'syat'* is used in a determinate perspective as *syād asti, syad nāsti,* syād *asti-nāsti, syād avaktavya, syād asti avaktavya,* syad *nāsti avaktaya, syād asti-nāsti avaktavya.*

Here it is to be quotable that Jaina philosopher Malliṣeṇa and Yaśovijaya have categorically mentioned that Nyāya-Vaiśesika philosophers represent *naigama naya,* Sāṃkhya and Vedānta philosophers represent *saṃgrahanaya,* cārvāka view point represents *Vyavahāranaya,* Buddhist philosophy represents *ṛjusūtranaya* and the philosophers of grammar may

represent *śabda naya.*[10] In this way Jaina philosophers perceive the various Indian philosophies from the different points of views and give regard to them to establish harmony. A Person should leave the attitude of obstinacy that he is only true and rest of the people are wrong. If a view point denies other viewpoints then that is counted as fallacious. Yaśovijaya says- "A true non-absolutism does not disdain any faith but treats all the salvation oriented faiths equally as a father behaves to his sons."[11]

Jaina philosophers have assimilated *Anekāntavāda* in their thinking, hence they regard other thinkers with equal respect. Ācārya Haribhadrasūri says- "I possess no bias for Mahāvīra and no aversion against Kapila and other saints and thinkers. Whosoever is rational and logical ought to be accepted"[12]. Haribhadra says again - 'I venerate all those who are free from all vices and filled with virtues, be they Brahmā, Viṣnu, Śiva or Jina.'[13]. Ācārya Hemcandra proclaims - 'I worship those who have destroyed attachment and aversion, the seeds of birth, be he Brahmā, Viṣnu, Śiva or Jina".[14] This is a liberal attitude of Jaina philosophers towards other religion or sects. They give stress on perfection which denotes the eradication of attachment and aversion. Jainas worship the merit of a person. In the sacred *namaskāra-mantra* of Jainas, veneration is paid to the spiritual posts such as *arhat, siddha, ācārya, upādhyaya* and *sādhu.*[15]

Jain philosophers have consistently shown reverence to other ideologists and faiths. *Śutrakṛtāṅga-* the second earliest Jaina work, mentions that those who praise their own faith and views and disregard those of their opponents, possess, malice against them and hence remain confined to cycle of birth & death.[16] A famous Jaina old text the Isibhāsiyaiṃ comprises the teaching of 45 saints of śramaṇa and Brāhmaṇa traditions such as Nārada, Bhāradvāja, Maṇkhali Gosal and many others have been presented with due regards of Arhat Ṛsi.[17]

(To be Continued in next issue)

References:

1. Vyākhyāprajñapti sūtra (Vol.1) Agam prakashan samiti, Beawer, second edition 1991, Śataka 2, Uddeśaka 1, sūtra 24
2. ibid, Vol. 2 Śataka 7 Uddeśaka 2 sūtra 36
3. Sanmatitarka, Pandit Sukhalalji Series 5, L.D.Institute of Indology, Ahmedabad. First

revised reprinted edition 2000 (English), 1.28
ṇiyaya vayaṇijjasaccā savvanayā paraviyālaṇe mohā.
te uṇa ṇa diṭṭhasamao vibhayai sacce va alie vā.

4. Laghīyastraya, verse 52 : nayo jñaturabhiprāyo.
5. Pramāṇanayatattvāloka 7.5 : samāsatastu dvibhedo dravyārthikaḥ paryāyarthikaśca.
6. Syādvādamañjarī 10.16 (on verse 5) : sarve hi bhāvā dravyārthika-nayāpekṣayā nityāḥ, paryāyārthikanayādeśāt punaranityāḥ.
7. Aṇuogadārāiṃ : 715, p. 376 : se kim taṃ ṇae? satta mūlaṇayā paṇṇattā. taṃ jahā ṇegame saṃgahe vavahāre ujjusue sadde samabhirūḍhe evaṃbhute.
8. Pramāṇanayatattvāloka 7.6 and 27 : ādyo naigaṃa-samgrahavyavahārabhedat tredhā. paryāyārthikaścaturdhā ṛjusūtraḥ śabdaḥ samabhirūḍha evambhūtaśca.
9. Laghīyastraya, verse 72 :
catvāro-arthanayā hyete jīvādyarthavyapāśrayāt.
trayaḥ śabdanayāḥ satyapadvidyam samāśritāḥ.
10. (1) syādvāda-mañjarī of Malliṣeṇa, p. 248, tathahi naigamanayadarsanānusariṇau naiyāyikavaiśeṣikau. samgrabhiprāyapravṛttāḥ sarvepyadaivetavādā sāṃkhya-darśaṃca. vyavahāranayānupati prāyaścārvāka darśanam. ṛjusaūtrākūtaṃ pravṛttabuddhayas-tathāgatāḥ. śabdādinayāvalambino vaiyākaraṇādayaḥ.
(2) Yaśovijaya says in Adhyātamasāra : verse 79;
bauddhānāmṛjūstrato matamabhūd vedāntināṃ saṃgrahāt.
sāṃkhyānāṃ tata eva naigamanayād yogāśca vaiśesikāḥ.
śabdabrahmavidopi śabdanayataḥ sarvairnayairgumphita.
Jainī dṛṣṭirītha sāratarata pratyakṣamudvīkṣyate.
11. Adhyātmopaniṣad, verse 69-70;
yasya sarvatra samatā nayeṣu tanyeṣviva.
tasyānekāntavādasya kva nyūnādhikaśemukhī.
tena syādvādamālambya sarvadarśana-tulyatāṃ.
mokṣoddesāviśeṣeṇa yaḥ paṣyati sa śastravit.
12. Lokatattvanirṇaya, verse 38
pakṣapāto na me vīre na dveṣaḥ, Kapilādiṣu
Yuktimad vacanaṃ yasya, tasya kāryaḥ parigrahaḥ.
13. Lokatattvanirṇaya, verse 40
yasya nikhilaścā doṣā na santi sarve guṇāśca vidyante.
brahmā va viṣnur vā haro jino vā namastasmai.
14. Mahādeva stora, 44
bhavabījāṅkurajananā rāgādayā kṣayamupāgatā yasya.
brahmā vā viṣnur vā haro jino vā namastasmai.
15. Vyākhyāprajñapti sūtra, Vol. 1.1.1
Namo arahaṃtāṇaṃ, namo siddhāṇaṃ, namo āyariyāṇaṃ, namo uvajjhāyaṇaṃ, namo loye savva sāhuṇaṃ.
16. Sūtrakṛtāṅiga 1.1.2.23 : Sayaṃ sayaṃ pasaṃsaṃtā garahaṃtā paraṃvayaṃ, je u tattha viussaṃti, saṃsāraṃ te viussiyā.

17. Devanāradena arhatā isiṇā buiyaṃ- isibhāsiyāiṃ, 1.1 and in other chapters also refers it. edited by Walther Schubring. L.D. Institute of Indology, Ahmedabad, 1974

- 3 K 24-25, Kudi Housing Board, Jodhpur-342005 (Raj.)

दीक्षा-मुक्तक

श्री मगनचन्द जैन

(1)

शिक्षा के बाद ही दीक्षा दी जाती है।
वह मुमुक्षु को अध्यात्म-पथ पर बढ़ाती है।
मोह, माया, ममत्व का जाल काटती है।
साधक को चौरासी के चक्कर से बचाती है।।

(2)

जैन-भागवती दीक्षा लेना सुकर्मों का परिणाम है।
व्यक्ति की वैराग्य-भावना का विशिष्ट प्रमाण है।
जागतिक जंजालों से बच निकलने का सुन्दर प्रयाण है।
अपने लक्ष्य की ओर गति करने का प्रबल संधान है।।

(3)

दीक्षा साधु-साध्वी को भिक्षा का अधिकार दिलाती है।
पाँच समिति, तीन गुप्ति-पालन की सीख देती है।
महाव्रतों को दृढ़ता से अंगीकार करने की शक्ति जगाती है।
दीक्षित को मुक्ति मार्ग पर बढ़ने का संबल प्रदान करती है।।

(4)

दीक्षा दुष्ट, दुर्जन, दुराचारी को भी बदल सकती है।
हृदय में वैराग्य-भावना आते ही काया पलट जाती है।
भविक जीवों को इसे ग्रहण करने की उमंग आती है।
शूरवीरों की शूरता की जीती-जागती परम ज्योति है।।

(5)

दीक्षा-बिना मोक्ष नगरी में प्रवेश पाना सुलभ नहीं है।
वह दिन धन्य होगा, जब मैं दीक्षा लूँगा, यह विचार सही है।
गुरुदेव की कृपा हो तो, अवसर चूकना उचित नहीं है।
दीक्षा सिद्ध मुक्त बनने का अचूक ही उपाय है।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, ग्राम-फाजिलाबाद, हिण्डौन, जिला-करौली (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः90)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा)

जिज्ञासा- असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच देवगति में आते हैं तो किन-किन देवलोकों में आते हैं?

समाधान- असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच मरकर देव गति में ही आते हैं। देव गति में भी भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक के देवों में आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

यहाँ असंख्यात वर्ष की आयु से तात्पर्य एक क्रोड़ पूर्व झाझेरी से लेकर तीन पल्योपम तक की आयु समझना चाहिए। क्योंकि एक करोड़ पूर्व तक की आयु वाले मनुष्य- तिर्यंच संख्यात वर्ष की आयु वाले कहलाते हैं।

जिज्ञासा- किन-किन देवलोकों में उत्पन्न होने के लिए तिर्यंच युगलिकों की कितनी-कितनी आयु होना आवश्यक है?

समाधान- भगवती सूत्र शतक 24 उद्देशक 2 से 11 तक गमा के अधिकार से यह कहा जा सकता है कि जिन-जिन युगलिकों की युगलिक रूप में जितनी-जितनी आयु होती है, वे देवलोकों में आने पर अधिकतम उतनी ही आयु प्राप्त कर सकते हैं, उससे अधिक आयु प्राप्त नहीं कर पाते। उदाहरणार्थ- जिन युगलिकों की आयु करोड़ पूर्व झाझेरी होती है, वे भवनपति-वाणव्यन्तर देवों में उत्पन्न होकर जघन्य दस हजार वर्ष से लेकर करोड़ पूर्व झाझेरी तक आयु प्राप्त कर सकते हैं, इससे अधिक आयु नहीं पा सकते। उक्त नियमानुसार यह कहा जा सकता है कि-

करोड़ पूर्व झाझेरी वाले युगलिक-भवनपति, वाणव्यन्तर में, पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले युगलिक भी भवनपति, वाणव्यन्तर में उत्पन्न होते हैं, किन्तु ये पल्योपम के असंख्यातवें भाग तक की आयु पा सकते हैं। ज्योतिषी देवों में आने के लिए युगलिक

की आयु कम से कम पल्योपम का आठवाँ भाग होना आवश्यक है। पहले देवलोक में आने के लिए एक पल्योपम झाझेरी तथा पहले किल्विषी में आने के लिए कम से कम तीन पल्योपम की आयु युगलिक अवस्था में होना आवश्यक है।

इस सम्बन्ध में यह ध्यातव्य है कि युगलिकों में उक्त जघन्य स्थिति से यदि स्थिति अधिक मिलती है तो वे युगलिक उन-उन देवलोकों में आ सकते हैं। अर्थात् तीन पल्योपम की स्थिति वाले युगलिक भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक के सभी देवलोकों में आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

जिज्ञासा- असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंचों में कितनी-कितनी अवगाहना वाले कौन-कौनसे देवलोकों में आकर उत्पन्न होते हैं?

समाधान- असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंचों की अवगाहना यद्यपि उत्पत्ति के समय अंगुल के असंख्यातवें भाग की होती है, तथापि यहाँ जघन्य अवगाहना से तात्पर्य देवलोकों में उत्पन्न होने योग्य अवस्था वाले युगलिकों की अवगाहना से समझना चाहिए।

इसी आशय वाली अवगाहना लघुदण्डक के थोकड़े में बतलायी गई है। अर्थात् तिर्यंच युगलिक की जघन्य अवगाहना पृथक्त्व धनुष से लेकर उत्कृष्ट छह गाउ (कोस) तक की बतलायी है।

तिर्यंच युगलिकों में यह विशेषता है कि पृथक्त्व धनुष की अवगाहना सभी स्थिति वालों में हो सकती है। इतना अवश्य है कि भवनपति वाणव्यन्तर में जघन्य गमे (जघन्य स्थिति) से आने वाले तिर्यंच युगलिक की उत्कृष्ट अवगाहना 1000 धनुष झाझेरी, ज्योतिषी में आने वाले की दो गाउ झाझेरी की उत्कृष्ट अवगाहना हो सकती है। औघिक तथा उत्कृष्ट के गमों से आने वालों में तो सभी प्रकार की अवगाहना (पृथक्त्व धनुष से लेकर छह गाउ तक) हो सकती है।

इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि जघन्य गमों से आने वाले तिर्यंच युगलिकों में अवगाहना 6 गाउ तक की नहीं मिलती, अतः इनमें अवगाहना का नाणत्ता (अन्तर) पड़ता है। उत्कृष्ट व औघिक गमों से आने वाले तिर्यंच युगलिकों में सभी प्रकार की अवगाहना मिल जाती है, इसलिए इनमें अवगाहना का नाणत्ता (अन्तर) नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा- नाणत्ता किसे कहते हैं?

समाधान- जिन-जिन जीवों में जितनी-जितनी अवगाहना, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, समुद्घात, आयुष्य, अध्यवसाय और अनुबन्ध मिलने चाहिए यदि वे जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति वाले जीवों में नहीं मिलते हैं अथवा कम मिलते हैं तो उन-उन बोलों का अन्तर 'नाणत्ता' कहलाता है।

अर्थात् अवगाहना आदि उपर्युक्त उल्लिखित 9 बोलों में अन्तर होने पर नाणत्ता कहलाता है। जैसे- जघन्य गमा अर्थात् जघन्य स्थिति वाले तिर्यंच युगलिक जो कि भवनपति, वाणव्यन्तर में आने वाले हैं तो उन युगलिकों में अवगाहना पृथक्त्व धनुष से लेकर 1000 धनुष झाझेरी तक हो सकती है। इससे अधिक अवगाहना नहीं होती। जबकि तिर्यंच युगलिक की औघिक अर्थात् समुच्चय अवगाहना पृथक्त्व धनुष से लेकर 6 गाउ तक की होती है। यहाँ अवगाहना 1000 धनुष झाझेरी तक ही मिलती है। अतः जघन्य गमे से भवनपति, वाणव्यन्तर में आने वाले तिर्यंच युगलिक में अवगाहना का नाणत्ता (अन्तर) पड़ता है।

इस सम्बन्ध में इतना ध्यान रखना चाहिए कि उत्कृष्ट गमे से यदि भवनपति, वाणव्यन्तर देवों में तिर्यंच युगलिक आता है तो युगलिक अवस्था में उसकी अवगाहना पृथक्त्व धनुष से लेकर 6 गाउ तक की हो सकती है। अर्थात् सभी प्रकार की औघिक (समुच्चय) अवगाहना मिल जाने के कारण उसमें (उत्कृष्ट गमे से आने वाले तिर्यंच युगलिक में) अवगाहना का नाणत्ता नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा- तिर्यंच युगलिकों में दृष्टि परिवर्तन होता है अथवा नहीं?

समाधान- भगवती सूत्र शतक 24 उद्देशक 24 गमा के अधिकार से स्पष्ट होता है कि तिर्यंच युगलिक तथा मनुष्य युगलिक दोनों में ही दृष्टि परिवर्तन नहीं होता है। यद्यपि कर्मग्रन्थ भाग-5 तथा पंचसंग्रह आदि व्याख्या ग्रन्थों में युगलिकों में दृष्टि परिवर्तन होना भी मान्य किया है, किन्तु फिर भी आगमों की प्रामाणिकता को ध्यान में रखते हुए भगवती सूत्र की मान्यता को ही अधिक उपयुक्त एवं तर्कसंगत मानना चाहिए।

युगलिकों में दृष्टि परिवर्तन नहीं होने से यह स्पष्ट हो जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीवन भर मिथ्यादृष्टि ही रहते हैं तथा सम्यग्दृष्टि जीवन भर

सम्यग्दृष्टि ही रहते हैं। साथ ही इतना भी समझ लेना चाहिए कि जो युगलिक भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी देवों में आकर उत्पन्न होते हैं, वे नियमा मिथ्यादृष्टि होते हैं। जो युगलिक वैमानिक में दूसरे देवलोक तक आकर उत्पन्न होते हैं, वे सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि दोनों प्रकार के हो सकते हैं। पहले किल्विषी देवों में आने वाले युगलिक एकान्त मिथ्यादृष्टि ही होते हैं।

जो सम्यग्दृष्टि युगलिक होते हैं, वे सम्यक्त्व अवस्था में ही देवायु का बन्ध करते हैं। सम्यक्त्व अवस्था में आयु का बन्ध करने वाले नियमा आराधक होते हैं। आराधक जीव भगवतीसूत्र शतक 8 उद्देशक 10 के अनुसार अधिकतम 15 भवों में अवश्य मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं, 15 भव भी मनुष्य और वैमानिक देव, इन दो दण्डकों के ही होते हैं।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

गुरुवर हीरा-मान बड़े उपकारी हैं

श्री कुनाल सतीश जैन

गुरुवर हीरा-मान, बड़े उपकारी हैं,
भवसागर को तिराए, आपकी वाणी है।।टेर।।
युवावय में संयम धारा, मोह माया और सुख को त्यागा।
ये रत्न गुणों की खान, बड़े उपकारी हैं।।
गुरुवर हीरा-मान...।।1।।
सरस सुगम कोमल जिनवाणी, हैं ऐसे उपकारी ज्ञानी।
रत्नसंघ की शान, बड़े उपकारी हैं।
गुरुवर हीरा-मान...।।2।।
पंच महाव्रत को है धारा, रत्नसंघ शासन चमकाया।
ऐसे गुरु ये महान्, बड़े उपकारी हैं।
गुरुवर हीरा-मान...।।3।।
शांत-दांत और अतिगंभीरा, दूर करो तुम सबकी पीड़ा।
दुःख का करो निदान, बड़े उपकारी हैं।
गुरुवर हीरा-मान...।।4।।

-आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर (राज.)

धारावाहिक

लगन की वेला (8)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

शान्ति की शक्ति

मुनिराज धर्मप्रियजी अपने एक शिष्य के साथ स्थंडिल गये। वे जंगल में कुछ दूर निकल गये। वे शौच से निवृत्त होकर, शिष्य की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे एक वृक्ष के तले खड़े रहे। उन्हें एक क्षण भी नहीं बीता था कि उन्होंने देखा, गहरे जंगल की ओर से दो नवयुवक भागते हुए आ रहे हैं। उनके शरीर अर्धनग्न हैं। शरीर पर सिंदूर के चिह्न बने हुए हैं। बाल बिखर रहे हैं। वे भयाक्रान्त हैं। दौड़ने से साँस तेज हो रही हैं। वे घबराये हुए हैं। उनकी दृष्टि मुनिराज पर पड़ी। उनके दर्शन से उन्हें मानो अभय का स्थान मिला हो, इस प्रकार वे 'गुरुदेव!' 'गुरुदेव!' पुकारते हुए उनके चरणों में लौट गये। शिष्य मुनि भी आ रहे थे। उन्हें यही लगा कि वे युवक गिर पड़े हैं, क्योंकि वे कुछ दूर थे। उन दोनों ने मुनिराज के चरण दृढ़ता से पकड़ लिये। मुनिराज कुछ समझ नहीं पाये। उन्होंने पूछा- "क्या है, देवानुप्रिय!" परन्तु उनके मुँह से शब्द नहीं निकल पा रहा था। वे अत्यन्त भयभीत थे।

मुनिराज ने वे जिधर से आये थे उधर दृष्टि डाली तो उन्हें एक विद्रूप शरीरवाला दैत्याकार बलिष्ठ मनुष्य हाथ में चमचमाता हुआ शस्त्र लिये उनके पीछे दौड़ता हुआ आता दिखायी दिया। वह कोई कापालिक साधक-सा लग रहा था। जब उसकी दृष्टि उन पर पड़ी, तब वह वहीं कुछ दूर ठिठक गया। मुनिराज ने उन नवयुवकों के भय का अनुमान लगा लिया। उन्होंने निर्भयता के साथ शान्त स्वर में पूछा- "भद्र! क्या बात है?"

नवयुवक बोले- "गुरुदेव! हमें बचाओ!" और वह साधक गुर्राता हुआ बोला- "ये मेरी पूजा सामग्री है। मुझे इन्हें ले जाने का अधिकार है।" वह मन ही मन सोच रहा था, ये मुनिराज कुछ न कुछ विघ्न उत्पन्न करेंगे, क्योंकि दोनों इनके शरणागत हो गये हैं।

मुनिराज ने सारी स्थिति का अनुमान लगा लिया। अतः वे बोले- "क्या आप इनकी बलि चढ़ाना चाहते हैं?" "इससे आपको क्या प्रयोजन?" -वह दहाड़ा।

"अहिंसा ही हमारा प्रयोजन है। अहिंसा ही हमारी साधना और हम अहिंसा का ही उपदेश देते हैं। भद्र! हिंसा से अनर्थ की ही सृष्टि होती है।"

"अहिंसा से हमें कोई प्रयोजन नहीं है"- वह कड़कता हुआ बोला-"अहिंसा में हमें

किंचित् भी विश्वास नहीं है। अहिंसा कायरों का पाखण्ड है। सृष्टि हिंसा से ही पल रही है। अहिंसा में कुछ भी शक्ति नहीं है''- मुनिराज एकटक उसकी ओर देख रहे थे। उसे यह अनुभव हो रहा था कि उसके वज्रमय शरीर में मुनिराज की कोमल दृष्टि गड़ी जा रही है। वह बोल रहा था- ''जो भी हो आपकी साधना-पद्धति के अनुसार आप साधना कर रहे हैं और हमारी पद्धति के अनुसार हम। इसमें आपको बाधा उपस्थित नहीं करना चाहिए।''

''अहिंसा परम सबल है और हिंसा अत्यन्त दुर्बल है, यह प्रत्यक्ष अनुभव की बात है''- धर्मप्रिय मुनि मधुर किन्तु दृढ़ स्वर में कह रहे थे-''अपनी श्रद्धा के अनुसार कोई साधना करे- यह बात समझ में आती है, परन्तु उस साधना-पद्धति में कोई दोष है- वह किसी को दुःखदायी और अहितकारी है तो उसका निषेध करने का किसी को अधिकार नहीं है- यह कहना और मानना गलत है। मैं आपको पूछना चाहता हूँ कि ये किसके पुत्र हैं?''

''होंगे किसी के? इसकी हमें क्या चिन्ता?''

''आपकी बात से यह ज्ञात होता है कि आप यह बात भलीभाँति जानते हैं कि ये किसी न किसी के पुत्र हैं ही। यदि इनके स्थान पर आपके पुत्र होते तो?''

''मेरे पुत्र हैं ही नहीं और होते तो इष्ट-प्रीत्यर्थ उन्हें भेंट चढ़ाने से मुझे कोई रोक नहीं सकता?''

''मान लो, उस स्थान पर आप ही होते तो? उस समय आपको यह साधना-पद्धति कैसी लगती? राक्षसी या देवी?''

''मैं और कुछ नहीं समझता! मैं मात्र मेरे आराध्य को तुष्ट करना चाहता हूँ। उसके लिये मैं कुछ भी कर सकता हूँ?''

''तुम्हारे आराध्य तुष्ट होकर तुम्हें क्या देंगे?''

''मेरी कामना सिद्ध होगी। मेरे मनोरथ पूरे होंगे।''

''देवानुप्रिय! तुम गलत रास्ते पर चल रहे हो। तुम किसी को हनकर सिद्धि नहीं पा सकते। कदाचित् कोई सिद्धि पा भी ली तो वह तुम्हें सुख न दे सकेगी। जैसे बीज बोओगे वैसे ही फल पाओगे।''

''हँऽऽहँऽऽ''- उस प्रचण्ड कायर पुरुष ने जोर से अट्टाहास किया। वे दोनों नवयुवक डर के मारे काँप रहे थे और नये मुनिजी भी डर गये। वह गरजता हुआ बोला- ''तुम मेरी शक्ति को नहीं जानते हो? मैं कौन हूँ- यह भी नहीं जानते हो? कोई बात नहीं। बहुत अच्छा, मेरे इष्टदेव को प्रसन्न करने के लिये आप जैसे की एक और पूजा-सामग्री मिल रही है। मैं आप तीनों को इस शस्त्र से कसकर ले जाऊँगा।'' वह शस्त्र को घुमाता हुआ आगे

बढ़ा। शस्त्र में से सूक्ष्म लम्बे-लम्बे तंतु निकलने प्रारम्भ हुए। वे दोनों युवक मुनिराज के चरणों से लिपट गये। वह अट्टहास करता हुआ आगे बढ़ता चला आ रहा था।

वे तंतु मुनिराज के निकट आ गये। वे तीन विभागों में बँट गये और तीनों को अपने में लपेटने के लिये प्रवृत्त हो रहे थे। मुनिराज ने मृदु हास्य किया और वे तंतु पुनः एकरूप होकर अदृश्य हो गये। तब तक वह पुरुष मुनिराज से लगभग चार हाथ दूर रह गया था। बस वह वहीं एकदम रुक गया। जैसे उसे कोई झटका लगा हो। उसका अट्टहास भी थम गया। मुनिराज शान्त खड़े थे। वे निर्निमेष दृष्टि से नासिका के अग्रभाग को देख रहे थे और वह पुरुष उनकी ओर देखने लगा। इधर नये मुनिजी से नहीं रहा गया। वे उस पुरुष की झपट में गुरुदेव को नहीं आने देने के लिये बीच में आ रहे थे, परन्तु वे गुरुदेव की आँखों की तरफ देखकर एकदम रुक गये। रुक गये क्या, उनके चरण ही न बढ़ सके।

उन्होंने अनुभव किया कि गुरुदेव की आँखों से शान्ति के झरने बह रहे हैं। ऐसा लगा कि गुरुदेव कायोत्सर्ग में हैं। वे प्रस्तर-प्रतिमा से निश्चल थे। वहाँ शान्ति का सागर लहराने लगा। सारा वातावरण पलट गया। क्षणभर पहले की रौद्रता और भय विलीन हो गये। वह पुरुष भी शान्त हो गया था। शस्त्र अभी भी उसके हाथ में था। परन्तु अब उसमें वह तेजी नहीं थी। वे दोनों नवयुवक मुनिराज के चरण छोड़कर निर्भय बैठे थे। वे हाथ जोड़कर मन ही मन कुछ बुद-बुदा रहे थे। वे मरण-भय से पार हो गये थे। मुनिराज ने जाना कि उपसर्ग टल गया है- यह जानकर कायोत्सर्ग पाला। वह अभी तक उनकी ओर देख रहा था। उसकी उग्रता समाप्त हो गयी थी। अब उसकी मुद्रा भी कुछ सौम्य लग रही थी। उसे लग रहा था कि मैंने इन मुनिराज को कहीं देखा है। मुनिराज ने उसकी ओर देखा। दोनों की आँखें मिलीं। मुनिराज कुछ देर तक उसकी ओर देखते रहे। फिर उन्हें कुछ स्मरण हो आया। उन्होंने मधुर टंकार से युक्त गूँजती हुई ध्वनि से पुकारा.... "प्रचण्ड!"

उस वातावरण में प्रतिध्वनि हुई, दूर-दूर तक गूँजती हुई प्रचण्डऽऽ!

इस सम्बोधन की रणकार ने- प्रतिध्वनि ने उस पुरुष के हृदय को मथ दिया। उसने मुनिराज को पहचान लिया। उसने शस्त्र को एक तरफ फेंक दिया। वह धरती पर लौट आया और आर्त्तभाव से बोला- "धम्मा! ओ तुम मेरे धम्मा हो!" उसकी आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। "धम्मा! मैं तुम्हें नहीं पहचान सका....." रोने की आवाज में उसका स्वर डूब गया। मुनिराज के पिताजी ने- जब वे गर्भस्थ थे, तब उनकी माता को धर्म और धर्मीजनों के प्रति अत्यधिक प्रेम उत्पन्न होने के कारण उनका नाम धर्मप्रिय रखा था, परन्तु घर में उन्हें प्रेम से धम्मा नाम से ही पुकारा जाता था। वह पुरुष उनके घर पर सेवक था और उसका नाम प्रचण्ड था। उसका उन पर अति प्रेम था। वे बालक थे, तभी प्रचण्ड की गलत

प्रवृत्ति के कारण पिताजी रुष्ट हो गये थे। अतः वह वहाँ से चला गया था। लम्बे समय के बाद एक-दूसरे को सामने खड़े पाया और स्मृतियों को कुरेदते हुए एक-दूसरे को पहचाना। प्रचण्ड पश्चात्ताप कर रहा था।

वह जोर-जोर से रो रहा था। बस वह 'धम्माऽऽ' 'ओऽऽ मेरेऽधम्माऽऽ' ये ही शब्द बोले जा रहा था। वे दोनों नवयुवक आश्चर्य से आँखे फाड़-फाड़कर यह दृश्य देख रहे थे। नये मुनिजी भी स्तब्ध थे। उसका रोना बन्द ही नहीं हो रहा था। सारा वातावरण करुणार्द्र हो गया। उसके रुदन से मानो पशु-पक्षी, वन-वृक्ष आदि भी द्रवित हो रहे थे। फिर मुनिराज तो दया के सागर थे। उनका हृदय भी करुणा से भर गया। प्रचण्ड का रुदन भी प्रचण्ड ही था। वे यन्त्र-चलित से प्रचण्ड के समीप आ गये। वे रुद्ध स्वर से बोले- "प्रचण्ड! तुम्हारी यह क्या दशा है?"

उनके समीप आते ही प्रचण्ड उठ बैठा। वह बच्चे जैसे सुबक रहा था। मुनिराज बड़े असमंजस में थे। उन्हें कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा था। इसे कैसे आश्वासन देना? कैसे समझाना? वे बड़े विचार में पड़े हुए थे। सभी मूक-दर्शक बने हुए थे। मुनिराज की अन्तश्चेतना में कुछ निर्णय हुआ और अचानक ही उनका दाहिना हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में ऊपर उठ गया और बोले-"शान्त होओ....शान्त होओ!" उसने रोते-रोते ही दोनों हाथों से मुनिराज का हाथ पकड़ लिया और अपने मस्तक पर रख लिया। मुनिराज ने भी अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश नहीं की। वस्तुतः वे प्रतिरोध ही न कर सके। कुछ क्षण ऐसे ही बीत गये। उसका रोना मन्द हो गया। उसने मुनिराज का हाथ छोड़ दिया- "तुम्हारे चंदन जैसे शीतल हाथ ने मेरे मस्तिष्क को शीतल कर दिया।" अब वह बिल्कुल शान्त हो गया। उसने अपने आँसू नहीं पोंछे। वह बोला- "धम्मा! मैं पापी हूँ और तू पवित्र आत्मा है। मैंने तेरा हाथ छुआ। माथे पर लगाया। मुझ पापी का स्पर्श तेरे लिये अनुचित है, परन्तु मैं ही जानता हूँ कि इस हाथ के स्पर्श से मुझे कितनी शान्ति प्राप्त हुई है। जीवन में पहली बार ही ऐसी शान्ति का अनुभव कर रहा हूँ...." मुनिराज कुछ कहने जा रहे थे, परन्तु उसने मुनिराज को कहने का कुछ अवकाश ही नहीं दिया। वह बिना रुके बोल रहा था। उसका बोलना विलाप जैसा था-"धम्मा! मैं तुम्हें तू कहूँ कि 'आप' कहूँ, कुछ समझ में नहीं आ रहा है। नहीं, मेरे लिये 'आप' नहीं 'तू' ही है तू! धम्मा!..... ओ मेरे धम्मा! मैंने सुना कि तू जैन साधु बन गया है। यह बात सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। तुम्हें ऋद्धि की क्या कमी थी। एक कहते हजार भोग तुम्हारे सामने खड़े रहते। एक तू है, धम्मा! एक मेरी ओर देख, धम्मा! मैं स्त्री, धन और भोग पाने के लिये इस दशा में पहुँचा हूँ। सच कहता हूँ, धम्मा! तुझसे कुछ नहीं छिपाऊँगा। तू मुझे पापी कहेगा, तू मुझे तमाचा मारेगा तो भी मेरा

मन नहीं दुःखेगा। तू मेरा धम्मा है न! देख, तेरे पिताजी-मेरे सेठजी! नाराज हुए थे मुझ पर! क्यों नाराज हुए थे, तुझे नहीं मालूम! सेठजी नाराज हुए थे, क्योंकि मैंने देवी को कुक्कुट की बलि चढ़ायी थी। उन्हें पता लग गया था। सो नाराज हो गये। मैं जानता था। वे कट्टर जैन थे। उन्होंने मुझे घर जाने का नहीं कहा था। पर मैं नहीं रह सकता था, क्योंकि वे नाराज हो गये थे। उनकी दृष्टि में मेरा कुछ भी मान नहीं रहा था। कैसे रहता मैं वहाँ? परन्तु तुझे मिले बिना कैसे जाता। मैं तुझसे मिलने आया। तेरा भी मुझ पर प्रेम था। तू बालक था, पर बड़ा समझदार था। तूने मुझे रोका, परन्तु मैं रुक नहीं सकता था। तब तूने कहा- 'जाओगे ही! नहीं रुकोगे? लो, यह यादगिरी लेते जाओ।' यह कहकर तूने बहुमूल्य मोती की माला अपने गले से निकालकर मुझे दे दी। मैं खुश हो गया-अरे! निहाल हो गया। अब भी तेरी उस प्रेम से भरी मुद्रा को याद करता हूँ तो पुलकित हो उठता हूँ। मैंने सेठ से वेतन नहीं माँगा था। माँगता तो वे मुझे मना नहीं करते। पर मेरे भीतर पापात्मा बैठा था। अतः मैं उस पुण्यात्मा के समक्ष कैसे जाता? परन्तु तूने मेरे वेतन से कई गुना अधिक दे दिया था। मेरे मन में आया था कि मैं अब अपना संसार बसाकर सुख से रहूँगा, परन्तु मेरी प्रियतमा निर्दया निकली। जिसके प्रेम के कारण मैं दासपना कर रहा था, जिसके प्रेम के कारण अपना अंग तोड़ रहा था, जिसके प्रेम को अमर बनाने के लिये कुक्कुट की बलि चढ़ाकर सेठ को रुष्ट किया था, उसी प्रियतमा ने मेरे साथ विश्वासघात किया। मैं घर पहुँचा, तब तक वह दूसरे की हो चुकी थी। मेरे हृदय में अशान्ति की ज्वाला भभक उठी। मैं क्रोध से पागल हो गया। मेरे मन में भाव जागा कि दुनिया में शक्ति की ही पूजा होती है और मैं चल पड़ा उस रास्ते। शक्ति का उपासक हो गया मैं- कापालिक हो गया मैं। तुझे क्या कहूँ, धम्मा! कई सिद्धियाँ पायीं हैं मैंने! पर तेरी सिद्धि के आगे पानी भरती हैं वे। मैं अपने आपको बहुत बड़ा समझ रहा था। मुझे सिद्धियों का नशा चढ़ा था। पर आज मेरा अभिमान चूर-चूर हो गया। तेरे हाथ के स्पर्श ने मुझे जो शान्ति दी, वह मुझे इन सिद्धियों से नहीं मिल सकी। धम्मा! तूने मुझे बता दिया कि शान्ति में, अहिंसा में कितनी शक्ति है? अहिंसा के बिना शान्ति नहीं है और शान्ति से बढ़कर कोई शक्ति नहीं है।....." फिर उसने उन नवयुवकों की ओर देखा जो अब बिल्कुल निर्भय थे और वे मुग्ध होकर उसकी बात सुन रहे थे। वह उनकी ओर संकेत करते हुए बोला-

"धम्मा! तू कह रहा था कि इनके स्थान पर तुम्हारा पुत्र होता तो क्या करते? भले ही तू मेरा पुत्र नहीं है, लेकिन मैं तुझे पुत्र से बढ़कर प्यार करता हूँ। यदि मेरे इष्ट तुम्हारी बलि माँगते तो सम्भव है कि मैं उनकी अवहेलना कर देता। नहीं चढ़ा सकता तेरी बलि। मैं तेरे दर्शन करना चाहता था। पर कहाँ से मिलते तेरे दर्शन! तेरा-मेरा रास्ता भिन्न। छत्तीस के

अंक जैसा।... देख, इन सिद्धियों के बल से प्रियतमा को मेरे चरणों की दासी तो बना सका, परन्तु तेरे दर्शन नहीं कर सका। पर धन्य है- इन छोकरों को कि इनके निमित्त से मुझे तेरे दर्शन हुए। मैं धन्य हूँ, मैं इतने दिनों से भटक रहा था, न जाने किस इष्ट देव के पीछे! पर तू आज मेरा प्रभु मिल गया है। धम्मा! आप मेरे प्रभु हो, आप मेरे भगवान हो! ओ मेरे भगवान! मैं आपके चरण-कमलों में आया हूँ- अब मुझे तारो, प्रभो!'' यों कहकर उसने मुनिराज के चरणों में मस्तक रख दिया।

''प्रचण्ड! तुम्हारी आत्मकथा सुनी। रोमहर्षक है- तुम्हारा जीवन! खूब भटके हो तुम! भद्र! अब शान्ति पाओ।''

''मैं तो आपके दर्शन से बहुत कुछ पा गया, प्रभो!'' उसने मस्तक उठाकर और हाथ जोड़कर उनकी ओर देखते हुए कहा।

''नहीं, अभी तो शान्ति की झलक मात्र पायी है''- मुनिराज ने उसे सही लक्ष्य प्राप्त करवाने के हेतु कहा- ''शाश्वत शान्ति प्राप्त करने के लिये साधना करनी होगी, देवानुप्रिय!''

''कैसे करूँ प्राप्त? राह बताना, प्रभो!''- उसने इधर-उधर दृष्टि डाली तो देखा कि नगर की ओर से झुण्ड के झुण्ड लोग आ रहे हैं। वह बोला-''ये लोग आपके लिये आ रहे हैं- ऐसा लगता है। अरे! मैं कितना स्वार्थी हूँ। मैं बैठा रहा- अपनी धुन में बोलता रहा और आपको खड़े ही रखा, प्रभो! आप कहाँ विराज रहे हैं?''

''यहीं कुशस्थलपुर में। मेरे गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री मुनिचन्द्रजी महाराज यहीं विराजमान हैं। उन्हीं की सेवा में हूँ।''

कई लोग वहाँ आ चुके थे और आश्चर्य से उनका वार्तालाप सुन रहे थे। नगर में ये समाचार पहुँच गये थे। प्रचण्ड समीप के ही कानन में रहता था। उसकी सिद्धियों की बातें दूर-दूर के जनपदों में फैली हुई थी। लोग उसके आश्रम की ओर जाने से डरते थे। उसके प्रति लोगों में भय-मिश्रित कौतुक था। कइयों ने उसकी सिद्धियों के चमत्कार देखे थे। कइयों को लाभ मिला था तो कइयों ने जन-धन की हानि भी उठायी थी। अधिकतर लोग उससे डरते थे। वह नगर में कभी नहीं आता था। खास आवश्यकता होती तो गुप्त रूप से ही आता था। उसके विषय में अनेक किंवदंतियाँ फैली हुई थीं। जब लोगों ने सुना कि वह प्रचण्डकाय प्रचण्ड-ऋद्धि-सिद्धियों का स्वामी प्रचण्ड छोटे गुरुदेव के चरणों में पड़ा हुआ रो रहा है तब लोगों में कौतूहल जागा। आबाल वृद्धजन चल पड़े और आकर वहाँ इकट्ठे हो रहे थे।

उधर आचार्यश्री का ध्यान गया कि मुनि धर्मप्रिय अभी तक जंगल से नहीं लौटे। बहुत

विलम्ब हो गया। इतनी देर तो वे कभी नहीं करते हैं। क्या कारण है? उन्होंने दोनों मुनियों को आदेश दिया- "जाओ! अन्वेषण करो। धर्मप्रियजी अभी तक नहीं आये।" वे मुनि आज्ञा पाते ही स्थानक से निकले। उन्हें मार्ग में लोगों से पता लगा कि एक कापालिक ने गुरुदेव को रोक रखा है। यह बात सुनकर उनका हृदय धड़क उठा। उन्होंने आगे कदम उठाये। वे भी वहाँ पहुँच गये। मुनिवर को प्रसन्न देखकर उन्हें शान्ति हुई। लोगों ने रास्ता दिया। वे मुनि धर्मप्रियजी के समीप पहुँचे तब वे कापालिक प्रचण्ड को उत्तर दे रहे थे। उन्होंने मुनिराज को वन्दना की। यह देखकर प्रचण्ड बोला- "क्या ये आपके शिष्य हैं।"

"हाँ, आयुष्मन्! हम संयम में परस्पर सहयोगी हैं।"

"अच्छा, भगवन्! और मुझे क्या बनाओगे?" वह हँसने लगा।

मुनिराज ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। आगंतुक मुनि शान्ति से बोले- "गुरुदेव? आपको सकुशल देखकर, हमारी आकुलता दूर हुई। इतना विलम्ब हो जाने के कारण आचार्यदेव चिन्तित हैं।"

"बच्चों! ये कच्चे गुरु के चेले नहीं हैं" - प्रचण्ड ने कहा- "प्रभो! अभी तो मैं चलता हूँ। फिर आपके दर्शन करूँगा।"

उसने अपना शस्त्र उठाया और जंगल में अदृश्य हो गया।

(क्रमशः)

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2014] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2014 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'दगा किसी का सगा नहीं' रचना के प्रश्नों के उत्तर 20 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	प्रखर गांधी-चित्तौड़गढ़(राज.)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	युक्ता खाबिया-पीसांगन, अजमेर (राज.)	23.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	नेहल जैन-इन्दौर (मध्यप्रदेश)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	लक्की कांकरिया-दौडबालापुर (कर्नाटक)	22
	अर्पित जैन-जोधपुर (राज.)	21
	अंशुल कचोलिया-बैंगलोर (कर्नाटक)	20
	आयुषी आहूजा-जयपुर (राज.)	19
	मोनू जैन-शेरपुर, करौली (राज.)	18

नारी-स्तम्भ

भूल हुई है मुझसे

श्री युगराज जैन

पूज्य पापा व मम्मी,

प्रणाम!

रात के दो बज रहे हैं, बड़ी मुश्किल से हिम्मत जुटाकर एक वर्ष बाद यह पत्र लिखने में कामयाब हो पाई हूँ। जब से प्रेमजाल में फंसकर एक लड़के के साथ घर से भाग कर विवाह किया, तब से लेकर आज तक रो-रोकर दिन-रात गुजार रही हूँ। मानो जेल की कोठरी में अपने सभी रिश्ते तोड़कर बस खून के आँसू पी रही हूँ। मेरा फोन, जो आपने मुझे मेरे जन्म दिन पर दिलाया था, वो भी उन्होंने मुझसे छीन लिया। घर से बाहर अकेली जाने नहीं देते। माँ, किस तरह तू मुझे रोज मंदिर लेकर जाती थी, स्थानक में साथ ले जाकर गुरुजी के श्रीमुख से जिनवाणी का श्रवण करवाती थी। किसी चींटी तक को मैं पांव के नीचे नहीं आने देती थी। यदि कभी मांस की दुकान भूल से भी दिख जाती तो मुझे उल्टी हो जाती थी।

पापा-मम्मी आप सिहर उठोगे यह जानकर कि शादी के छः महीने तक तो मैं अपनी नज़रों के सामने किचन में मुर्गी कटते देखती रही, और लगभग पिछले छः महीनों से मुझे अपने हाथों से मुर्गी को काटकर व पकाकर परोसना पड़ रहा है। बीच-बीच में तीन बार मुझे भी मार-पीट कर खिलाया गया। पापा मैं जिन्दा लाश बनकर रह गई हूँ। सभी अपने लिए लम्बी उम्र की कामना करते हैं, परन्तु मैं प्रतिपल प्रभु से मौत मांग रही हूँ, लेकिन वह भी इस बदनसीब से दूर भाग रही है।

पापा, आपने मुझे बार-बार समझाया था कि इतनी देर तक मोबाइल पर चिपकी मत रहो। कई बार रात को मेरे कमरे की लाइट जलती देखकर आप अकस्मात् मेरे कमरे में आकर पूछते कि बेटी इतनी रात तक क्या कर रही हो? मैं अपने दोस्तों से नेट पर चेटिंग कर रही होती और आपसे कह देती कि इण्टरनेट पर पढ़ रही हूँ। आपने मुझे कई बार समझाया था कि ये दोस्त अच्छा नहीं है, ये सहेली सही नहीं है। लेकिन अपनी आँखों पर मैंने मानो प्यार की पट्टी बाँध रखी थी। उसने मीठे-मीठे ख्वाब दिखाए थे, उसकी कामुक बातों ने मुझे इस तरह दीवाना बना दिया था कि बस मेरी दुनिया उस लड़के की बाँहों में सिमट कर रह गई। और एक दिन मैं आपके लाड-प्यार, दुलार को ठोकर मारकर घर से भाग गई।

चिड़िया की तरह आपके आंगन में फुदकने वाली आपकी यह बेटी, एक शिकारी के हाथों पिंजरे में कैद कर ली गई। बचपन में आपकी आज्ञा में रहकर अपने सपनों को पंख

लगाकर उड़ने वाली आपकी ये बेटी अपने ही सपनों को चूरचूर करने की हिम्मत उस वक्त कैसे जुटा पाई। कैसे, आपकी ये बेटी एक नागिन बनकर अपने पापा-मम्मी की खुशियों को डस गई। कैसे आपकी ये बेटी एक डायन बनकर परिवार की सुख शांति को निगल गई? पापा मैं अपने किए पर पछता रही हूँ। आपकी बाँहों में लिपट कर धन्य होना चाहती हूँ। माँ, मैं तेरे आँचल में छिपकर चैन की नींद सोना चाहती हूँ। पर पापा, अब ये सब मेरे भाग्य में नहीं रहा। क्योंकि मैंने स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है। दुःख तो इस बात का अधिक हो रहा है कि मैं ये जानती थी कि जितनी भी लड़कियाँ भाग कर गई हैं वे सब बुरी तरह से दुःखी व बुरी तरह से पीड़ित हैं। फिर भी ओवर-कान्फिडेन्स के कारण कि सबके प्रेमी गलत हुए होंगे, मेरा दोस्त मुझे कभी धोखा नहीं देगा। इसी ओवर-कान्फिडेन्स के कारण मैं भी उसी पंक्ति में आकर खड़ी हो गई, जिस दुःखी पंक्ति में घर से भागकर जाने वाली तमाम युवतियाँ खड़ी हैं।

पापा, मैं आज अपने किए पर पछताते हुए दिन-रात सोचती हूँ कि जब छोटी थी, तब आपकी आज्ञा में रहने वाली आपकी ये बेटी ज्यों-ज्यों बड़ी होती गई आपकी आज्ञा की परिधि से बाहर कैसे निकलती गई? दुनिया कहती है कि ज्यों-ज्यों बच्चे बड़े होते हैं उनमें अपने आप समझ आती है, पर पापा मैं ज्यों-ज्यों बड़ी होती गई, क्यों नासमझ होती गई? इस नासमझी के कारण आज मेरी जिन्दगी मृत्युशय्या पर पड़ी कराह रही है।

पापा, मुझे अपनी भूल का आज भी पछतावा हो रहा है कि मैं भी कैसी पागल थी जो अपने माँ-बाप के पावन, पवित्र प्यार को, उनके साथ बिताए 18 वर्षों में नहीं पहचान पाई। वहीं मैंने एक अनजान युवक के साथ छह-आठ महीने बिताए, कुछ लम्हों में उत्पन्न प्यार पर विश्वास करके घर से भाग गई। मतलब स्पष्ट है कि मैं भी उसके प्यार की मीठी व क्षणिक आनंद देने वाली कामुक बातों के पीछे छल-कपट की चासनी में लिपटी वासना को प्यार समझने की भूल कर बैठी।

कई गन्दे व कीचड़ में सने नाले जिस तरह सागर में मिलकर पवित्र हो जाते हैं, ठीक उसी तरह आपकी अपनी लाड़ली बेटी आपके घर से भागकर वासना के शिकारी के हाथों नोंच लेने के बाद एक गन्दे नाले की तरह हो गई है, इसलिए मैं अपनी धरा बदलने के लिए यहाँ से वापस भागकर आपके पास आना चाहती हूँ। पापा व मम्मी आप तो प्रेम व वात्सल्य के महासागर हैं, मुझ जैसे नाले को अपने प्रेम की अथाह बाँहों में लेकर पुनः पवित्र बना लेना। पापा! यह चिट्ठी मैंने स्याही से नहीं, खून से नहीं, बल्कि आँसूओं से लिखी है। मैं यहाँ एक सहेली का नम्बर लिख रही हूँ। आप उसे फोन करके बता देना कि बेटी! मैं तुम्हें स्वीकार कर लूँगा। मेरे कदम अपने घर की ओर भागने के लिए व्याकुल हैं,

आतुर हैं। पापा, आप मुझ पर यकीन करना। पापा, आप अपनी बाहें पसार लें, मैं उनमें सिमटना चाहती हूँ। अपने वात्सल्य के आँचल में पनाह दे दें, माँ-पापा, मैंने आपको जो ज़ख्म दिए थे, वे अब तक नासूर बन चुके होंगे, उन ज़ख्मों पर मरहम लगाने के लिए आना चाहती हूँ। आपके सपने जो मैंने तार-तार कर दिए थे, उन्हें साकार करने के लिए आपके पास वापस आना चाहती हूँ। मुझे गले लगा लेना पापा! आपके फोन के इंतजार में..... आपकी लाडली, किन्तु अपने कर्मों से बनी दुःखी व असहाय बेटी।

-'युग प्रवाह' पाक्षिक पत्रिका वर्ष 12 अंक 16 से संकलित (राज.)

भगवान महावीर अवार्ड से सम्मानित

ब्लू क्रास ऑफ इण्डिया

पशु कल्याण संस्थाओं में एक जाना-पहचाना नाम है- ब्लू क्रास ऑफ इण्डिया (BCI)। केप्टन सुन्दरम (जो एक पायलट एवं मद्रास फ्लाईंग क्लब में प्रशिक्षक हैं) को पशुओं पर होती क्रूरता देखना असह्य हुआ तो उन्होंने डॉ. चिन्निकृष्णा (चेयरमेन एमीरेट्स) के साथ मिलकर सन् 1964 में बी.सी.आई की स्थापना की। बीसीआई के अन्तर्गत विभिन्न विभाग हैं जैसे कुत्ते और पिल्ले, बिल्ली और उसके बच्चों का आश्रय, चिड़ियाखाना, गौशाला, ऑपरेशन थियेटर, दवाखाना और मानवीय शिक्षा विभाग आदि। इसमें हर समय कम से कम 1500 जानवर उपलब्ध रहते हैं। कार्यक्रमों के तहत अहिंसा, शाकाहार और पर्यावरण संरक्षण की मूल्यपरक शिक्षा युवाओं को दी जाती है। तमिलनाडू में चेन्नई, कांचीपुरम और तिरुवल्लूर जिले में इनके तीन आश्रम भी हैं। संस्था द्वारा किये गए प्रमुख कार्य-

1. शोध-प्रयोग में उपयोग होने वाले मेंढ़क के पाँव एवं बन्दरों के निर्यात के खिलाफ कार्यवाही।
2. 'जल्ली-कट्टु' नामक बैल-युद्ध के खिलाफ भी कदम उठाया।
3. एनिमल बर्थ कन्ट्रोल कार्यक्रम के तहत चेन्नई शहर को भारत में प्रथम रेबीस-मुक्त शहर बनाया।
4. बीसीआई के कार्यक्रमों को विश्व स्वास्थ्य संस्था (वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन) ने एकमात्र मानवीय तरीका बताया है जिससे सड़कों पर व्याप्त कुत्तों की आबादी पर नियंत्रण किया जा सके और इस कार्यक्रम को विकसित देशों में लागू किया जा रहा है।
5. कत्लखानों हेतु अवैध रूप से ले जाए जा रहे पशुओं को बचाया।
6. पशुओं और जानवरों को बचाने हेतु कई मामलों में अदालती कार्यवाही भी की।
7. बीमार, सीमित और घायल पशुओं की सेवाओं हेतु भी उद्यत है।

युवा-स्तम्भ

बचें रात्रि-भोजन के दोष से

श्री पारसमल चण्डालिया

भारत वर्ष में रात्रि-भोजन-त्याग और अनछाना पानी त्याग, ये जैनों की दो विशेषताएँ ही मोटे रूप में सर्व साधारण में व्यक्त होती थीं। आज तो जैनों में रात्रि-भोजन का प्रचलन खूब हो रहा है। जैनी आज अपनी पहचान खोते जा रहे हैं। चिंतन करें-

मैं वीर की संतान हूँ, यह समझ क्यों आता नहीं।
जो वास्तव में जैन है, वो रात को खाता नहीं।।

क्यों आवश्यक है रात्रि-भोजन त्याग?- रात और दिन ये समय के दो विभाग हैं। रात्रि में सूर्य के अदृश्य रहने के कारण तीव्र प्राकृतिक प्रकाश का अभाव रहता है, अतः क्षुद्र जंतुओं का जोर बढ़ जाता है। इस कारण अहिंसा-व्रतियों के लिए रात्रि-भोजन त्याग अनिवार्य है। भले ही कृत्रिम प्रकाश कितना ही तीव्र क्यों न हो, किन्तु वह कदापि सूर्य के प्रकाश के तुल्य नहीं बन सकता, क्योंकि सूर्य की रोशनी से शरीर में रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है यानी सूर्यास्त होने के पश्चात् शरीर की प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती है, अतः ऊर्जा शक्ति की हानि से रात्रि में किया गया भोजन शक्तिवर्धक नहीं होता। सूर्यास्त के पश्चात् नाभिकमल के सक्रिय नहीं होने से भी भोजन का पाचन बराबर नहीं होता। सूर्य के प्रकाश में रात्रि की अपेक्षा ऑक्सीजन की मात्रा भी अधिक रहती है इससे पाचन सरल होता है। इसीलिए आगमकार भी फरमाते हैं-

अत्थंगयंमि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए।
आहारमाइयं सव्वं, मणसा वि ण पत्थए।।

अर्थात् सूर्य अस्त हो जाने पर तथा पूर्व दिशा में उदित न होने पर आहार आदि सभी पदार्थों को मन से भी न चाहें। दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 8 की इस गाथा में रात्रिभोजन के त्याग का विधान किया गया है। अतः रात्रि-भोजन-त्याग सर्वथा ही योग्य है।

रात्रि-भोजन त्याग से व्रताराधना- रात्रिभोजन अनेकानेक दोषों का घर है। रात्रि-भोजन स्वास्थ्य के साथ-साथ वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं पारिवारिक दृष्टिकोण से अनुपयोगी है, हानिकारक है और प्रकृति के विरुद्ध है, जबकि रात्रि-भोजन का त्याग साधना, शारीरिक, मानसिक व्यवस्था और आत्महित आदि अनेक दृष्टियों से उचित है। रात्रिभोजन से सावद्य योग में प्रवृत्ति होती है और उसके त्याग से निरवद्य योग का पोषण होता है, इस दृष्टि से रात्रि-भोजन-त्याग व्रत है तथा यह छठे व्रत के रूप में आगमों

में वर्णित है। संत-सती तो आजीवन रात्रि-भोजन के त्यागी होते ही हैं, परन्तु श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी रात्रि-भोजन त्याग करना अनिवार्य है। क्योंकि रात्रि-भोजन से पहला व आठवाँ व्रत तो प्रत्यक्ष में दूषित होता ही है। इसके अलावा परोक्ष में शेष व्रत भी दूषित होते हैं। रात्रि-भोजन का त्याग करने से सहज ही श्रावक के बारह व्रतों का पालन इस प्रकार हो सकता है-

1. रात्रि-भोजन करने से रात्रि में ही भोजन का आरंभ-समारंभ होता है और भोजन बनाते समय त्रस आदि जीवों की भी विशेष हिंसा संभव है जो रात्रि-भोजन त्याग से रुक जाती है। जीवों को अभयदान मिलने से अहिंसा व्रत का पालन हो जाता है।
2. रात्रि-भोजन-त्याग से माता-पिता आदि परिवारजनों से छिप कर होटल में खाने की आदत छूट जाती है तथा झूठ भी नहीं बोलना पड़ता है।
3. रात्रि-भोजन भगवान् की आज्ञा का उल्लंघन है। रात्रि भोजन त्याग से अस्तेय व्रत का पालन हो जाता है।
4. रात्रि-भोजन-त्याग से ब्रह्मचर्य पालन में सहजता आती है।
5. रात्रिभोजन-त्याग होने के कारण देर रात्रि तक व्यापार आदि न करके जल्दी घर आने से चित्त को विश्राम मिल जाता है।
6. भोजन में काम आने वाले द्रव्य आदि की मर्यादा हो जाती है।
7. व्यसनों का त्याग हो जाता है।
8. दिन में भोजन बनाने की अनुकूलता होते हुए भी रात्रिभोजन किये जाने के कारण रात्रि में भोजन सामग्री बनानी पड़ती है। जबकि रात्रि-भोजन त्याग से रात्रि में होने वाला व्यर्थ हिंसा का पाप-अनर्थदण्ड रुक जाता है।
9. रात्रि-भोजन-त्याग होने से स्वयं के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों को भी सायंकालीन सामायिक, प्रतिक्रमण आदि का अवसर प्राप्त हो सकता है।
10. रात्रिभोजन त्याग से भूख-प्यास सहन करने की आदत बनती है। जिससे रात्रिकालीन संवर करने में सुविधा रहती है।
11. रात्रिभोजन त्याग से उपवास आदि करने में अधिक बाधा नहीं आती, जिससे पौषध आदि भी किया जा सकता है।
12. रात्रि-भोजन-त्याग के कारण समय पर भोजन बनने से सायंकाल के समय संत-सतियों को गोचरी बहराने अर्थात् सुपात्रदान का भी लाभ मिल सकता है।

अतः व्रत पालन एवं व्रतों की सुरक्षा के लिए रात्रि भोजन त्याग आवश्यक है।

कैसे करें रात्रि-भोजन-त्याग- रात्रि भोजन के प्रत्याख्यान दो प्रकार के हैं- 1. देशतः और 2. सर्वतः। देशतः रात्रि-भोजन प्रत्याख्यान में अनेक विकल्प होते हैं, जैसे- **1. द्रव्य की अपेक्षा-** चार, तीन या दो प्रकार के आहार का रात्रि में त्याग करना। **2. क्षेत्र की अपेक्षा-** अपने घर, ग्राम या देश में रात्रिभोजन के त्याग, अन्यत्र नहीं। **3. काल की अपेक्षा-** जीवन पर्यन्त, वर्ष, चातुर्मास, मास, पक्ष, पर्युषण या परिमित रात्रियाँ या मात्र अष्टमी, चतुर्दशी पाक्षिक या एक दिन के लिए रात्रिभोजन का त्याग। **4. भाव की अपेक्षा-** मात्र एक करण एक योग से रात्रिभोजन के प्रत्याख्यान। इस प्रकार अनेक रूप से देशतः रात्रिभोजन के प्रत्याख्यान प्रचलित हैं। ये प्रत्याख्यान गृहस्थ यथेच्छ करण एवं योगों से कर सकता है, किन्तु एक करण एक योग से ही प्रत्याख्यान लेने की पद्धति है। क्योंकि गृहस्थ स्वजन परिजनों में रहते हुए प्रत्याख्यान करता है, अतः स्वयं रात्रिभोजन न करे, परन्तु दूसरों को रात्रिभोजन करवाने के प्रसंग आ सकते हैं। व्यापार धंधे में भी और अन्य पारस्परिक संबंधों में भी अन्यजनों को रात्रिभोजन करवाने हेतु तत्पर होना पड़ सकता है, इसलिए परिस्थितिवश ये प्रत्याख्यान एक करण एक योग से लिए जाते हैं। **देशतः रात्रि-भोजन-त्याग भी सर्वतः रात्रि-भोजन-त्याग की भावना से ही करना चाहिये। क्योंकि जीव को आगे-पीछे अनाहारक बनना है। उसकी तैयारी भाव से होना आवश्यक है।**

सर्वतः रात्रिभोजन का त्याग इस प्रकार है- 1. स्वयं (चारों आहारों का) रात्रि में भोजन करे नहीं, 2. दूसरों को रात्रि में भोजन करवाए नहीं, 3. रात्रि में भोजन करने वाले अन्य का अनुमोदन करे नहीं। अशन, पान, खादिम, स्वादिम इन चारों आहारों के 4 x 3 =12 विकल्प हो जाते हैं। इन बारह प्रकार के परिणामों से विरमण करने से रात्रिभोजन त्याग के बारह प्रकार हुए। मन, वचन, काया से जीवन पर्यन्त मैं रात्रि भोजन करूँ नहीं, करवाऊँ नहीं और करने वाले का अनुमोदन करूँ नहीं। इस तरह करण और योगों से गुणित करने पर 4x3x3 =36 भंग हुए। साधक रात्रि भोजन का त्याग इन 36 भंगों से जीवन भर के लिए करता है। इस तरह रात्रिभोजन का जीवन पर्यन्त के लिए त्याग करना सर्वश्रेष्ठ है।

गृहस्थावस्था में रहने के कारण सम्पूर्ण रात्रिभोजन का त्याग विवशता वश नहीं हो पाये, फिर भी अभ्यास करते रहने से, त्याग भावना बढ़ाते रहने से एवं पूज्य संत सतियों की सत्संगति करते रहने से रात्रिभोजन त्याग में उत्तरोत्तर वृद्धि की जा सकती है। भगवान् ने श्रावक-श्राविकाओं (गृहस्थों) के लिए व्रत धारण के अनेक विकल्प (भंग) बताये हैं। यानी परिणामों की विचित्रता से कई विकल्पों से प्रत्याख्यान लिए जा सकते हैं। किन्तु

प्रत्याख्यान लेने वाले को यह समझना चाहिये कि **ये प्रत्याख्यान मेरे आत्म-कल्याण के लिए हैं।** कोई इसमें प्रेरणा देते हैं या प्रसन्न होते हैं तो उनके परिणामों का फल उन्हें ही मिलेगा। वर्तमान में ऐसी परिस्थितियाँ भी बनती हैं- 1. स्वेच्छा से रात्रि-भोजन करना, दूसरे से प्रेरित होकर रात्रि-भोजन करना, 3. कोई अपने को अच्छा समझे इसलिए रात्रिभोजन करना, 4. स्वतः किसी को रात्रिभोजन करवाना, 5. किसी की प्रेरणा से रात्रिभोजन करवाना, 6. किसी को अच्छा लगाने के लिए रात्रिभोजन करवाना, 7. रात्रिभोजन करने वाले का अनुमोदन करना, 8. रात्रिभोजन करवाने वाले का अनुमोदन करना और 9. रात्रिभोजन के अनुमोदन करने वाले को भला समझना। इन विकल्पों को भी त्याग में घटित किया जा सकता है।

जैन कुल में जन्म लेने एवं जैनी नाम धराने के कारण और जैनत्व की पहचान कायम रखने के लिए चाहे किसी भी विकल्प से हो रात्रिभोजन का त्याग अवश्य रखना चाहिये और भावना यही रहनी चाहिये कि **'मैं देशतः रात्रिभोजन-त्यागी से सर्वतः रात्रि-भोजन-त्यागी कब बनूँ? वह दिन मेरा धन्य होगा।'** इस आशय से न केवल स्वयं रात्रि-भोजन के त्यागी बनें, अपितु घर परिवार के सभी सदस्यों को भी प्रेरित कर रात्रिभोजन के त्यागी बनायें। खासकर बच्चों में बचपन से ही रात्रिभोजन त्याग की महिमा बताकर ऐसे संस्कार डालें कि वे रात्रिभोजन को आधुनिकता का प्रतीक समझने की भूल न करते हुए जीवन्त पर्यन्त रात्रिभोजन के त्यागी बने रहें।

न केवल जैनों के लिए, अपितु सुखी और शांत जीवन की इच्छा रखने वाले प्रत्येक भाई बहिन के लिए रात्रि-भोजन का त्याग जरूरी है। श्रद्धेय श्री केवलमुनिजी म.सा. के शब्दों में-

जैन धर्म से, जैन तत्त्व से यदि होवे अनुराग, करिये रात्रि-भोजन त्याग।
रात्रि भोजन त्याग भी तप है, कह गये हैं वीतराग, करिये रात्रि-भोजन त्याग।।

दशवैकालिकसूत्र अध्ययन 6 सूत्र गाथा 23 में प्रभु फरमाते है- **'अहो णिच्चं तवोकम्मं'**। रात्रिभोजन का सर्वथा त्याग करने वाले के नित्य तप है अर्थात् अहोरात्र (दिन रात) के आठ प्रहर (चौबीस घंटे) होते हैं, उसमें से दिवस भक्त के चार प्रहर छोड़कर शेष चार प्रहर का रात्रि भक्त का त्याग होने से उसका आधा समय तपस्या में जाता है। इस प्रकार अहोरात्र में चार प्रहर, 1 मास में पन्द्रह दिन और 1 वर्ष में छह मास का समय तपस्या में ही बीतता है। जो रात्रि-भोजन-त्याग की महत्ता को प्रकट करता है।

अंत में यही निवेदन है कि रात्रि-भोजन से होने वाली जीव हिंसा, कर्मबंध, व्रत भंग, स्वास्थ्य और आर्थिक हानि, नैतिक एवं आध्यात्मिक पतन, मानसिक चंचलता,

सामाजिक विकृति आदि हानियों को एवं रात्रि-भोजन-त्याग के महालाभ को ध्यान में रखते हुए जो भाई बहिन रात्रिभोजी हैं वे सम्पूर्ण रात्रि-भोजन-त्याग करने का प्रयास करें। अन्यों में भी रात्रिभोजन त्याग का प्रचार-प्रसार कर जिनशासन की प्रभावना करें और जैनत्व की साख को कायम रखें।

-7/14, उत्तरी नेहरु नगर, बिठ्ठल बस्ती, ब्यावर-305901 (राज.)

समता का सागर

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

नाचता रहा जीव नाना देह धर कर,
कर लें सीमित भव को
पुण्य से आया सुअवसर,
लक्ष्य हमारे सामने पीछे ना कोई कदम हटे,
हर एक साँस पर आगे ही आगे बढ़ते चलें,
मन की समर भूमि में काम समता से करें,
वेदन की हर गाँठ में काम समता से करें,
वेदन सुखद हो दुःखद हो, अनित्य बोध ही जागे,
भव-भव में बाँधे बंधन, इस भव टूटें धागे,
यथार्थ अनुभूति से हो भटकाव का तर्पण,
निस्सीम शान्ति निज में देखें स्व का दर्पण,
होकर सुख के अधीन मानव पाता है क्षरण,
डूब कर दुःख के दरिया में नहीं बढ़ पाते आगे चरण,
निजोन्नति के लिए हो अब हर एक अप्रमत्त करण,
समता के पद चिह्नों का ही करना है अनुसरण,
बनें समर्थ हम हर परिस्थिति को सहने में,
समता ही समता भर जाए इस अधीर मन में,
धुन लगी रहे ध्यान में विश्वास हो विजय में,
विजयी बन कर रहें हम जीवन के संग्राम में,
जब मनुज मन ध्यान में रम जाए,
अपने भीतर अनन्त शान्ति के शिखर को पाएं,
शान्तिदायिनी हर निशा, हर्षसूचक वासर हो जाए,
धैर्य के सहारे, मौनता संग लक्ष्य को पा जाएँ।।

-मुम्बई (महा.)

52 वें दीक्षा-दिवस पर

अहो गुरुवर!

सौ. छाया मनोहर भण्डारी

अहो गुरुवर! कैसी अनुपम है आपकी वात्सल्यमयी मूरत।
अलौकिक तप-तेज से परिपूर्ण करुणामयी आपकी सूरत।
तरंगें उठ रही हैं, कह रही हैं-
आपके मात्र दर्शन से कितना कुछ पाया है गुरुवर!
इस अज्ञानी पामर जीव पर आपने कृपा बरसायी गुरुवर!
जीवन किसलिए मिला, प्रथम आपने समझाया गुरुवर!
दुनियाँ के रंगबिरंगे मुखौटों की पहचान करायी आपने गुरुवर!
परदोषों को न देख स्वदोष दिखलाये आपने गुरुवर!
प्रतिकूलता में निज को संभालना सिखलाया आपने गुरुवर!
प्रमाद, आलस्य छोड़ चेतन को जगाया आपने गुरुवर!
प्रेम, सेवा, त्याग, समर्पण आप ही की धरोहर है गुरुवर!
समय-समय, क्षण-क्षण का मूल्य ज्ञान कराया आपने गुरुवर!
अशुभ से हटकर आता हुआ प्रत्येक शुभ विचार आपकी देन गुरुवर!
काया से होने वाला प्रत्येक शुभ कार्य आपका उपहार गुरुवर!
कंठ से निकला प्रत्येक स्वर निर्मल स्रोत आप हो गुरुवर!
एकांत में निज में रमण करना आपकी शिक्षा गुरुवर!
प्रतिक्षण आनंद की अनुभूति की प्रेरणा आपकी है गुरुवर!
नश्वर देह से निकला प्रत्येक श्वास आपका उपकार गुरुवर!
लक्ष्य की ओर बढ़ रहे कदम आपका पुरुषार्थ गुरुवर!
कितना कुछ दिया आपने कैसे व्यक्त करें हम गुरुवर!
शब्दों से अतीत हैं आपके उपकार गुरुवर!
बहुत कृपा बरसायी आपने गुरुवर!
दीक्षा-दिवस के अवसर पर कृपा मात्र बरसाओ गुरुवर!
आप जिस लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हो- निश्चित ही मंजिल पाओगे गुरुवर!
पर.......एक अंतिम अर्ज अंतर की पुकार गुरुवर!
उस मंजिल को पाने से पहले-

हमारा हाथ ना छोड़ें गुरुवर!
मैं भी उस मंजिल को पाऊँ-
इतनी शक्ति, साहस, धैर्य, आत्मबल देकर-
कृतार्थ करें मुझे गुरुवर!
साथ ही आत्मविश्वास कह रहा है गुरुवर!
रिक्त हाथ न लौटायेंगे आप हमें गुरुवर!
रोम-रोम भावों की अभिव्यक्ति पूज्यवर!
आप ही की कृपा से, गुरु कृपा से-
परमात्म सम हम बन जायेंगे गुरुवर!

-भंडारी मेडिकल एजेन्सी, 172/7, विसन जी नगर, जलगाँव-425001 (महा.)

रहो सप्त व्यसनों से दूर

सुश्री निधि जैन

जो लोग खेल रहे हैं जुआ।
वे अपने लिये बना रहे हैं नरक का कुआँ।।
यदि तोड़नी है अशुभ कर्मों की डोरी।
तो जीवन में कभी मत करो चोरी।।
जीवों के हैं मनुष्य जैसे लक्षण।
हमें जीवों का करना चाहिए रक्षण।।
नहीं करना चाहिए मांस भक्षण।
यही है मानव के सुलक्षण।।
मदिरा पान करने से बिगड़ती है शान।
इससे घर बन जाता है श्मशान।।
इसलिए हमें नहीं करना चाहिए मदिरापान।
बल्कि करना चाहिए पौष्टिक भोजन-पान।।
यदि शील को बचाना है होने से क्षरण।
तो जीवन में कभी मत करो परस्त्रीगमन-वेश्यागमन।।
जीव जन्तुओं का किया जा रहा है शिकार।
यह नहीं है मानव जीवन का मौलिक अधिकार।।

-सुपुत्री श्री सुमेरचन्द जी जैन, खेरली गंज-321606 (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

क्या हम स्वस्थ रहना चाहते हैं?

डॉ. चंचलमल चोरडिया

'पहला सुख निरोगी काया' जानते, मानते और आवश्यक होते हुए भी आज मानव प्रायः कितना स्वस्थ एवं सुखी है? यह जनसाधारण से छिपा हुआ नहीं है। प्रत्येक मनुष्य जीवन-पर्यन्त स्वस्थ रहना चाहता है, परन्तु चाहने मात्र से तो स्वस्थ नहीं रह सकता है। मृत्यु निश्चित है। जन्म के साथ आयुष्य के रूप में श्वासों का जो खजाना लेकर हम जन्म लेते हैं, वह धीरे-धीरे क्षीण होता जाता है। जीवन के अंतिम क्षणों तक उस संचित प्राण ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित, नियन्त्रित एवं सही संचालित करके तथा उसका सही उपयोग करके ही हम शांत, सुखी एवं स्वस्थ रहकर दीर्घ जीवन जी सकते हैं।

रोग क्या है?

उपचार से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि रोग क्या है, कहाँ, कब और क्यों होता है? उसके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारण तथा सहायक एवं विरोधी तत्त्व क्या हैं? क्या रोगों का मन और आत्मा से सम्बन्ध होता है? शरीर की प्रतीकारात्मक शक्ति क्यों और कैसे कम होती है? उसको बढ़ाने अथवा कम करने वाले तत्त्व कौनसे हैं? वास्तव में प्राकृतिक नियमों के जाने-अनजाने में उल्लंघन अर्थात् असंयमित, अनियमित, अनियन्त्रित, अविवेकपूर्ण, स्वच्छन्द आचरण के द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक क्षमताओं का दुरुपयोग अथवा असंतुलन रोग का कारण होता है। जिसके परिणामस्वरूप शरीर, मन और आत्मा में समन्वय बिगड़ जाता है। शरीर के अंग, उपांग एवं अवयव अपना-अपना कार्य स्वतन्त्रता पूर्वक ठीक से नहीं कर पाते। फलतः शरीर के अवांछित, विजातीय, अनुपयोगी विकारों का बराबर विसर्जन नहीं होता। उनमें अवरोध उत्पन्न होने से पीड़ा, कमजोरी, चेतन-शून्यता, तनाव, बेचैनी आदि की स्थितियाँ शरीर में उत्पन्न होती हैं, ये ही रोग कहलाते हैं।

रोग का प्रारम्भ आत्म-विकारों से

मनुष्य का शरीर अनन्त गुणधर्मी होता है। अतः हमें अनेकान्त दृष्टिकोण से उसको समझना होगा तथा रोग उत्पन्न करने वाले कारणों से बचना होगा। शक्ति की सबसे गहरी एवं प्रथम परत आत्मा पर होती है। पूर्वार्जित कर्मों के अनुसार ही इस जन्म में हमें प्रज्ञा, श्रद्धा, आयुष्य, सुख-दुःख, प्रिय-अप्रिय, अनुकूल-प्रतिकूल, संयोग-वियोग आदि मिलते हैं। हमारी आत्मा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन एवं अनन्त सुख से परिपूर्ण होती है।

परन्तु कर्मों से आच्छादित होने के कारण उनका सही रूप प्रकट नहीं हो पाता। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के अनुसार हमारी प्रज्ञा होती है। दर्शनावरणीय कर्म के प्रभाव से हमें सोचने, समझने, विश्वास करने एवं चिन्तन की सही अथवा गलत दृष्टि मिलती है। वेदनीय कर्म के अनुसार हमें साता-असाता तथा सुख-दुःख की प्राप्ति होती है। आयुष्य कर्मो के आधार पर आयुष्य प्राप्त होता है। मोहनीय कर्म से राग-द्वेष एवं आसक्ति अथवा अनासक्ति के भाव पैदा होते हैं। गोत्र कर्म के अनुसार कुल, परिवार, जाति एवं आस-पास का वातावरण मिलता है। नाम कर्म के अनुरूप पद, प्रतिष्ठा, शरीर की आकृति, अंग, उपांग, अवयव, तंत्रों की शक्तियां एवं अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ की क्षमता मिलती हैं। अन्तराय कर्म का उदय विकास एवं सुखद उपलब्धियों की प्राप्ति में अवरोध उत्पन्न करता है जिसके परिणामस्वरूप सभी अनुकूलताओं के होते हुए भी इच्छित लक्ष्य प्राप्ति में कुछ न कुछ बाधा उपस्थित हो जाती है।

कर्मों की परिणति का प्रभाव हम अपने आसपास के वातावरण में स्पष्ट अनुभव करते हैं। आत्मा पर आये इन कर्मो के आवरणों को मनुष्य जीवन में सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा दूर किया जा सकता है। सारे कर्मो का क्षय होने से मनुष्य नर से नारायण, आत्मा से परमात्मा, भक्त से भगवान् के रूप में सर्वज्ञ, सर्वदर्शी एवं अनन्त सुखी बन जाता है। अपने स्वभाव में स्थित हो जाता है। यही सम्पूर्ण स्वस्थता की स्थिति होती है। यही मानव जीवन का परम लक्ष्य होता है। जो आत्मोत्थान में जितना-जितना विकसित होता है, उतना-उतना ही आत्मबली बनता जाता है। रोगों की जड़ें ही समाप्त हो जाती हैं। उपचार की आवश्यकताएँ कम होती जाती हैं। आत्मा के विकार आत्मज्ञानी के मार्ग निर्देशन में व्यक्ति के सम्यक् पुरुषार्थ एवं सम्यक् आचरण से ही दूर किये जा सकते हैं। अतः हमें स्वस्थ रहने के लिये आत्मा में विकार बढ़ाने वाली प्रवृत्तियों से बचना चाहिये।

रोग में मन की भूमिका

शक्ति एवं रोग की दूसरी परत मन से सम्बन्धित होती है। मन का जितना विकसित स्वरूप मानव जीवन में प्राप्त होता है उतना अन्य किसी प्राणी में नहीं मिलता। मन से ही मनन, चिन्तन, कृति, विकृति, संकल्प, इच्छाओं, एषणाओं, भावनाओं का नियन्त्रण होता हैं। मन बड़ा चंचल है। उसकी स्वछन्द एवं अनियन्त्रित गतिविधियाँ ही अधिकांश रोगों की उत्पत्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मन को संयमित, नियन्त्रित, अनुशासित रखने से अनेक रोगों से सहज ही बचा जा सकता है। आज हम जितना खयाल शारीरिक स्वच्छता, शुद्धता का रखते हैं, बाह्य पर्यावरण एवं प्रदूषण की चिन्ता करते हैं, क्या उतनी चिन्ता मन में उठने वाले क्रोध, घृणा, हिंसा, क्रूरता, तिरस्कार, वासना आदि विचारों के प्रदूषण की करते

हैं? इन आवेगों से ही रोग बढ़ते हैं। मन का नियन्त्रण हमारी स्वयं की सजगता पर निर्भर करता है। इसी कारण एक जैसे रोग की स्थिति में एक व्यक्ति बहुत परेशान एवं बेचैन रहता है- हाय-हाय करता है, जबकि दूसरा तनिक भी विचलित नहीं होता। स्वस्थ चिन्तन, मनन, स्वाध्याय, ध्यान एवं कायोत्सर्ग द्वारा मन को अशुभ से शुभ, अनुपयोगी से उपयोगी प्रवृत्तियों में लगाया जा सकता है। जो स्वस्थ जीवन के लिये अति आवश्यक है।

शारीरिक लक्षणों पर आधारित रोग का निदान अपूर्ण

आत्मा और मन के पश्चात् रोग एवं शक्ति की तीसरी परत होती है- शरीर। रोग का प्रभाव पड़ता है शरीर की आन्तरिक क्रियाओं पर और अन्त में उसके लक्षण बाह्य रूप से भी प्रकट होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जितने रोग अथवा उनके कारण होते हैं उतने हमारे ध्यान में नहीं आते। जितने ध्यान में आते हैं उतने हम अभिव्यक्त नहीं कर सकते। जितने रोगों को अभिव्यक्त कर पाते हैं, वे सारे के सारे चिकित्सक अथवा अति आधुनिक समझी जाने वाली मशीनों की पकड़ में नहीं आते। जितने लक्षण उनकी समझ में स्पष्ट रूप से आते हैं, उन सभी का वे उपचार नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप जो लक्षण स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं, उनके अनुसार आज रोगों का नामकरण किया जा रहा है तथा अधिकांश प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों का ध्येय उन लक्षणों को दूर कर रोगों से राहत पहुँचाने मात्र का होता है। विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सक आज असाध्य एवं संक्रामक रोगों के उपचार के जो बड़े-बडे दावे और विज्ञापन करते हैं, वे कितने भ्रामक एवं अस्थायी होते हैं, जिस पर पूर्वाग्रह छोड़ सम्यक् चिन्तन आवश्यक है। जब निदान ही अधूरा हो तब प्रभावशाली उपचार के दावे छलावा नहीं तो क्या है? अत: उपचार करते समय जो चिकित्सा पद्धतियाँ शारीरिक व्याधियों को मिटाने के साथ-साथ मन एवं आत्मा के विकारों को दूर करती हैं, वे ही उपचार के लिए प्रभावशाली होती हैं, इसमें हमें तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिये। सत्य सनातन होता है। करोड़ों व्यक्तियों के कहने से दो और दो पाँच नहीं हो जाते हैं। दो और दो चार ही होते हैं। अत: जिन्हें स्थायी रूप से रोगमुक्त बनना हो, उन्हें रोग के सभी शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकारों से बचना एवं उत्पन्न होने पर उन्हें दूर करना चाहिये।

स्वास्थ्य हेतु चिकित्सा के विभिन्न दृष्टिकोण

रोग की अवस्था में आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार शरीर में वात, पित्त और कफ का असन्तुलन होने लगता है। आधुनिक चिकित्सक को मल, मूत्र, रक्त आदि के परीक्षणों में रोग के लक्षण और शरीर में रोग के कीटाणुओं अथवा शरीर के तंत्रों में अवरोध दृष्टिगत होने लगते हैं। प्राकृतिक चिकित्सक ऐसी स्थिति से शरीर के निर्माण में सहयोगी पंच

महाभूत तत्त्वों- पृथ्वी, पानी, हवा, अग्नि और आकाश का असन्तुलन अनुभव करते हैं। चीनी एक्यूपंक्चर एवं एक्यूप्रेशर के विशेषज्ञों के अनुसार शरीर में यिन-यांग का असंतुलन हो जाता है। एक्यूप्रेशर के प्रतिवेदन बिन्दुओं की मान्यता वाले थेरेपिष्ट को व्यक्ति की हथेली और पगथली में विजातीय तत्त्वों का जमाव प्रतीत होने लगता है। सुजोक बियोल मेरेडियन सिद्धान्तानुसार रोगी के शरीर में पंच ऊर्जाओं (वायु, गर्मी, ठण्डक, नमी और शुष्कता) का आवश्यक सन्तुलन बिगड़ने लगता है। चुम्बकीय चिकित्सक शरीर में चुम्बकीय ऊर्जा का असन्तुलन अनुभव करते हैं। ज्योतिषशास्त्री ऐसी परिस्थिति का कारण प्रतिकूल ग्रहों का प्रभाव बतलाते हैं। आध्यात्मिकयोगी ऐसी अवस्था का कारण पूर्वार्जित अशुभ असाता वेदनीय कर्मों का उदय मानते हैं। होम्योपैथ और बायोकेमिस्ट की मान्यतानुसार शरीर में आवश्यक रासायनिक तत्त्वों का अनुपात बिगड़ने से ऐसी स्थिति उत्पन्न होने लगती है। आहार-विशेषज्ञ शरीर में पौष्टिक तत्त्वों का अभाव बतलाते हैं। शरीर में अम्ल-क्षार, ताप-ठण्डक का असन्तुलन बढ़ने लगता है। कहने का आशय यही है कि विभिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ अपने-अपने सिद्धान्तों के अनुसार शरीर में इन विकारों की उपस्थिति को रोग अथवा अस्वस्थता का कारण मानते हैं। जो जैसा कारण बतलाता है, उसी के अनुरूप उपचार और परहेज रखने का परामर्श देता है। सभी चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को आंशिक सफलताएँ भी प्राप्त हो रही हैं तथा सफलताओं एवं अच्छे परिणामों के लम्बे-लम्बे दावे सुनने को मिल रहे हैं। विज्ञान के इस युग में किसी पद्धति को बिना सोचे-समझे अवैज्ञानिक मानना न्याय-संगत नहीं कहा जा सकता। फिर भी इतना अवश्य है कि अधिकांश चिकित्सा पद्धतियाँ रोग के मूल कारणों को समझने एवं दूर करने में अपने-आपको असमर्थ पा रही हैं। क्योंकि उनके चिन्तन में समग्रता का अभाव होता है। जिसका जितना ज्यादा विज्ञापन, प्रचार-प्रसार होता है, उस पद्धति का बिना सोचे समझे रोगी और उसके परिजनों की अधीरता एवं अज्ञानवश उपचार हेतु प्राय: अन्धानुकरण हो रहा है। परिणाम स्पष्ट है कि डॉक्टरों और अस्पतालों की संख्या में निरन्तर वृद्धि के बावजूद रोग और रोगियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है, जो स्वास्थ्य के प्रति हमारी अदूरदर्शिता, गलत चिन्तन, अप्राकृतिक जीवनशैली एवं अविवेक का सूचक है।

आज उपचार के नाम पर रोग के कारणों को दूर करने की बजाय अपने-अपने सिद्धान्तों के आधार पर रोग के लक्षण मिटाने का प्रयास हो रहा है। उपचार में समग्र दृष्टिकोण का अभाव होने से तथा रोग का मूल कारण पता लगाये बिना उपचार किया जा रहा है अर्थात् रोग से राहत ही उपचार का लक्ष्य बनता जा रहा है। उपचार एवं निदान करते समय मन के भावों, वाणी की अभिव्यक्ति, मानसिक कारणों तथा आत्मा की प्राय:

पूर्णतया उपेक्षा हो रही है। अत: अच्छा स्वास्थ्य रखने वालों को स्वास्थ्य के मूलभूत सनातन प्राकृतिक साधारण नियमों का ईमानदारी पूर्वक सजगता एवं स्वविवेक से पालन करना चाहिये। जितना-जितना हमारा प्रकृति के साथ तालमेल होगा, उतना-उतना हम स्वस्थता के समीप होते जाएंगे। आकस्मिक दुर्घटनाओं को छोड़ अन्य परिस्थितियों में रोग का सही कारण जानने तथा उपचार की प्रासंगिकता समझने का भी प्रयास करना चाहिये, ताकि रोग की पुनरावृत्ति और उपचार के दुष्प्रभावों से स्वयं को बचाया जा सके।

उपचार हेतु रोगी का दृष्टिकोण

आज चिकित्सा के बारे में असमंजस की स्थिति है। जनसाधारण से ऐसी अपेक्षा भी नहीं की जा सकती है कि वे शरीर, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा पद्धतियों के बारे में विस्तृत जानकारी रखें। अधिकांश रोगियों को न तो रोग के बारे में सही जानकारी होती है और न वे अप्रत्यक्ष रोगों को रोग ही मानते हैं। जब तक रोग के स्पष्ट लक्षण प्रकट न हों, रोग सहनशक्ति से बाहर नहीं आ जाता, रोग की तरफ उनका ध्यान ही नहीं जाता। रोगी का एक मात्र उद्देश्य येन-केन-प्रकारेण उत्पन्न लक्षणों को हटा अथवा दबा शीघ्रातिशीघ्र राहत पाना होता है। जैसे ही उसे आराम मिलता है, वह अपने आपको स्वस्थ समझने लग जाता है। प्राय: रोगी रोग का कारण स्वयं को नहीं मानता और न अधिकांश चिकित्सक उपचार में रोगी की सजगता और पूर्ण भागीदारी की आवश्यकता ही समझते हैं। विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों की प्रभावशालिता के भ्रामक विज्ञापन एवं डॉक्टरों के पास रोगियों की पड़ने वाली भीड़ के आधार पर ही रोगी उपचार हेतु चिकित्सक को अपना आत्म समर्पण कर देता है।। डॉक्टर पर उसका इतना अधिक विश्वास हो जाता है कि रोग का सही कारण अथवा निदान की सत्यता मालूम किये बिना उपचार प्रारम्भ करवा शीघ्रातिशीघ्र राहत पाना चाहता है। रोगी चिकित्सक के द्वारा बताये पथ्य एवं परहेज और मार्गदर्शन का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन भी करता है। परन्तु शरीर, मन और आत्मा पर उपचार से पड़ने वाले सूक्ष्मतम परिवर्तनों एवं दुष्प्रभावों से उपेक्षित रहने के कारण कभी-कभी उपचार के बावजूद स्वस्थ नहीं हो पाता और कभी-कभी तो दवा उसके जीवन का आवश्यक अंग बन जाती है।

रोग के विभिन्न प्रभाव एवं लक्षण

रोग स्वयं की गलतियों से उत्पन्न होता है। अत: उपचार में स्वयं की सजगता और सम्यक् पुरुषार्थ आवश्यक है। जब तक व्यक्ति रोग के कारणों से नहीं बचेगा, उसकी गम्भीरता को नहीं स्वीकारेगा तब तक पूर्ण स्वस्थ कैसे हो सकेगा? रोग प्रकट होने से पूर्व कई बार अलग-अलग ढंग से चेतावनी देता है। परन्तु रोगी उस तरफ ध्यान ही नहीं देता। इसी कारण उपचार एवं परहेज़ के बावजूद चिकित्सा लम्बी, अस्थायी दुष्प्रभावों वाली हो

तो भी आश्चर्य नहीं। अत: रोग होने की स्थिति में रोगी को स्वयं से पूछना चाहिये उसको रोग क्यों हुआ? रोग कैसे हुआ और कब ध्यान में आया? रोग से उसकी विभिन्न शारीरिक प्रक्रियाओं तथा स्वभाव में क्या परिवर्तन हो रहे हैं? इस बात की जितनी सूक्ष्म जानकारी रोगी को हो सकती है, उतनी अन्य को नहीं? उसके मल के रंग, बनावट एवं गन्ध में तो परिवर्तन नहीं हुआ? कब्ज़ी, दस्त या गैस की शिकायत तो नहीं रही है? पेशाब की मात्रा एवं रंग और स्वाद में तो बदलाव नहीं हुआ? भूख में परिवर्तन, प्यास ज्यादा या कम लगना, अनिद्रा या निद्रा और आलस्य ज्यादा आना, पाँच इन्द्रियों के विषयों यथा रंग, स्वाद, स्पर्श, वाणी एवं गंध को ग्रहण करने की क्षमताओं में तो कमी नहीं आयी? श्वसन में कोई अवरोध तो नहीं हो रहा है? स्वभाव में चिड़चिड़ापन, निराशा, क्रोध, भय, अधीरता, घृणा, क्रूरता, तनाव, अशान्ति तो नहीं बढ़ रही है? आलस्य एवं थकान की स्थिति तो नहीं बन रही है? दर्द कब, कहाँ और कितना होता है? मन में संकल्प-विकल्प कैसे आ रहे हैं? ये सारे रोग के लक्षण होते हैं। जिनकी सूक्ष्मतम जानकारी रोगी की सजगता से ही प्राप्त हो सकती है तथा इन सभी लक्षणों में जितना-जितना सुधार और संतुलन होता है उतना ही उपचार स्थायी और प्रभावशाली होता है। मात्र रोग के बाह्य लक्षणों के दूर होने अथवा पीड़ा और कमजोरी से राहत पाकर अपने आपको स्वस्थ मानने वालों के पूर्ण उपचार न होने से नये-नये रोगों के लक्षण प्रकट होने की संभावना बनी रहती हैं। रोगी ही जान सकता है कि उसका कौनसा अंग कब सर्वाधिक सक्रिय रहता है? अत: जब तक रोगी सजग नहीं होगा, रोग एवं उपचार से पड़ने वाले अच्छे अथवा बुरे परिणामों से परिचित नहीं होगा तब वह हानिकारक प्रभावों से कैसे बचेगा? अत: उपचार में रोगी की सजगता परमावश्यक होती है। नेता को हटाने के लिये जिस प्रकार उसके सहयोगियों को अलग करना आवश्यक होता है, ठीक उसी प्रकार मुख्य रोग से छुटकारा पाने के लिये अप्रत्यक्ष सहायक रोगों की उपेक्षा से स्थायी समाधान कठिन होता है।

स्वास्थ्य के प्रति सरकारी उपेक्षा

आज हमारे स्वास्थ्य पर चारों ओर से आक्रमण हो रहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय की नीतियों में रोग के मूल कारण गौण हैं। भ्रामक विज्ञापनों तथा स्वास्थ्य के लिये हानिकारक प्रदूषण, पर्यावरण, दुर्व्यसनों एवं दुष्प्रवृत्तियों पर कानूनी प्रतिबन्ध नहीं है। उल्टी वे सरकारी संरक्षण में पनप रही हैं। आज राष्ट्रीयता, नैतिकता, स्वास्थ्य के प्रति सजगता थोथे नारों और अन्धानुकरण तक सीमित हो रही है। परिणामस्वरूप जो नहीं खिलाना चाहिये वह भी खिलाया जा रहा है। जो नहीं पिलाना चाहिये उसे भी सरकार पैसे के लोभ में पिला रही हैं। जो काम-वासना, क्रूरता, हिंसा आदि के दृश्यों को सार्वजनिक रूप से नहीं दिखाया जाना

चाहिये, मनोरंजन के नाम से उसे भी दिखाया जा रहा है। जो नहीं पढ़ाना चाहिये वह भी पढ़ाया जा रहा है और समाज एवं राष्ट्र के लिये घातक , हिंसक गतिविधियाँ हैं, वे प्रोत्साहित की जा रही हैं। आज रक्षक ही भक्षक हो रहे हैं। खाने में मिलावट आम बात हो गई हैं। सारा वातावरण पाश्विक वृत्तियों से दूषित हो रहा है। सरकारीतन्त्र को सच्चाई जानने, समझने एवं उसकी क्रियान्विति में कोई रुचि नहीं है। सारे सोच का आधार है भीड़, संख्या बल। क्योंकि जनतन्त्र में उसी के आधार पर नेताओं का चुनाव और नीतियाँ निर्धारित होती हैं। फलतः उनके माध्यम से राष्ट्र विरोधी, जनसाधारण के लिये अनुपयोगी, स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाली कोई भी गतिविधि स्वार्थवश आराम से चलायी जा सकती है।

उपचार हेतु रोगी की सजगता एवं सम्यक् पुरुषार्थ आवश्यक

ऐसी परिस्थितियों में हमें अपने स्वास्थ्य का खयाल स्वयं को ही रखना होगा। अपनी क्षमताओं को समझ उनका सदुपयोग कर डॉक्टरों की पराधीनता को छोड़ना होगा। सर्वप्रथम रोग के कारणों से बचना होगा। कोई भी रोग एक दिन में प्रकट नहीं हो जाता। स्वास्थ्य कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसे बाजार से खरीदा जा सके, उधार लिया जा सके अथवा चुराया जा सके। क्या हमारा श्वास कोई दूसरा ले सकता है, खाना अन्य कोई पचा सकता है, हमारी प्यास दूसरों के पानी पीने से शान्त हो सकती है? हमारी निद्रा अन्य कोई ले सकता है? शरीर से निकलने वाले मल-मूत्र आदि अवांछित तत्त्वों का विसर्जन दूसरा कर सकता है? हमारा रक्त, मांसपेशियाँ, कोशिकाएँ, हड्डियाँ जैसी प्रतिक्षण बनने वाली वस्तुओं को भी शरीर स्वयं ही बनाता है। शरीर हृदय, फेफड़े, गुर्दे, लीवर, पाँचों इन्द्रियों का निर्माण जब स्वयं कर सकता है तब क्या उसे स्वस्थ नहीं रख सकता? मानव जीवन अमूल्य है। अतः अज्ञानवश उसके साथ छेड़छाड़ न हो। वर्तमान की उपेक्षा भविष्य की समस्या न बने, इस हेतु हमें अपने प्रति सजग, विवेकशील और ईमानदार बनना होगा। जो स्वयं लापरवाह है, बेखबर है उसकी चिन्ता दूसरा कैसे कर सकता है? आज अधिकांश चिकित्सकों का दृष्टिकोण पूर्वाग्रहों से परिपूर्ण है। अहम् से ओतप्रोत है, दुष्प्रभावों के प्रति असजग हैं। उपचार में साधन, साध्य एवं सामग्री की पवित्रता संदिग्ध है। उपचार में आत्मा और मन के विकार पूर्ण रूप से उपेक्षित हैं। अर्थात् उपचार की प्राथमिकताएँ ही गलत हैं। निदान अपूर्ण होता है तब सही उपचार, पूर्ण स्वास्थ्य के प्राप्ति की आशा, मिथ्या कल्पना नहीं तो क्या? स्थायी उपचार तो अपने आपको स्वावलम्बी बनाने वाली, सभी काल में, सभी के लिये, सभी स्थानों पर उपलब्ध प्रभावशाली, स्वावलम्बी, अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों से ही संभव हो सकेगा। क्योंकि वे हिंसा पर नहीं अहिंसा पर, विषमता पर नहीं समता पर, साधनों पर नहीं साधना पर आधारित होती हैं, जिसमें शरीर, मन एवं आत्मा के

विकारों को दूर करने की क्षमता होती है। परन्तु उसके लिये रोगी की सजगता, सम्यक् पुरुषार्थ और उसके अनुरूप आचरण आवश्यक होता है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 नवम्बर 2014** तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्न:-

1. रोगों से स्वयं को कैसे बचा सकते हैं?
2. आत्मा की उपेक्षा करने वाला उपचार प्रभावशाली क्यों नहीं हो सकता।
3. सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति कौनसी और क्यों?
4. क्या शारीरिक लक्षणों पर आधारित उपचार सदैव सही हो सकता है?
5. स्वास्थ्य हेतु चिकित्सकों पर अंधविश्वास कितना उचित है?
6. स्वास्थ्य हेतु रोगी की सजगता क्यों आवश्यक है?
7. स्वास्थ्य मंत्रालय से आपकी क्या अपेक्षाएँ हैं?

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2014 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत '**अच्छी चिकित्सा पद्धति कौनसी**' के प्रश्नों के उत्तर 22 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	नाम	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती विद्या संघवी-बदनावर, धार(म.प्र.)	(69.5/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्रीमती प्रीति पीपाड़ा-विजयनगर (राज.)	(67.5/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्रीमती रेखा जसवंत नंगावत-मैसूर (कर्नाटक)	(67/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

कविता

मोबाइल नहीं, मुसीबत है.....

एक प्रश्न हम पूछते आपसे, क्या आपने कभी किया है ऐसा फील?
नुकसान इतने मोबाइल से जिन्हें गिनना भी है बहुत मुश्किल।
गुलाम बन गया मोबाइल का मानव, कहता है इससे बड़ी सुविधा,
कैसे रहना मोबाइल बिना, अब तो यही है सबसे बड़ी दुविधा।
मोबाइल के जमाने में चला झूठ का ऐसा दौर है,
हम रहते कहीं ओर हैं, पर बताते कहीं ओर हैं।
मोबाइल के नाम पर देखो बच्चे चल रहे गलत राह हैं,
उनको मोबाइल देकर आप उनका भविष्य कर रहे तबाह हैं।
मोबाइल की दुनिया में खोकर बच्चा कैसे सुधर पायेगा?
मैसेज़ होते उनके ऐसे जिन्हें पढ़कर सिर शर्म से झुक जायेगा।
मोबाइल लेकर बच्चे जाते एकान्त में, करते आपसे दूरी हैं,
क्यों नहीं करते बात आपके सामने, पूछो क्या मजबूरी है?
माता-पिता को गुमराह करते वे, उनको आदतें लगती बुरी है,
आधा बरबाद किया टी.वी. ने हमें, मोबाइल ने कर दी कसर पूरी है।
मोबाइल में डूबे जैनी बच्चे, देखो समय कैसे गँवाते हैं,
मुँहपत्ती नहीं बाँधना आता, लेकिन मोबाइल पर सारे गेम सीख जाते हैं।
क्या नहीं है मोबाइल में, व्हॉट्सअप, फेसबुक, इंटरनेट,
जबसे डूबे बच्चे इनमें, बंद हुए संस्कारों के गेट।
मोबाइल में गाने लगाकर वे खुश होते, जैसे कोई फूल खिले,
कैसे सुनें वे बात आपकी, गानों से तो फुरसत मिले।
मोबाइल ने करवाये एक्सीडेंट कितने, पर हम कहाँ सबक इससे लेते हैं,
गाड़ी चलाते मोबाइल पर बतियाते हम यमराज को निमंत्रण देते हैं।
आज जीवन में मोबाइल का स्थान खास है, वह रहता हरदम दिल के पास है,
बनता हार्ट अटैक का वह कारण, क्या इसका आपको एहसास है?

ज्यादा बात करो मोबाइल पर तो परदे कान के फटते हैं,
और किडनी खराब हो तो क्या कहना, दिन ज़िंदगी के घटते हैं।
मोबाइल ने कितनों की ज़िंदगी में कयामत बुरी बरसाई है,
मोबाइल ऑन करते ही हुआ विस्फोट, ऐसी खबरें भी आई हैं।
कारण जो भी हो, जब भी हम हाथों में लेते हैं मोबाइल,
बस उसी पल हमारे पापों की बन जाती है एक नयी फाइल।
विवेक पर यह पर्दा कैसा, स्थानक में भी आप लाते मोबाइल संग हैं,
चलते प्रवचन में बजता वह करता सबका ध्यान भंग है।
अंतराय कर्म बंधते आपके जैसे ही बँटता है सबका ध्यान,
धर्मसभा में मोबाइल नहीं लाना है, सभी कर लें यह पच्चक्खाण।
पाँच अभिगम का पालन करने का सोचो, क्या हम करते दिल से प्रयास हैं,
संतों के चरण स्पर्श नहीं कर सकते हम, यदि मोबाइल हमारे पास है।
आहार बहराने का दुर्लभ अवसर आता, जब फूल भाग्य का खिलता है,
मोबाइल के कारण गँवा देते हम यह मौका, जो पुण्यवानी से मिलता है।
गोचरी या विहार में भी संतों को इस बात पर ध्यान देना पड़ता है,
मोबाइल वालों से संघट्ठा हो तो उन्हें प्रायश्चित्त लेना पड़ता है।
जब घूमते-घूमते मोबाइल पर बातें करने में आप व्यस्त रहते हैं,
कितने ही जीव पैरों के नीचे मरते, कितने ही असह्य पीड़ा सहते हैं।
मोबाइल की तरंग होती घातक, इससे पशु-पक्षी मर जाते हैं,
अपनी सुविधा के नाम पर देखो, हम उनके लिए मौत लेकर आते हैं।
एक बटन मोबाइल की दबता और जीव असंख्य मर जाते बिचारे,
मोबाइल को स्पर्श करते समय क्यों नहीं काँपते हाथ हमारे?
मुश्किल होती बिन मोबाइल के, हम छोड़ दें इस बहाने को,
जब चल जाता था बिन मोबाइल के, हम याद करें उस जमाने को।
कहीं जाना हो हमें तो घरवाले भी मोबाइल रखने की याद दिलाते हैं,
उससे अधिक तिविहार/चौविहार का पच्चक्खाण जरूरी, वे भी यह भूल जाते हैं,
मोबाइल पर बात करने से आत्मा पर लगते कर्मों के दाग,
कम से कम सप्ताह में एक दिन तो करिये इसका पूरा त्याग।

-संकलयिता : राजीव नेपालिया, जोधपुर (राज.)

युवक परिषद्

आओ स्वाध्याय करें

श्री ज्ञाताधर्मकथांग की बात

आगम अध्ययन की यह शुरुआत

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में ''आओ स्वाध्याय करें'' शीर्षक के अन्तर्गत ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र विषयक ''द्विमासिक आगम-प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता'' का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता का स्वरूप इस प्रकार है-

1. इस प्रतियोगिता का आयोजन पाँच संभागों के आधार पर किया जाएगा- 1. पल्लीवाल क्षेत्र, दिल्ली, पंजाब क्षेत्र, 2. मारवाड़, गुजरात क्षेत्र, 3. जयपुर, पोरवाल क्षेत्र, मध्यप्रदेश क्षेत्र, 4. कर्नाटक, तमिलनाडु क्षेत्र, 5. महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र।
2. प्रत्येक संभाग में 15-45 वर्ष तक एवं 45 वर्ष से अधिक के दो आयु वर्ग के ग्रुप बनेंगे, जिसमें प्रत्येक ग्रुप में विजेता को प्रथम- 1100/- रुपये, द्वितीय- 500/-रुपये, तृतीय- 250/- रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।
3. इस प्रतियोगिता में पाँच व्यक्तियों तक के ग्रुप द्वारा भी उत्तर प्रेषित किए जा सकते हैं, बशर्ते वह ग्रुप सप्ताह में दो बार स्थानक में साथ-साथ सामायिक करता हो। इस प्रकार के ग्रुप में एक भी व्यक्ति के 45 वर्ष से अधिक होने पर ग्रुप को 45 वर्ष से अधिक आयु ग्रुप में शामिल किया जाएगा।

आशा है आप इसमें पूर्ण उत्साह से भाग लेंगे। प्रस्तुत प्रतियोगिता के प्रश्न 6,7 द्वितीय श्रुतस्कंध से संबंधित हैं, शेष सभी प्रश्न प्रथम श्रुतस्कंध के अध्ययन 1-10 तक से दिए गए हैं। उत्तर-पत्रक प्राप्त होने की अंतिम तिथि 05 दिसम्बर 2014 है।

उत्तर भेजने का स्थान- श्री अनिल जी, कार्यालय प्रभारी, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, वर्द्धमान अस्पताल के पीछे, जोधपुर-342001 (राज.) मोबाइल नं. 094141-40373

प्रश्न समाधान हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री राजीव जी नाहर, सूरत-093751-65765

विशेष- Whatsapp पर भी युवक-परिषद् के सदस्यों द्वारा जिज्ञासा-समाधान का कार्य किया जा रहा है।

(अ) प्रश्नों का उत्तर संख्या में दीजिए-

1. मेरुप्रभ हाथी ने कितने अहोरात्रि तक पैर को हवा में ही रखा?
2. थावच्चापुत्र ने कितने जनों के साथ दीक्षा ली?

3. मेरुप्रभ हाथी की कुल आयु कितने वर्ष की थी?
4. मिट्टी के आठ लेप कितनी कर्मप्रकृतियों के सूचक हैं?
5. श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध में कुल कितने अध्ययन हैं?
6. श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र के कुल कितने वर्ग द्वितीय श्रुतस्कंध में बताए गए हैं?
7. श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कंध में कुल अध्ययन कितने हैं?
8. धन्य सार्थवाह ने चावल के दाने कितने वर्ष पश्चात् माँगे?
9. मल्ली भगवती के कितने प्रगाढ़ साथी थे? (पूर्व भव के)
10. मल्ली भगवती का कुल आयुष्य कितने वर्ष का था?

(ब) प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में दीजिए-

11. जिनदत्तपुत्र और सागरदत्तपुत्र ने किसके अण्डों का पालन किया?
12. दावानल से बचने हेतु हाथियों द्वारा किसकी रचना की गई?
13. प्रथम श्रुतस्कंध के चतुर्थ अध्ययन का क्या नाम है?
14. मेघकुमार की माता का नाम क्या है?
15. मल्ली भगवती के पूर्व भव का क्या नाम था, जिसमें स्त्रीनामकर्म का बंध हुआ?
16. धन्य सार्थवाह के पुत्र देवदत्त की हत्या किसने की?
17. 'कं तारयामि, कं पालयामि' की घोषणा किसके द्वारा की जाती थी?
18. राजा शैलक ने कौनसे अणगार के पास दीक्षा ली?
19. धन्य सार्थवाह ने घर का कोषाध्यक्ष किसे नियुक्त किया?
20. साधु को किसके समान अपने गुणों का विकास करना चाहिए?
21. मेघमुनि ने प्रमुखतः कौनसे तप का आराधन किया?
22. मेघकुमार के अलावा राजा श्रेणिक के अन्य पुत्र का नाम, जो कथा में आया हो?
23. दसवें अध्ययन के अनुसार चन्द्र को भगवान महावीर ने कौनसे नगर में उद्घोषित किया?
24. मुनि शैलक को किसका व्यसन था?
25. थावच्चापुत्र की परीक्षा लेकर दीक्षा की उद्घोषणा किसने करवाई?
26. देवदत्त के पिता धन्य सार्थवाह आयुष्य पूर्ण कर कौनसे देवलोक में उत्पन्न हुए?
27. भगवती मल्ली के निर्वाण के पर्वत का नाम? (पर्वत-शैल)
28. रत्नदेवी को किसकी सफाई हेतु नियुक्त किया गया?

29. भगवती मल्ली का जन्म कौनसी नगरी में हुआ?

30. कछुओं के शिकार का प्रयास किस जीव द्वारा किया गया?

(स) प्रश्न दो– उत्तर एक– पहिचानिए क्या?

31. घड़े का एक पर्यायवाची, मल्ली भगवती के एक रिश्तेदार?

32. बादल का एक पर्यायवाची, 'उत्क्षिप्तज्ञात' अध्ययन का एक पात्र?

33. द्वितीय अध्ययन एवं सप्तम अध्ययन का एक पात्र? (प्रथम श्रुतस्कंध)

34. काले रंग का सूचक, वासुदेव का नाम?

35. एक नक्षत्र का नाम, धनरक्षित की एक रिश्तेदार?

36. चतुर्थ अध्ययन एवं आठवें अध्ययन में वर्णित एक नगरी?

37. भ. महावीर का एक श्रावक, भ. अरिष्टनेमि के शासन का एक श्रावक?

38. तीसरे एवं नवम अध्ययन की कोई भी एक समानता?

39. चन्द्रमा की सर्वाधिक रोशनी से मैं हूँ परन्तु कृष्णपक्ष से गायब हूँ?

40. मेघकुमार और थावच्चापुत्र के दीक्षादाता में एक समानता?

(द) शिक्षाओं की भरमार है– ऐसा प्रतिकथा उपसंहार है।
सीखना इन प्रश्नों के हल से, ये उद्देश्यपूर्ण विचार हैं।।

41. साधु द्वारा पूर्णता की प्राप्ति की किस तिथि के चन्द्रमा से तुलना करते हैं?

42. कितने तरह के पापों के त्याग से जीव शीघ्र लघुत्व को प्राप्त करता है?

43. श्रमण किसमें वृद्धि से बहुजनों का प्रशंसापात्र बनता है?

44. जिनरक्षित की तरह श्रमणों को किसकी अभिलाषा नहीं करनी चाहिए?

45. निर्ग्रंथ मुनि को आसक्तिग्रस्त होकर किसका पोषण नहीं करना चाहिए?

46. किसका गोपन करने पर श्रमण का संसार सागर पार होता है?

47. श्रमण को निर्ग्रंथ प्रवचन में शंका एवं कांक्षा के अलावा किससे रहित होना चाहिए?

48. महाबल मुनि के किस दुर्गुण के कारण स्त्री वेद का बंध हुआ, जो श्रमण को भी नहीं करना चाहिए?

49. मेघमुनि की तरह सभी श्रमणों को अपने शरीर के दो नेत्रों को छोड़ सम्पूर्ण शरीर को अन्य श्रमणों की ....में लगाना चाहिए। उपयुक्त शब्द चुनिए? (कथानुसार)

50. पंथक मुनि के किस प्रतिक्रमण में कृत क्षमायाचना के पश्चात् शैलक मुनि की आत्मा जागृत हुई?

शिविर-अनुभव

वीतराग ध्यान साधना शिविर : अनमोल खजाना

श्री प्रमोदचन्द महनोत

सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में 1 सितम्बर 2014 से 11 सितम्बर 2014 तक आयोजित वीतराग ध्यान-साधना शिविर में मुझे सम्मलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं अपने अनुभव प्रस्तुत कर रहा हूँ।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनिजी म.सा. द्वारा 'वीतराग ध्यान'' हेतु प्रतिदिन दिशा-निर्देश दिये गए तथा सैद्धांतिक प्रवचन हुए, जो अपने आप में अनुपम थे। शिविर की प्रमुख विशेषताएँ रहीं-

1. दस दिवस तक मौन का अनुभव।
2. एकान्त व स्वानुशासन में रहना।
3. मिर्ची रहित सात्त्विक भोजन : प्रसिद्ध वैद्य श्री सुशीलकुमारजी के परामर्शानुसार।
4. साधना के दौरान सांसारिक पाप कर्मों से निवृत्ति हुई एवं त्रस-जीवों की विराधना से बचाव हुआ।
5. शिविर में शील की अनुपालना।
6. 100 सामायिक करने की उपलब्धि।
7. शान्त व्यक्तित्व की आधार-शिला, नये विकारों का आना बन्द होना, पुराने विकार क्षीण होना। इसमें साधक के दोष गलते हैं व रोग निकलते हैं।
8. अपरिचित साधकों के साथ शांतिपूर्ण रहने की सुखद कला।
9. मेरु दण्ड की स्थिरता-प्राप्ति एवं जटिल कमर दर्द से मुक्ति।
10. संचित विकारों को निकालने का मार्ग प्रशस्त।
11. राग-द्वेष छोड़ने की प्रवृत्ति की सीख।
12. मन को शांत व स्थिर रखने की कला-प्राप्ति, ताकि मन विषय-कषाय में न फँसे और मस्तिष्क को रचनात्मक सहयोग करे।
13. आत्मा व शरीर दोनों भिन्न हैं, भेदज्ञान का यह बोध।
14. मैं आत्मा हूँ जो नित्य है व अविनाशी है तथा शरीर अनित्य है एवं विनाशशील है,

का बोध।

15. कामना की प्रवृत्ति कर्म बंधन का कारण है।
16. हम यतनापूर्वक कार्य करें, प्रमाद रहित रहें।
17. अनित्य (नश्वर) वस्तुओं का मोह टालें।
18. शांत मन, सजग मन, समता भरे मन से प्रतिदिन साधना करें।
19. फोन, मोबाइल व बाहरी सम्पर्क से दूर रहना एवं रोजमर्रा के तनाव से विमुक्ति।
20. शरीर व आत्मा के आपसी सम्बन्ध का बोध।
21. संसार के सभी जीवों के प्रति मैत्रीभाव प्रसारित करना।
22. आज की सच्चाई को स्वीकार करें। भूतकाल की स्मृतियाँ व भविष्य के चिन्तन का बोध ही हमारे वर्तमान को बिगाड़ता है।
23. मन की गति को रोकना व वर्तमान पर मन को टिकाना, यह संभव है और वीतराग ध्यान इसमें सहायक है।
24. आस्रवों को रोकने की प्रक्रिया से साक्षात्कार।

वीतराग ध्यान विशुद्ध आगमों में वर्णित ध्यान है जो करीब-करीब लुप्त हो गया था, श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा द्वारा पुस्तक के रूप में इसे लिपिबद्ध किया गया है। बिना किसी पूर्वाग्रह के, अन्य अनेक ध्यान-साधनाओं का वर्षों तक अनुभव करने के पश्चात् उनके द्वारा ध्यान का जो स्वरूप दिया गया है वह अतुलनीय है। विद्वान लोढ़ा साहब से अनेक बार चर्चा का मौका मिला और समस्याओं का संतुष्टिपूर्ण समाधान प्राप्त हुआ। शिविर मैत्री संदेश के साथ सम्पन्न हुआ।

-अध्यक्ष, स्थानकवासी जैन सोसायटी, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

श्री सुनित कुमार जैन

सितम्बर, 2014 की 'जिनवाणी' में प्रकाशित आदरणीय संपादक महोदय डॉ. धर्मचन्द जी जैन लिखित आलेख 'भगवान महावीर की समाधान शैली' बेहद प्रासंगिक रहा। प्रभु महावीर के सिद्धांतों को अपनाया जाये तो हमारी व्यक्तिगत और वैश्विक समस्याएँ समाप्त हो सकती हैं। साहित्यकार डॉ. दिलीप जी धींग की रचना 'प्रेम-गीत' हृदयस्पर्शी रही। 'जिनवाणी' प्रति पल उन्नति की राहों पर अग्रसर होती रहे।

-अलीगढ़, टोंक (राज.)

बाल-स्तम्भ

बचें हम बारूद पटाखों से

श्रीमती कमला सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 नवम्बर 2014 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

देखो बारुद की औकात
हावी हो, करे बरबाद
तारे चमकते, धमाके लुभाते
रंग-रंगीली रोशनी करते।
हमें मुग्ध-आकर्षित करते
दुनिया पर रंग चढ़ाते।
इसकी चिनगारियाँ आग जलाती
फेक्ट्रियाँ, दुकानें धूँ-धूँ करती
बच्चों के हाथ-पाँव जलाती
मासूमों की जान ले लेती।
डरो-डरो! बचो-बचो!! इससे
कोसों दूर रहो इससे।

राहुल ने अभिनव से कहा- "मित्र, दीपावली की छुट्टियाँ आ रही हैं, खूब मस्ती करेंगे।"

अभिनव ने कहा- "पहले गृह-कार्य कर लेते हैं, बाद में क्रिकेट खेलेंगे।

राहुल ने कहा- "दोस्त! मुझे ढेर सारा गृह-कार्य दिया है, कार्य पूरा ही नहीं होगा और छुट्टियाँ ऐसे ही बीत जायेंगी। इन छुट्टियों में पापाजी मुझे दीपावली के दिन पहनने के लिए

नई ड्रेस दिलायेंगें और 5000/- रुपयों के बम-पटाखे दिलायेंगे। मैं खूब आतिशबाजी करुँगा।

अभिनव आँखें-फाड़े रह गया और कहने लगा, पाँच हजार का बारूद छोड़ेगा? भाई मैं तो एक पैसे का बारूद नहीं खरीदूँगा। बारूद छोड़ने से अनेक जीवों की हिंसा होती है। मैं ऐसा काम नहीं करुँगा।

राहुल- जीवों की हत्या हो तो हो। वर्ष भर में दीपावली ही तो एक ऐसा त्यौहार है जिस पर बम-पटाखे छोड़े जाते हैं। मेरे से ऐसा कदापि न होगा कि मैं बम-पटाखे न छोडूँ। मैं तो चाहता हूँ कि तू भी मेरे घर आ जाना, साथ-साथ आनन्द लेंगे।

अभिनव- सुन! मैं तुझे एक सच्ची घटना सुनाता हूँ। मैं भी दीपावली पर खूब पटाखे छोड़ा करता था। कुछ वर्षों पहले की बात है। मेरे घर पर एक कुत्ता आया करता था। मेरी माताजी दूध में रोटी चूरकर उसे खिलाया करती थी। वह कुत्ता हमारे घर के इर्द-गिर्द घूमा करता था, ऐसा लगता था कि वह घर की रखवाली करता है। दीपावली के दिन मैंने बम-पटाखे छोड़े, तो कुत्ता इतना डरा कि दुःखी होकर एक कोने में दुबक कर जा बैठा। दो दिन तक वह टस से मस नहीं हुआ। माँ उसका भोजन बनाकर लाई और खिलाने के लिए प्रयत्न किए गए। उसे पुचकारा-सहलाया, गरजें की, पर वह तो सहमा हुआ बैठा रहा। मैं उसे बहुत अधिक प्यार करता था। वह हृष्ट-पुष्ट और सुडौल था। मैं उसे शेरू कहकर बुलाता था। मैंने भी उसे बहुत मनाया फिर भी वह भूखा-प्यास चुप बैठा था। मैंने उसकी आँखों के भाव एवं भाषा पढ़ी, जिससे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह घबराया हुआ और अत्यधिक डरा हुआ है। मानो कह रहा हो तुम बम-पटाखे मत छोड़ो। वह आहार-निहार के बिना निढ़ाल हो रहा था। उसे इस दशा में देख मेरा दिल दया से भर आया। मुझे अपने पर बहुत ग्लानि हुई। मेरे कारण इसकी यह दशा हुई। उसी समय मैंने संकल्प किया कि मैं कभी आतिश-बाजी नहीं करूँगा।

कुछ समय पश्चात् एक घटना और घटी। हमारे पड़ौसी भैया की शादी थी। मैं उनकी बारात में गया। रास्ते में सड़क पर नाच हुए, ढ़ोल-ढ़माके बजे और बम-पटाखे की वर्षा होने लगी। तरह-तरह के चमचमाते बारूद छोड़े गए। वहीं पर एक घना छायादार पेड़ था। उस पर अनेक पक्षी बैठे थे। पक्षी बम के धमाके और अधिक चमक सहन न कर सके। बेचारे पक्षी अपना बसेरा छोड़ फड़फड़ाने लगे। उनकी आँखे चौंधिया गईं। धमाके के भय से वे बेहाल हो गए। एक के बाद एक बम छूट रहे थे। बाराती आतिशबाजी में मग्न थे, लेकिन मेरी आँखें और मन उनकी गतिविधियों पर टिका हुआ था। इतने अधिक शोर-शराबे में भी उनकी चीं-चीं और फड़फड़ाने की आवाज जोरों से आ रही थी। वे सब हतप्रभ हो गए। वे कहाँ जाएँ और कहाँ बैठें? उन पक्षियों को देखकर मुझे बड़ा तरस आया। मेरे मन में विचार

आया हम शौक-मस्ती में भोले-मूक प्राणियों को कितना कष्ट पहुँचा देते हैं। अरे! इस धरा पर तो सभी प्राणियों का समान अधिकार है, केवल अन्तर इतना ही है कि हम बुद्धिजीवी हैं और वे मूक।

अभिनव ने अपने अनुभव की घटनाएँ सुनाई, किन्तु राहुल पर तो जूँ तक न रेंगी।

दीपावली की रात को राहुल के दादाजी बरामदे में सामायिक कर रहे थे। राहुल बारूद से भरा कार्टून सड़क पर ले गया। अपने मित्रों के साथ बम-पटाखे छोड़ने शुरू किए। उसने सूतली बम छोड़ा। उसका धमाका इतना जोर से हुआ कि दादाजी के कान का पर्दा फट गया। उन्हें बेचैनी हो रही थी और उन्हें कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा था। सभी घर वालों को चिन्ता हो गई। सवेरे राहुल और उसके पिताजी दादाजी को लेकर अस्पताल गए। डॉक्टर की जाँच के पश्चात् ज्ञात हुआ कि दादाजी के कान का पर्दा फट गया है। राहुल को बड़ा दुःख हुआ, उसने सोच-विचार कर डॉक्टर से कहा- डॉक्टर साहब! सुनने वाली मशीन लगा दीजिए। डॉक्टर से वापस उत्तर मिला कि मशीन भी नहीं लग सकती।

राहुल अपने दादाजी को अत्यधिक प्यार करता था। वह उनके साथ ही खाता-पीता था, सोता और खेलता भी उनके साथ था। कहानी-किस्से भी सुना करता था। उसकी स्थिति बहुत दयनीय हो गई। खूब फूटफूट कर रोया, पश्चात्ताप करने लगा। अब क्या होगा जब चिड़िया चुग गई खेत। यदि मैं अभिनव की बात मान लेता तो मेरे दादाजी के कान क्षति-ग्रस्त नहीं होते। उन्हें मैंने बहरा कर डाला।

बच्चों! बम-पटाखे छोड़ने से वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है। अनेक पशु-पक्षी दुःखी होते हैं। वायु प्रदूषण बढ़ता है। पर्यावरण दूषित होने से कई हानियाँ होती हैं। पैसे व्यर्थ में जाते हैं। सब प्रकार से बर्बादी! बर्बादी!!

पाठक-गण आप भी शपथ लीजिए हम बारुद नहीं छोड़ेंगे।

प्रश्नः-

1. बम-पटाखे की आवाज से कुत्ते की क्या दशा हुई?
2. अभिनव को किस पर तरस आया और क्यों?
3. बारूद छोड़ने से क्या-क्या हानियाँ होती हैं?
4. आलेख में से मुहावरे निकालिए, अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।
5. राहुल को पश्चात्ताप क्यों हो रहा था?
6. आपने दीपावली कैसे मनाई? (100 शब्दों में)

-ई-123, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

(बाल-स्तम्भ अगस्त-2014 का परिणाम पृष्ठ संख्या 60 पर दिया जा रहा है।)

52 वें दीक्षा-दिवस पर

काव्यांजलि

श्री विनोद कुमार सेठ

हीरा-मान हैं संघ सितारे, सबकी आँखों के हैं तारे
गुण-गण से ये लसे हुए हैं, गुरु हस्ती से चुने हुए हैं
महेन्द्रमुनि हैं महान् अध्यवसायी, गुरु हस्ती के हैं अनुयायी
गौतममुनि भी प्रसिद्ध हुए हैं, काव्य प्रतिभा लिए हुए हैं
इनके काव्यों को पढ़कर, भक्त-अलि सब चहक उठे हैं
नन्दीषेण की सेवा लखकर, आबाल वृद्ध सब दंग हुए हैं
ध्यान योग को ध्येय बनाकर, प्रमोद इसमें लगे हुए हैं
गुरु हस्ती के संग में रहकर, उनकी शिक्षाओं पर चलकर
ज्ञान-ध्यान में रमकर ऋषिवर, सौरभ से तुम महक उठे हो
हीरा-मान की छत्र-छाँव में, गुरु हस्ती के पुण्य धाम में
संत-सती सब निखर गये हैं, हर्षित-तर्षित तृप्त हुए हैं
ध्यान-योग के दिव्य-प्रभाकर, शांतिसुधा के पूर्ण सुधाकर
हम सबका अब आर्त मिटा दो, धर्मामृत झटपट बरसा दो
दुःख पीड़ा से मुक्ति दिला दो, मुक्ति रमा से वरण करा दो
परम ब्रह्म में लीन करा दो, सहजानन्द में रमण करा दो
प्रमोद मुनि के दर्शन करने, अति आतुर हैं सब नर-नारी
इनकी प्रतिभा-तीक्ष्ण बुद्धि के कायल हैं अन्तेवासी
लाल-भवन में चौमासा है, परम हर्ष का यह मौका है
यशवन्त, मोहन, सुभाष आयें, जागे सबके भाग्य सवाये
अभय-मुनि भी स्वस्थ हुए हैं, नव-दीक्षा ले स्वच्छ हुए हैं
आत्म-ध्यान में गमन है कर लो, समता के अमृत को पीलो
भक्त-अलि गुण-गान करे अब, धर्मतीर्थ में स्नान करे सब
आत्म रमण कर भगवन बन लो, सार्थक मानव जीवन कर लो
विनोद सेठ पर किरपा कर दी, उत्कर्षण का वर झट दे दो
यश-कीर्ति का आशीष देकर, सद्गति मेरी निश्चित कर दो।

-जयपुर (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

जयपायड निमित्तशास्त्र- प्रधान सम्पादक- आचार्य जिनविजय, ***पुनः प्रकाशन***- प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोनः 0141-2524827, ***पृष्ठ***-112, ***मूल्य***-200 रुपये, सन्-2009

निमित्तशास्त्र का प्रश्नविद्या विषयक यह ग्रन्थ संस्कृतव्याख्योपेत है तथा प्राकृत भाषा के 378 पद्यों में अनुबद्ध है। इसका अपर नाम प्रश्नव्याकरण है। विक्रम संवत् 1336 में अनूदित इस ग्रन्थ का लेखक अज्ञात है। इसमें अनेक विषय सम्मिलित हैं, यथा- संकट-विकट प्रकरण, पक्षी प्रकरण, चतुष्पद प्रकरण, मनुष्य प्रकरण, धातु प्रकृति, मूलयोनि, स्वरक्षेत्रभवन, व्यंजन-स्वर प्रकरण, व्याधि-मृत्यु विषयक प्रश्न, मुष्टिविभाग प्रकरण, वर्ण-रस-गंध-स्पर्श प्रकरण आदि। 41 विषयों के विवरण के अनन्तर ज्ञानदीपक चूडामणिसारशास्त्र भी प्रकाशित है। मुनिजिनविजय ने पुस्तक की प्रस्तावना में लिखा है- "यह शास्त्र जिस मनीषी या विद्वान् को अच्छी तरह अवगत हो, वह इसके आधार से किसी भी प्रश्नकर्ता के लाभ-अलाभ, शुभ-अशुभ, सुख-दुःख एवं जीवन-मरण आदि की बातों के विषय में बहुत निश्चित और तथ्यपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकता है और प्रश्नकर्ता को बता सकता है।" प्राकृत भारती अकादमी ने सिंघी जैन ग्रन्थमाला में प्रकाशित इस कृति को पुनर्मुद्रित कर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

प्राकृत का जैन आगम साहित्य : एक विमर्श - डॉ. सागरमल जैन, ***प्रकाशक***- प्राच्य विद्या पीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (मध्यप्रदेश), ***पृष्ठ***-48, ***मूल्य***- उल्लेख नहीं, सन्-2014

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वत्मनीषी प्रो. जैन सा. ने आगम-साहित्य में संसार की दुःखमयता को बताकर त्याग और वैराग्यमय जीवन शैली को निरूपित किया है। आगमों की ऐतिहासिकता के साथ उन्होंने "वैदिक-साहित्य और प्राकृत-आगम साहित्य" "पालित्रिपिटक और प्राकृत आगम साहित्य" "आगमों का महत्त्व एवं प्रामाणिकता" विषयक बिन्दुओं में अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं के अनुसार हुए आगमों का वर्गीकरण उल्लिखित है। आगम-साहित्य की प्राचीनता एवं रचनाकाल के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन के पश्चात् प्रो. जैन ने आगमों की वाचनाओं का निरूपण किया है। ग्रन्थ में सर्वत्र लेखक की शोधपरक और गवेषणात्मक

दृष्टि का बोध हो रहा है।

पुस्तक के अन्त में लेखक ने विद्वान् पाठकों से अनुरोध किया है कि वे आगमों का अध्ययन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी या तेरापंथी दृष्टि से न करें, अपितु इन साम्प्रदायिक अभिनिवेशों से ऊपर उठकर करें। आगमों के अध्ययन के साथ निम्न पुस्तकें द्रष्टव्य हैं-

1. A History of the Canonical literature of the Jainas- हीरालाल रसिकलाल कापड़िया।
2. प्राकृत साहित्य का इतिहास-प्रो. जगदीशचन्द्र जैन
3. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास (प्रथम तीन खण्ड)- पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान।
4. जैनागम : मनन और मीमांसा- आचार्य देवेन्द्रमुनि शास्त्री
5. जैनागम और पालि त्रिपिटक- मुनि नगराज जी
6. जैन आगम साहित्य : एक अनुशीलन- आचार्य जयन्तसेनसूरि
7. पाश्चात्त्य विद्वान् जैकोबी, शुब्रिंग, विण्टरनित्ज आदि की भूमिकाएँ एवं स्वतन्त्र निबन्ध।

समग्र जैन चातुर्मास सूची-2014- सम्पादक एवं संकलनकर्ता- बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल', ***प्रकाशक***- बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल', गजेन्द्र संदेश कार्यालय, 105 तिरुपति अपार्टमेन्ट्स, आकुर्ली रोड नं. 1, कांदिवली (पूर्व), मम्बई-400101 (महा.), फोनः 022-28871278, ***पृष्ठ***-506, ***मूल्य***-150 रुपये, सन्-2014

सन् 1979 से निरन्तर प्रकाशित होने वाली यह चातुर्मास सूची पूरे जैन समाज को सूचनात्मक रूप से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। पूरे भारत में 15264 साधु-साध्वियों के 3313 चातुर्मास चल रहे हैं। इसमें सभी आचार्यों के कतिपय वैशिष्ट्य को भी रेखांकित किया गया है तथा उज्ज्वल प्रकाशन की पुस्तकों की भी जानकारी उपलब्ध करायी गई है। विदेश में होने वाले समणियों के चातुर्मास भी अंकित हैं।

समीक्षार्थ प्राप्त पुस्तकें

(1) 18 पाप व 9 पुण्य, पृष्ठ-152, (2) आगम कहानियाँ, पृष्ठ-144, (3) णमोत्थुणं सूत्र, पृष्ठ-240, (4) दुर्लभ मनुष्य भव (भाग-1), पृष्ठ-160, संग्राहक व सम्पादक- जेठमल गुलेचा, प्राप्ति स्थान- 269, सरदारपुरा, 4 बी रोड़, जोधपुर-342001 (राज.), मो. नं. 09351315749, 09314712919 कोई भी पाठक इन चारों पुस्तकों को निःशुल्क मंगवा सकता है।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 20 जुलाई 2014 को आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थायी वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए। इस परीक्षा में 280 केन्द्रों पर 8378 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। परिणाम 68.22 प्रतिशत रहा।

अस्थायी वरीयता सूची

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
68416	एकता डोसी	वैशालीनगर,अजमेर	99.75	प्रथम
90975	बबिता गादिया	रेडहिल्स-चेन्नई	99.50	द्वितीय
91439	नीलिमा सुराना	विज्ञाननगर, कोटा	99.50	द्वितीय
93664	मीना चौधरी	वैल्लूर-चेन्नई	99.50	द्वितीय
93445	प्रीति छाजेड़	करही-मध्यप्रदेश	99.25	तृतीय
93663	सोनम कर्नावट	वैल्लूर-चेन्नई	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

89534	रचना कोठारी	ब्यावर (राजस्थान)	99.75	प्रथम
62140	आशा छाजेड़	सेलम (तमिलनाडू)	99.50	द्वितीय
88257	प्रीति बागमार	डिंड़ोरी (महा.)	99.25	तृतीय
90310	वन्दना कासवा	हिंगनघाट (महा.)	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

84266	अनिता जैन	विरार-थाणे (महा.)	99.50	प्रथम
82702	आशा पींचा	सरस्वतीनगर, जोधपुर	99.00	द्वितीय
82035	नीलम विनायकिया	सुबोध बालिका, जयपुर	98.75	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

92633	कविता जैन	गुलाबनगर, जोधपुर	98.50	प्रथम
80230	प्राची संचेती	धुलिया (महा.)	97.75	द्वितीय
62845	आरती मुथा	अमरावती (महा.)	96.75	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवी कक्षा)

76935	श्वेता जैन	शिरपुर (महा.)	96.50	प्रथम
68873	रूपल शाह	नागपुर (महा.)	96.00	द्वितीय
62847	सरिता संकलेचा	अमरावती (महा.)	95.50	तृतीय
68439	मीनल जैन	अलीगढ़ (राज.)	95.50	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

82782	साधना बोरा	खामगांव (महा.)	98.00	प्रथम
72468	दक्षा पितलिया	विदिशा (म.प्र.)	97.50	द्वितीय
61837	सुधा कोठारी	वेलीचेरी (चेन्नई)	97.00	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

64615	खुशी कटारिया	पीपाड़सिटी (राज.)	97.00	प्रथम
75713	प्रेम जैन	चौ.हा.बोर्ड, जोधपुर	96.00	द्वितीय
77375	अलका जैन	बजरिया(सवाईमाधोपुर)	95.00	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

63502	भारती गांधी	पुणे (महा.)	98.00	प्रथम
59836	सीमा लुंकड़	वेस्ट सेदापेठ(चेन्नई)	97.00	द्वितीय
63361	उषाबाई लुणावत	आसेगांवदेवी(महा.)	96.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध (नवमीं कक्षा)

57974	उषा कटारिया	विजयवाड़ा (आं.प्र.)	96.00	प्रथम
84841	गरिमा जैन	श्रीगंगानगर (राज.)	94.50	द्वितीय
88061	तारा जैन	जलगांव (महा.)	91.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-उत्तरार्द्ध (दसवीं कक्षा)

80456	माधुरी जैन	आगरा (उत्तरप्रदेश)	98.50	प्रथम
62106	आशा दुगड़	न्यू वाशरमेनपेठ (चेन्नई)	98.00	द्वितीय
73388	रिया सुराना	हिंगनघाट	95.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं कक्षा)

63503	मंजुला सोलंकी	पुणे (महा.)	96.75	प्रथम
57902	नितल नाहर	मालेगांव केम्प(महा.)	96.50	द्वितीय
57741	मनीषा संकलेचा	नरडाणा (महा.)	96.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर-उत्तरार्द्ध (बारहवीं कक्षा)

57952	इन्द्रा सुराना	मालेगांव केम्प(महा.)	91.00	प्रथम
64550	दिपाली श्रीश्रीमाल	जालना (महा.)	90.00	द्वितीय
72339	अल्का नवलखा	महावीरनगर, जयपुर	89.00	तृतीय

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

प्रथम कक्षा जैन धर्म परिचय

55671, 56989, 57596, 58110, 58115, 58156, 58510, 58683, 58737, 58911, 59730, 60011, 60579, 61122, 61124, 61132, 61435, 62832, 63342, 63903, 63974, 63996, 64176, 64614, 64724, 65281, 65413, 65702, 65752, 65838, 66173, 66350, 66379, 66652, 66990, 67344, 68018, 68416, 68417, 68988, 69133, 69162, 69423, 69553, 69874, 70096, 70379, 70387, 70417, 71354, 71368, 72166, 72279, 72555, 73123, 73191, 73552, 74385, 74517, 74640, 74713, 74714, 74807, 75145, 75357, 75442, 75543, 75562, 75568, 75575, 75664, 75950, 76411, 77046, 77049, 77054, 77854, 77855, 78222, 78468, 78808, 78943, 79298, 79358, 79667, 79678, 79809, 80743, 80973, 81011, 81115, 81428, 81864, 81904, 81986, 82200, 82329, 82362, 82374, 82700, 82731, 82815, 82834, 82835, 83002, 83098, 83348, 83747, 83853, 83861, 84291, 84335, 84394, 84433, 84531, 84549, 84635, 84894, 84921, 85152, 85189, 85255, 85318, 85324, 85329, 85431, 85509, 85526, 85622, 85899, 85902, 86151, 86212, 86559, 86773, 86796, 86930, 87204, 87459, 87515, 87558, 87562, 87566, 87599, 87600, 87603, 87615, 87618, 87628, 87890, 87898, 87932, 87957, 87989, 88014, 88054, 88071, 88144, 88148, 88196, 88219, 88315, 88361, 88404, 88420, 88434, 88459, 88532, 88592, 88617, 88620, 88634, 88636, 88671, 88738, 88776, 88777, 88783, 88841, 88885, 88971, 88972, 88987, 89107, 89252, 89276, 89296, 89316, 89317, 89436, 89493, 89591, 89642, 89738, 89741, 89743, 89745, 89752, 89784, 89845, 89853, 89921, 89982, 90045, 90084, 90115, 90191, 90300, 90304, 90353, 90386, 90403, 90529, 90534, 90616, 90625, 90626, 90663, 90671, 90704, 90710, 90712, 90713, 90715, 90774, 90782, 90783, 90848, 90849, 90850, 90851, 90852, 90855, 90857, 90858, 90866, 90867, 90868, 90869, 90871, 90873, 90875, 90876, 90879, 90880, 90885, 90886, 90887, 90891, 90892, 90893, 90895, 90896, 90897, 90898, 90899, 90902, 90904, 90906, 90907, 90908, 90909, 90910, 90911, 90923, 90925, 90930, 90932, 90934, 90935, 90947, 90950, 90952, 90954, 90958, 90959, 90960, 90961, 90965, 90966, 90968, 90969, 90970, 90971, 90972, 90974, 90975, 90978, 90979, 90980, 90990, 90991, 90994, 90995, 91012, 91013, 91025, 91026, 91027, 91029, 91052, 91053, 91054, 91056, 91060, 91061, 91067, 91068, 91069, 91070, 91071, 91074, 91076, 91085, 91087, 91119, 91127, 91132, 91136, 91144, 91146, 91148, 91156, 91157, 91159, 91160, 91161, 91162, 91163, 91164, 91165, 91168, 91170, 91171, 91172, 91184, 91202, 91204, 91207, 91215, 91219, 91220, 91231, 91232, 91233, 91234, 91235, 91236, 91243, 91253, 91257, 91273, 91274, 91276, 91278, 91279, 91293, 91300, 91304, 91305, 91311, 91317, 91319, 91320, 91322, 91323, 91325, 91326, 91327, 91328, 91329, 91330, 91332, 91334, 91336, 91338, 91340, 91341, 91345, 91349, 91351, 91352, 91362, 91363, 91367, 91369, 91371, 91372, 91373, 91377, 91378, 91379, 91381, 91382, 91384, 91385, 91387, 91388, 91389, 91392, 91400, 91403, 91411, 91415, 91417, 91421, 91422, 91424, 91425, 91427, 91428, 91431, 91433, 91434, 91436, 91438, 91439, 91440, 91441, 91442, 91445, 91447, 91449, 91450, 91451, 91452, 91453, 91468, 91469, 91472, 91476, 91477, 91478, 91479, 91480, 91482, 91489, 91492, 91497, 91500, 91512, 91513, 91515, 91516, 91520, 91535, 91540, 91541, 91542, 91543, 91544, 91546, 91549, 91551, 91552, 91553, 91555, 91569, 91571, 91584, 91588, 91591, 91604, 91606, 91608, 91609, 91612, 91619, 91622, 91629, 91630, 91649, 91653, 91654, 91658, 91659, 91660, 91666, 91668, 91669, 91670, 91672, 91684, 91690, 91692, 91695, 91696, 91700, 91703, 91705, 91706, 91707, 91717, 91718, 91730, 91732, 91734, 91736, 91739, 91747, 91751, 91764, 91765, 91766, 91767, 91768, 91769, 91771, 91774, 91777, 91779, 91780, 91784, 91786, 91787, 91788, 91798, 91802, 91804, 91814, 91820, 91825, 91847, 91848, 91850, 91851, 91852, 91859, 91860, 91861, 91864, 91865, 91869, 91871, 91872, 91887, 91888, 91890, 91891, 91892, 91898, 91900, 91901, 91925, 91928, 91945, 91955, 91963, 91966, 91970, 91971, 91972, 91974, 91975, 91976, 91979, 91983, 91985, 91986, 91989, 91990, 91992, 91993, 91994, 91995, 91997, 91998, 91999, 92003, 92013, 92014, 92018, 92020, 92021, 92025, 92032, 92044, 92050, 92052, 92053, 92054, 92055, 92061, 92068, 92069, 92071, 92072, 92074, 92084, 92085, 92086, 92087, 92088, 92089, 92090, 92094, 92095, 92105, 92106, 92109, 92115, 92126, 92128, 92131, 92133, 92134, 92144, 92145, 92146, 92153, 92159, 92160, 92168, 92170, 92171, 92172, 92174, 92183, 92186, 92198, 92202, 92208, 92237, 92252, 92254, 92255, 92256, 92259, 92263, 92264, 92267, 92268, 92270, 92272, 92273, 92277, 92289, 92292, 92302, 92311, 92317, 92320, 92323, 92327, 92328, 92329, 92330, 92334, 92335, 92338, 92341, 92350, 92355, 92364, 92365, 92366, 92368, 92374, 92375, 92377, 92381, 92382, 92383, 92384, 92387, 92389, 92391, 92394, 92397, 92398, 92399, 92400, 92401, 92402, 92408, 92417, 92418, 92419, 92420, 92421, 92422, 92423, 92424, 92425, 92426, 92427, 92429, 92431, 92432, 92433, 92439, 92472, 92473, 92503, 92504, 92523, 92527, 92538, 92539, 92540, 92542, 92545, 92548, 92549, 92554, 92557, 92558, 92564, 92565, 92566, 92567, 92568, 92569, 92570, 92571, 92572, 92574, 92579, 92584, 92598, 92602, 92611, 92615, 92616, 92617, 92618, 92628, 92636, 92645, 92648, 92650, 92653, 92660, 92669, 92670, 92671, 92672, 92673, 92676, 92678, 92680, 92681, 92682, 92684, 92688, 92707, 92708, 92709, 92720, 92721, 92722, 92723, 92728, 92736, 92748, 92749, 92764, 92768, 92772, 92773, 92777, 92778, 92781, 92782, 92801, 92802, 92804, 92812, 92813, 92814, 92815, 92816, 92817, 92818, 92825, 92834, 92843, 92844, 92845, 92849, 92850, 92851, 92852, 92853, 92854, 92855, 92856, 92857, 92860, 92861, 92862, 92866, 92874, 92879, 92881, 92884, 92888, 92890, 92896, 92908, 92913, 92918, 92919, 92920, 92921, 92922, 92923, 92924, 92926, 92931, 92936, 92937,

92938, 92940, 92941, 92942, 92943, 92944, 92945, 92946, 92948, 92949, 92951, 92952, 92953, 92954, 92956, 92957, 92958, 92961, 92963, 92975, 92976, 93010, 93012, 93021, 93022, 93027, 93029, 93030, 93036, 93038, 93039, 93040, 93046, 93049, 93050, 93052, 93053, 93054, 93055, 93056, 93057, 93061, 93063, 93064, 93066, 93069, 93070, 93077, 93080, 93081, 93085, 93094, 93098, 93100, 93101, 93103, 93105, 93112, 93115, 93125, 93133, 93135, 93145, 93148, 93158, 93186, 93188, 93190, 93191, 93203, 93204, 93207, 93213, 93214, 93215, 93216, 93217, 93218, 93219, 93224, 93230, 93231, 93235, 93236, 93240, 93244, 93250, 93252, 93253, 93254, 93257, 93259, 93260, 93261, 93269, 93271, 93273, 93285, 93292, 93293, 93299, 93302, 93303, 93304, 93307, 93317, 93318, 93320, 93321, 93322, 93323, 93324, 93325, 93326, 93327, 93328, 93329, 93330, 93331, 93332, 93335, 93336, 93337, 93338, 93343, 93350, 93365, 93367, 93384, 93393, 93413, 93419, 93432, 93434, 93435, 93445, 93446, 93448, 93449, 93450, 93451, 93453, 93454, 93455, 93456, 93458, 93461, 93462, 93464, 93469, 93473, 93476, 93480, 93481, 93488, 93492, 93495, 93499, 93503, 93508, 93509, 93511, 93512, 93516, 93518, 93520, 93521, 93523, 93524, 93525, 93527, 93529, 93530, 93531, 93532, 93533, 93534, 93535, 93536, 93537, 93538, 93539, 93542, 93543, 93544, 93545, 93546, 93547, 93549, 93556, 93559, 93560, 93561, 93563, 93564, 93570, 93571, 93572, 93573, 93574, 93575, 93576, 93578, 93580, 93581, 93582, 93583, 93586, 93587, 93588, 93596, 93599, 93604, 93605, 93607, 93609, 93610, 93613, 93618, 93622, 93623, 93625, 93627, 93628, 93629, 93630, 93631, 93632, 93634, 93635, 93637, 93639, 93640, 93644, 93650, 93651, 93652, 93656, 93657, 93658, 93659, 93660, 93661, 93662, 93663, 93664, 93667, 93668, 93669, 93670, 93671, 93672, 93675, 93676, 93680, 93681, 93682, 93684, 93697, 93698, 93699, 93701, 93702, 93703, 93706, 93711, 93712, 93714, 93715, 93716, 93717, 93721, 93722, 93725, 93726, 93727, 93728, 93732, 93736, 93737, 93738, 93739, 93740, 93741, 93742, 93743, 93744, 93745, 93747, 93748 (Total Student Count:1102)

द्वितीय कक्षा जैन धर्म प्रवेशिका

52086, 56999, 57278, 57372, 58313, 58326, 58729, 58731, 58790, 58887, 58920, 59023, 59696, 59706, 60461, 60467, 60471, 60473, 61991, 62090, 62140, 62308, 62349, 62369, 62372, 62803, 63885, 63930, 64145, 64227, 64243, 64277, 64331, 65917, 66358, 66365, 66368, 66369, 66756, 66962, 67111, 67352, 67608, 67893, 67913, 68016, 68118, 68408, 68410, 68550, 68778, 68887, 68957, 69196, 69231, 69781, 69844, 70003, 70204, 70673, 71113, 71123, 71125, 71314, 71355, 71365, 71408, 71477, 71989, 72538, 72803, 72870, 72885, 72981, 73337, 73456, 73486, 73676, 73695, 73926, 73930, 74241, 74310, 75063, 75076, 75288, 75430, 75521, 75538, 75541, 75564, 75565, 75633, 77750, 78128, 78176, 78315, 78326, 78327, 78343, 78538, 78634, 78869, 79175, 79296, 79474, 79543, 79544, 79590, 79679, 79685, 79938, 79973, 80197, 80217, 80229, 80252, 80269, 80321, 80642, 80836, 81042, 81141, 81323, 81589, 81621, 81623, 81698, 81923, 82038, 82235, 82395, 82430, 82465, 82504, 82589, 82694, 82721, 82724, 82741, 82742, 82755, 82843, 82875, 83088, 83196, 83267, 83269, 83355, 83360, 83361, 83461, 83483, 83494, 83503, 83505, 83544, 83568, 83572, 83630, 83650, 83679, 83685, 83693, 83845, 83954, 83959, 83962, 84053, 84112, 84120, 84134, 84139, 84189, 84190, 84238, 84389, 84417, 84423, 84430, 84455, 84461, 84753, 84934, 84938, 84943, 84948, 84990, 85067, 85077, 85137, 85144, 85296, 85298, 85321, 85332, 85421, 85422, 85477, 85659, 85671, 85836, 85838, 85864, 85907, 85987, 85997, 86039, 86113, 86139, 86141, 86228, 86246, 86249, 86294, 86318, 86560, 86562, 86564, 86569, 86573, 86593, 86599, 86602, 86738, 86748, 86750, 86752, 86755, 86757, 86758, 86761, 86763, 86765, 86767, 86780, 86832, 86912, 87041, 87066, 87106, 87452, 87476, 87478, 87484, 87486, 87487, 87495, 87549, 87556, 87564, 87565, 87609, 87612, 87614, 87616, 87629, 87757, 87771, 87772, 87777, 87781, 87782, 87789, 87885, 87892, 87899, 87902, 87937, 87953, 87959, 87964, 87983, 87985, 87986, 87988, 87999, 88009, 88011, 88041, 88091, 88110, 88111, 88115, 88136, 88137, 88139, 88146, 88152, 88153, 88174, 88194, 88204, 88205, 88217, 88228, 88229, 88230, 88232, 88234, 88235, 88238, 88246, 88247, 88248, 88249, 88250, 88253, 88254, 88256, 88257, 88258, 88260, 88262, 88264, 88265, 88270, 88272, 88273, 88274, 88275, 88279, 88290, 88294, 88311, 88327, 88342, 88360, 88364, 88369, 88370, 88378, 88379, 88380, 88381, 88422, 88457, 88545, 88578, 88616, 88622, 88629, 88633, 88648, 88656, 88658, 88661, 88662, 88677, 88685, 88691, 88692, 88696, 88697, 88698, 88700, 88703, 88706, 88708, 88729, 88730, 88731, 88734, 88736, 88761, 88762, 88763, 88766, 88767, 88773, 88774, 88780, 88859, 88864, 88896, 88897, 88898, 88905, 88906, 88907, 88917, 88930, 88935, 88939, 88940, 88943, 88950, 88956, 88959, 88960, 88974, 88975, 88976, 89006, 89008, 89020, 89025, 89027, 89028, 89074, 89092, 89094, 89095, 89101, 89113, 89116, 89176, 89179, 89180, 89181, 89207, 89209, 89213, 89214, 89259, 89263, 89265, 89266, 89271, 89277, 89288, 89329, 89337, 89346, 89347, 89348, 89418, 89432, 89439, 89444, 89448, 89459, 89460, 89461, 89473, 89474, 89484, 89512, 89513, 89523, 89524, 89534, 89536, 89547, 89569, 89593, 89594, 89639, 89644, 89662, 89663, 89667, 89674, 89705, 89710, 89724, 89732, 89739, 89777, 89780, 89786, 89808, 89816, 89842, 89846, 89857, 89865, 89896, 89907, 89908, 89909, 89910, 89911, 89912, 89913, 89914, 89915, 89916, 89918, 89919, 89920, 89941, 89945, 89947, 89948, 89949, 89950, 89951, 89955, 89957, 89959, 89962, 89967, 89992, 89993, 89995, 90040, 90070, 90073, 90076, 90079, 90117, 90119, 90120, 90128, 90141, 90143, 90151, 90159, 90164, 90165, 90171, 90177, 90213, 90268, 90279, 90280, 90286, 90291, 90301, 90308, 90309, 90310, 90330, 90373, 90375, 90457, 90465, 90469, 90501, 90506, 90513, 90516, 90564, 90567, 90568, 90576, 90598, 90600, 90602, 90603, 90605, 90607, 90620, 90622, 90624, 90627, 90628, 90631, 90639, 90658, 90676, 90677, 90678, 90679, 90680,

90714, 90724, 90734, 90743, 90747, 90751, 90756, 90758, 90767, 90768, 90769, 90771, 90772, 90773, 90785, 90786, 90791, 90808, 90813, 90815, 90828, 90837, 90912, 90913, 90915, 90916, 90919, 91009, 91031, 91050, 91057, 91058, 91064, 91075, 91179, 91192, 91270, 91416, 91437, 91459, 91486, 91506, 91511, 91625, 91650, 91661, 91674, 91685, 91725, 91772, 91789, 91835, 91895, 91980, 92033, 92129, 92143, 92148, 92149, 92150, 92190, 92192, 92217, 92218, 92245, 92299, 92321, 92339, 92340, 92347, 92348, 92349, 92363, 92411, 92517, 92595, 92743, 92787, 92810, 92821, 92828, 92902, 92906, 92914, 92982, 93023, 93037, 93041, 93042, 93181, 93193, 93198, 93200, 93201, 93238, 93249, 93251, 93276, 93296, 93354, 93388, 93425, 93457, 93485, 93579, 93592, 93593, 93606, 93611, 93617, 93641, 93655, 93666, 93707, 93708, 93709, 93710, 93718, 93730, 93731

(Total Student Count:676)

तृतीय कक्षा जैन धर्म प्रथमा

57692, 57957, 57961, 58324, 58903, 58933, 59707, 59781, 59826, 59851, 60454, 60527, 60583, 61148, 61396, 61593, 62131, 62532, 62716, 63433, 63529, 64051, 64206, 64719, 64914, 65154, 65290, 65807, 65949, 66026, 66028, 66071, 66077, 66234, 66366, 66895, 67499, 67552, 67648, 67761, 67851, 68267, 68364, 68556, 68814, 69085, 69264, 69485, 69679, 69777, 70207, 70309, 70358, 70467, 70643, 70675, 70677, 71357, 71360, 71413, 71414, 71508, 71548, 72048, 72049, 72070, 72126, 72150, 72160, 72277, 72278, 72558, 72570, 72597, 72639, 72934, 73163, 73164, 73380, 73390, 73432, 73433, 73667, 73704, 73814, 73831, 73938, 73974, 74219, 74227, 74413, 74711, 74853, 74920, 75064, 75093, 75227, 75325, 75416, 75431, 75505, 75577, 75578, 75580, 75583, 75680, 75690, 76684, 76771, 76838, 76940, 77003, 77078, 77136, 77559, 77565, 77620, 77664, 77796, 77997, 78020, 78057, 78153, 78175, 78189, 78244, 78303, 78304, 78346, 78436, 78437, 78479, 78489, 78631, 78645, 78696, 78786, 79005, 79006, 79119, 79124, 79237, 79341, 79353, 79413, 79416, 79445, 79540, 79575, 79616, 79625, 79648, 79665, 79912, 79913, 79945, 79976, 79979, 80228, 80306, 80457, 80530, 80563, 80573, 80785, 80829, 81021, 81082, 81100, 81142, 81281, 81282, 81299, 81327, 81334, 81460, 81506, 81598, 81632, 81861, 81869, 81963, 82035, 82037, 82175, 82178, 82262, 82291, 82371, 82383, 82407, 82451, 82455, 82470, 82472, 82474, 82476, 82477, 82511, 82590, 82603, 82638, 82677, 82689, 82702, 82712, 82715, 82736, 82757, 82759, 82765, 82769, 82771, 82773, 82774, 82777, 82778, 82787, 82790, 82795, 82798, 82799, 82882, 82909, 82910, 82924, 82961, 83023, 83030, 83034, 83035, 83061, 83062, 83063, 83064, 83065, 83066, 83067, 83068, 83069, 83070, 83072, 83074, 83081, 83094, 83104, 83215, 83216, 83250, 83251, 83264, 83275, 83363, 83369, 83372, 83373, 83374, 83377, 83466, 83472, 83474, 83490, 83498, 83514, 83516, 83527, 83533, 83549, 83550, 83555, 83557, 83561, 83639, 83644, 83662, 83678, 83695, 83721, 83787, 83794, 83819, 83822, 83831, 83832, 83839, 83840, 83863, 83869, 83893, 83901, 83904, 83957, 83963, 83975, 84014, 84042, 84062, 84113, 84132, 84135, 84138, 84148, 84202, 84203, 84217, 84218, 84237, 84239, 84240, 84249, 84251, 84257, 84266, 84268, 84288, 84289, 84303, 84316, 84349, 84351, 84379, 84382, 84384, 84386, 84387, 84447, 84452, 84456, 84489, 84533, 84612, 84643, 84699, 84730, 84791, 84800, 84838, 84864, 84871, 84904, 84909, 84913, 84914, 84916, 84932, 84950, 84977, 84989, 85003, 85005, 85063, 85105, 85142, 85143, 85150, 85155, 85161, 85164, 85190, 85192, 85200, 85201, 85232, 85236, 85331, 85355, 85356, 85457, 85504, 85517, 85558, 85563, 85564, 85579, 85582, 85594, 85595, 85667, 85672, 85701, 85727, 85765, 85776, 85821, 85879, 85885, 86000, 86010, 86031, 86071, 86074, 86093, 86106, 86109, 86110, 86130, 86131, 86154, 86158, 86160, 86170, 86191, 86205, 86209, 86257, 86258, 86263, 86265, 86272, 86279, 86283, 86293, 86299, 86308, 86328, 87284, 87960, 87982, 88017, 88018, 88059, 88080, 88172, 88298, 88403, 88516, 88632, 89036, 89037, 89090, 89447, 89498, 89533, 89542, 89603, 89647, 89693, 89778, 90023, 90154, 90203, 90232, 90404, 90541, 90544, 90606, 90804, 90821, 90844, 90845, 90984, 91005, 91137, 91139, 91185, 91288, 91409, 91410, 91455, 91548, 91577, 91585, 91589, 91602, 91667, 91686, 91687, 91688, 91741, 91837, 91889, 92005, 92006, 92007, 92142, 92151, 92211, 92307, 92315, 92528, 92529, 92547, 92562, 92596, 92725, 92784, 92827, 92904, 92905, 92993, 93107, 93210, 93211, 93212, 93283, 93287, 93403, 93404, 93463, 93475, 93603, 93619, 93653, 93654, 93705, 93734, 93735 (Total Student Count:507)

चतुर्थ कक्षा जैन धर्म मध्यमा

51428, 57092, 57121, 57124, 57275, 57276, 57415, 57447, 57520, 57964, 58032, 58294, 58303, 58305, 58346, 58516, 58517, 58551, 58835, 58940, 59006, 59673, 59737, 59755, 60328, 60331, 60333, 60338, 60455, 60515, 60806, 60823, 60906, 60983, 61391, 61569, 61870, 62186, 62339, 62342, 62344, 62345, 62355, 62360, 62364, 62367, 62624, 62704, 62777, 62779, 62804, 62805, 62816, 62821, 62845, 63047, 63411, 63692, 63950, 63965, 64210, 64601, 64846, 64936, 65112, 65190, 65729, 66024, 66511, 66512, 66680, 67152, 67165, 67397, 67598, 67617, 67818, 67820, 67984, 68360, 68423, 69020, 69089, 69090, 69262, 69286, 69608, 69776, 69917, 70076, 70117, 70872, 70931, 70983, 71128, 71130, 71359, 71636, 72128, 72131, 72191, 72213, 72301, 72398, 72403, 72545, 72585, 72613, 72696, 72714, 72823, 72851, 72975, 73085, 73168, 73361, 73382, 73485, 73534, 73535, 73560, 73581, 73651, 73680, 73789, 73911, 73939, 73967, 74272, 74478, 74536, 74538, 74587, 74620, 74688, 74862, 75087, 75151, 75165, 75338, 75674, 75968, 76154, 76251, 76271, 76402, 76415, 76418, 76443, 76444, 76541, 76614, 76648, 76654, 76673, 76929, 76930, 77155, 77346, 77484, 77573, 77687, 77783, 77895, 77933,

77943, 78067, 78119, 78166, 78168, 78314, 78317, 78362, 78433, 78470, 78493, 78495, 78502, 78507, 78574, 78722, 78766, 78845, 78888, 78904, 78925, 78995, 79037, 79043, 79044, 79054, 79084, 79094, 79158, 79176, 79177, 79181, 79230, 79242, 79309, 79318, 79319, 79347, 79449, 79451, 79453, 79455, 79457, 79464, 79466, 79467, 79496, 79497, 79502, 79518, 79520, 79562, 79586, 79600, 79623, 79640, 79651, 79715, 79767, 79974, 79982, 80230, 80251, 80326, 80336, 80337, 80572, 80575, 80619, 80621, 80627, 80638, 80639, 80640, 80648, 80689, 80698, 80701, 80718, 80760, 80820, 80902, 81012, 81013, 81046, 81080, 81081, 81083, 81084, 81085, 81086, 81092, 81093, 81171, 81332, 81333, 81342, 81344, 81347, 81350, 81494, 81594, 81599, 81610, 81614, 81689, 81690, 81724, 81725, 81777, 81782, 81846, 81903, 81982, 82045, 82061, 82062, 82174, 82183, 82185, 82221, 82272, 82288, 82296, 82321, 82391, 82612, 82789, 82846, 83108, 83446, 83545, 83674, 83675, 83817, 84024, 84156, 84502, 84510, 84526, 84542, 84724, 84861, 84958, 85054, 85148, 85191, 85205, 85206, 85244, 85291, 85602, 85606, 85702, 85833, 85839, 86091, 87030, 87464, 87512, 87622, 87965, 88383, 88384, 88534, 88600, 88829, 88912, 89216, 89385, 89446, 89548, 89802, 90102, 90333, 90339, 90401, 90407, 90847, 90996, 91073, 91096, 91097, 91142, 91190, 91191, 91222, 91291, 91471, 91514, 91791, 91840, 92008, 92063, 92152, 92167, 92180, 92559, 92560, 92632, 92633, 92811, 93185, 93220, 93241, 93595, 93686, 93688, 93733
(Total Student Count:374)

पाँचवीं कक्षा जैन धर्म चन्द्रिका

54056, 56993, 57337, 57339, 57405, 57488, 57573, 57575, 57661, 57674, 57888, 58119, 58292, 58738, 58813, 58957, 59654, 59840, 59903, 60351, 61098, 61206, 61327, 61540, 61558, 61871, 62530, 62771, 62847, 62848, 63059, 63359, 63387, 63495, 63556, 63770, 64153, 64195, 64255, 64670, 64805, 64931, 64933, 65184, 65670, 66025, 66123, 66153, 66178, 66359, 66523, 66844, 66944, 67162, 67378, 67674, 67809, 67811, 67867, 67868, 67917, 68025, 68269, 68388, 68439, 68617, 68873, 68967, 68973, 69117, 69155, 69382, 69446, 69521, 69775, 69951, 69957, 70009, 70258, 70317, 70952, 70955, 70984, 71499, 71632, 71705, 71859, 71916, 71995, 71997, 72021, 72022, 72024, 72132, 72139, 72148, 72242, 72276, 72482, 72542, 72579, 72588, 72596, 72619, 72627, 72628, 72663, 72790, 72800, 72815, 72849, 72871, 72872, 73018, 73038, 73121, 73184, 73216, 73306, 73386, 73387, 73492, 73632, 73708, 73761, 73792, 73927, 74117, 74118, 74134, 74540, 74612, 74665, 74788, 74848, 74879, 74997, 75270, 75393, 75696, 75793, 75840, 76317, 76403, 76449, 76632, 76634, 76644, 76674, 76744, 76850, 76909, 76912, 76914, 76916, 76919, 76920, 76927, 76931, 76934, 76935, 77017, 77023, 77028, 77030, 77298, 77324, 77326, 77393, 77425, 77530, 77570, 77571, 77621, 77625, 77626, 77657, 77661, 77662, 77666, 77668, 77670, 77674, 77677, 77746, 77784, 78132, 78174, 78179, 78196, 78568, 78736, 78831, 78858, 79033, 79045, 79332, 79680, 80022, 80538, 80542, 80546, 80548, 80549, 80972, 81732, 81971, 82294, 82317, 83213, 83378, 83524, 83525, 83626, 83742, 83871, 83969, 84122, 84196, 84450, 84471, 84618, 84637, 84684, 85204, 85286, 85548, 85620, 85652, 86162, 86285, 86331, 87613, 87924, 88161, 88385, 88386, 88584, 89091, 89629, 89788, 89789, 89996, 90514, 90806, 90838, 91098, 91099, 91216, 91223, 91298, 91360, 91443, 92075, 93202, 93291
(Total Student Count:256)

छठी कक्षा जैन धर्म विशारद

50111, 53127, 55378, 55902, 56237, 57024, 57096, 57288, 57291, 57293, 57414, 57522, 57736, 57986, 58810, 58842, 59017, 59093, 59521, 59771, 59857, 59975, 60019, 60348, 60830, 61824, 61827, 61837, 61992, 62017, 62019, 62277, 62398, 62401, 63006, 63036, 63041, 63068, 63106, 63107, 63348, 63358, 63360, 63414, 63584, 64356, 64429, 64436, 64555, 64809, 64810, 64981, 65050, 65073, 65141, 65185, 65186, 65208, 65544, 65546, 65655, 65771, 65844, 66357, 66410, 67303, 67330, 67332, 67347, 67368, 67410, 67412, 67866, 68389, 68779, 68795, 69005, 69202, 69384, 69697, 70007, 70244, 70259, 70976, 71189, 71191, 71425, 71561, 71609, 72130, 72192, 72407, 72465, 72466, 72467, 72468, 72470, 72472, 72474, 72733, 72829, 73324, 73493, 73496, 73700, 74468, 74785, 74786, 74787, 74840, 74893, 74913, 74916, 75038, 75710, 75723, 75965, 76185, 76316, 76590, 77016, 77210, 77932, 77935, 78490, 78737, 78923, 79055, 79062, 80256, 80257, 80260, 80262, 80319, 81111, 81112, 81258, 81330, 81551, 81574, 81696, 81697, 81783, 81836, 81859, 82298, 82342, 82479, 82692, 82780, 82782, 83703, 84115, 84172, 84504, 84764, 85074, 85166, 85168, 85895, 86204, 87259, 87850, 88540, 88716, 89433, 89963, 91065, 91444, 91746, 93208, 93407, 93408, 93621
(Total Student Count:174)

सातवीं कक्षा जैन धर्म कोविद

50282, 50579, 52085, 52781, 56618, 56995, 57034, 57127, 57365, 57521, 57571, 57634, 57717, 58097, 58298, 58327, 58373, 58896, 58904, 59396, 59421, 59423, 59880, 59889, 60335, 60352, 60372, 60406, 60530, 60907, 61172, 61865, 62127, 62158, 62587, 62929, 62978, 64085, 64185, 64187, 64189, 64246, 64374, 64420, 64423, 64451, 64454, 64615, 65267, 65279, 65294, 65455, 65609, 65638, 66115, 66116, 66232, 66528, 66709, 66845, 67336, 67361, 67493, 68044, 68481, 68580, 68997, 69119, 69798, 69843, 69997, 71505, 71623, 71911, 72035, 72189, 73691, 73717, 74617, 74686, 74706, 74791, 75044, 75520, 75588, 75713, 76289, 77375, 77391, 77542,

77701, 78307, 78580, 79369, 79931, 81418, 82290, 82400, 83542, 83833, 84174, 84176, 84701, 85444, 88373, 88840, 90997, 92865 (Total Student Count:108)

आठवीं कक्षा जैन धर्म भूषण

50285, 52151, 52154, 52326, 52594, 52597, 57212, 57526, 57972, 58175, 58376, 58546, 58556, 58902, 59249, 59449, 59466, 59836, 60339, 60365, 60804, 60833, 60894, 60961, 61146, 61165, 61726, 61813, 62030, 62032, 62033, 62754, 62841, 62849, 62866, 62933, 63361, 63502, 64376, 64428, 64446, 64457, 64509, 64514, 64515, 64518, 64527, 64979, 64989, 65283, 65420, 65652, 66118, 66583, 66967, 67300, 67374, 67501, 68378, 68985, 69772, 70243, 70944, 72281, 73719, 74030, 74151, 74545, 74790, 75111, 76295, 76752, 77361, 77473, 77577, 78569, 78738, 79071, 81108, 82404, 82807, 83638, 84513, 88062, 88715, 88889, 89499, 90839

(Total Student Count:88)

नवमीं कक्षा जैन सिद्धान्त प्रभाकर - पूर्वार्द्ध

57028, 57116, 57211, 57846, 57974, 58554, 58557, 58558, 58562, 58845, 59763, 59896, 60850, 61858, 62698, 62702, 63501, 63830, 64119, 64406, 64755, 64869, 65505, 65539, 65562, 65613, 66347, 66808, 68050, 68799, 72116, 72491, 72786, 72788, 75639, 76156, 76436, 76868, 79073, 82811, 82812, 83753, 84734, 84841, 85574, 86196, 88061, 89721, 91143 (Total Student Count:49)

दसवीं कक्षा जैन सिद्धान्त प्रभाकर - उत्तरार्द्ध

58380, 59633, 61102, 61610, 61873, 62106, 62248, 62783, 63408, 64930, 65362, 66013, 66187, 67459, 67495, 70477, 72492, 73388, 73474, 74480, 74670, 76150, 76446, 80456, 83752, 85115 (Total Student Count:26)

ग्यारहवीं कक्षा जैन सिद्धान्त रत्नाकर-पूर्वार्द्ध

54048, 57741, 57902, 58057, 58374, 58389, 59754, 59773, 62039, 62040, 62041, 62042, 62221, 63503, 63504, 63505, 63527, 64445, 64666, 64895, 65724, 66253, 66254, 66387, 67464, 67665, 68318, 70364, 70904, 71331, 74684, 76257, 78163, 81423, 83970, 85219 (Total Student Count:36)

बारहवीं कक्षा जैन सिद्धान्त रत्नाकर-उत्तरार्द्ध

53131, 57579, 57948, 57952, 58114, 59888, 60536, 63804, 64546, 64550, 64763, 65633, 69150, 70342, 71624, 72000, 72339, 74029, 74957, 79968 (Total Student Count:20)

परिणाम रोका गया

1871, 58160, 58750, 60469, 60822, 61329, 61431, 61527, 61528, 61588, 62184, 62233, 63982, 64392, 64929, 65372, 65444, 65456, 65468, 65469, 65558, 66190, 66315, 66570, 67619, 68170, 68273, 68528, 69551, 70316, 71421, 71903, 72356, 73567, 73666, 74455, 74947, 75147, 75341, 75823, 75842, 75907, 76310, 76393, 76496, 76497, 77607, 77841, 77868, 78623, 79495, 79941, 80670, 80940, 81009, 82044, 82086, 82110, 82826, 82888, 83484, 83654, 83663, 83858, 83859, 83952, 84512, 85295, 85396, 85846, 85847, 86083, 86092, 86230, 86264, 86266, 86276, 86289, 88613, 88878, 89093, 89237, 89395, 89422, 90290, 90355, 90359, 90380, 90381, 90646, 90723, 91495, 92356 (Total Student Count:93)

आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत	कुल केन्द्र
8378	5007	3416	68.22%	280

सुरेश बी. चोरडिया	नवरतन गिड़िया	धर्मचन्द जैन	शिक्षण बोर्ड
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार	कार्यालय
9444028841	9414100759	9351589694	0291-2630490

बोर्ड की आगामी परीक्षा 11 जनवरी, 2015 को

जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा)

कक्षा 1 से 6 तक के लिए

समाचार विविधा

कोटा नगरी में आचार्यप्रवर के चातुर्मास में पर्युषण के पश्चात् भी मासक्षपण तप की निरन्तरता

अब तक आठ मासक्षपण तप पूर्ण, शताधिक 9 दिवसीय तप

29 जनवरी 2015 को होंगी दो दीक्षाएँ

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास निरन्तर तपाराधन एवं ज्ञानाराधन में अग्रसर है। चातुर्मास प्रवेश से ही एकाशन, बियासन, उपवास आयंबिल, नींवी, दया तथा नौ दिवसीय तप की लड़ी का शुभारम्भ हुआ, जो नियमित रूप से गतिशील है। **अब तक शताधिक नौ दिवसीय तपस्याएँ हो चुकी हैं।**

छह मासक्षपण तप के समाचार गत माह के अंक में प्रकाशित हो चुके हैं। उनमें श्रीमती हीनाजी वैद धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र जी वैद ने 42 दिवसीय तपस्या पूर्ण की थी तथा श्रीमती इन्द्राजी जैन धर्मपत्नी श्री गिरिराज जी जैन अरनेठा वाले ने मासक्षपणोपरान्त 31 दिवसीय तप किया था। (पूर्व अंक में हुई अशुद्धि पर हमें खेद है।) उसी क्रम में सातवें एवं आठवें मासक्षपण तप का उल्लेख इस प्रकार हैं-(7) श्रीमती सुनीताबाईजी (पिंकीजी) धर्मसहायिका सुश्रावक श्री नीरज जी जैन सूरवाल वाले ने तलवण्डी कोटा में 2 सितम्बर को 31 दिवसीय तपस्या पूर्ण की। (8) श्रीमती संतोषबाईजी धर्मसहायिका श्री देवीशंकरजी ने मासक्षपण की तपस्या 11 सितम्बर को पूर्ण की। पूर्व में श्री देवी शंकरजी मासक्षपणोपरान्त तप एवं 15 दिवसीय तप सम्पन्न कर चुके हैं। पर्वाधिराज की समाप्ति के साथ दर्शन-वंदन, क्षमापना, विनति, शेखेकाल फरसने आदि की भावना से समूह तथा संघ रूप में अनेक श्रावक-श्राविकाओं का पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में आगमन हुआ। यहाँ 1 सितम्बर को नदबई संघ, 2 सितम्बर को अलीगढ़-रामपुरा संघ, पाली से युवक संघ, 6 सितम्बर को धनोप संघ, 7 को जोबनेर संघ, हिण्डौन संघ, सवाईमाधोपुर संघ, 8 सितम्बर को विजयनगर संघ, बीजापुर संघ, धुलिया संघ, 9 सितम्बर को चेन्नई संघ, बजरिया संघ, 10 सितम्बर को गोपालगढ़-भरतपुर संघ, 13 सितम्बर को चौथ का बरवाड़ा संघ, खेरली

संघ, बालोतरा संघ, 14 को मण्डावर संघ, 16 सितम्बर को सुमेरगंज मण्डी संघ, भीलवाड़ा संघ, 17 सितम्बर को देई संघ, जलगांव संघ, 19 सितम्बर को लासूर स्टेशन संघ, 20 सितम्बर को बीकानेर संघ, 21 सितम्बर को जयपुर से महावीर नगर संघ, बजरिया संघ (पुनः), 25 सितम्बर को हिण्डौन से 75 से अधिक श्रद्धालु भक्तजन दीक्षा एवं चातुर्मास की संयुक्त रूप से पुरजोर विनति हेतु उपस्थित हुए। हिण्डौन में रात्रिभोजन-त्याग के 800 संकल्प-पत्र भरे जा चुके हैं। 26 सितम्बर को अलीगढ़-रामपुरा संघ (पुनः) चातुर्मासार्थ विनति लेकर उपस्थित हुआ। श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन प्रतिदिन बना रहता है। अतः सुदूर एवं समीपस्थ क्षेत्रों से समूह के रूप में या अपने स्तर पर अनेक ग्राम-नगरों से भक्तजनों का पदार्पण हुआ है।

4 सितम्बर को राज्य सरकार के पंचायती राज ग्रामीण विकास मंत्री श्री गुलाबचन्द जी कटारिया पधारे तथा प्रवचन श्रवण का पूरा लाभ लिया। प्रवचन पश्चात् आचार्य प्रवर के दर्शनों का लाभ पंक्तिबद्ध होकर लिया। पूज्यश्री ने संक्षेप में फरमाया कि जनता जनार्दन ने विश्वास कर जो उत्तरदायित्व आपको सौंपा है उसे हर वर्ग की सेवा कर निभायें। जैनत्व की मोटी पहचान रात्रिभोजन का त्याग है, अतः जहाँ तक संभव हो, जितना पालन कर सको उतना अवश्य करें। 6 सितम्बर को राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत, कांग्रेस अध्यक्ष श्री सचिन जी पायलट, पूर्व केबिनेट मंत्री श्री शांतिलाल जी धारीवाल, कोटा नगर में कांग्रेस के लोकप्रिय युवा नेता श्री पंकज जी मेहता आदि पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुए। श्री अशोक जी गहलोत प्रायः आचार्यप्रवर के दर्शनों का लाभ लेते रहते हैं। उनका कथन है कि अन्य स्थानों पर तो मैं बुलावे पर जाता हूँ, पर पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के चरणों में मेरे कदम स्वतः ही बढ़ जाते हैं।

13 सितम्बर को संचालन समिति एवं कार्यकारिणी की बैठक रखी गई। 14 सितम्बर को आम सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना सहित अनेक महानुभावों का पदार्पण हुआ। 16 सितम्बर को भीलवाड़ा से पधारे श्रावक-श्राविकाओं ने भीलवाड़ा में रहते हुए साल भर हेतु रात्रिभोजन-त्याग के नियम पूज्यप्रवर के पावन मुखारविन्द से ग्रहण किये। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 52 वें दीक्षा-दिवस के पावन प्रसंग के उपलक्ष्य में 17 सितम्बर से 65 से अधिक भाई-बहनों ने एकाशन के सिद्धि तप की आराधना का शुभारम्भ किया है जिसकी सम्पूर्ति 29 अक्टूबर 2014 को होगी। 19 से 21 सितम्बर तक श्राविका मण्डल का शिविर एवं राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। 21 सितम्बर को बजरिया से पधारी बहनों ने एक वर्ष/जीवन भर के लिये रात्रिभोजन-त्याग का नियम

अंगीकार किया तथा कषाय विजय का लक्ष्य बनाया। 27 सितम्बर को पूज्य गुरुदेव ने विगत 3-4 वर्षों से ज्ञानार्जन कर रहे **ज्ञानार्थी बंधु ओशो (ओमप्रकाश), ज्ञानार्थी बंधु रवि की भागवती दीक्षा 29 जनवरी 2015 को आयोजित किए जाने की स्वीकृति फरमाई।** इससे संघ में हर्ष की लहर दौड़ गई। ज्ञानार्थी बंधु श्री ओमप्रकाश जी के माता-पिता श्री महावीर प्रसाद जी जैन एवं श्रीमती मंजू जी जैन मौजपुर वाले पीपाड़ ने पूज्य श्री के बारह व्रत अंगीकार कर अनुपम भेंट दी।

परमपूज्य आचार्यप्रवर दर्शनार्थ आने वाले श्रावक-श्राविकाओं को रात्रि-भोजन त्याग की प्रभावी प्रेरणा कर रहे हैं। जिससे अनेक भाई-बहनों ने रात्रिभोजन त्याग के नियम स्वीकार कर गुरुदेव के अभियान को प्रगति प्रदान की है। प्रार्थना-प्रवचन, विशेष कक्षा, शास्त्र-वाचन, सीखने-सिखाने का क्रम, उभयकाल प्रतिक्रमण एवं संवर-आराधना के कार्यक्रम निरन्तर चल रहे हैं। 20 सितम्बर को बाहर से पधारे अनेक संघ समूहों के कारण पर्युषण पर्वाधिराज पर्व जैसी उपस्थिति रही।

तप-त्याग का क्रम निरन्तर प्रवाहमान है। 29 सितम्बर को श्रीमती मुन्नीदेवी जैन धर्मपत्नी श्री नेमीचन्द जी जैन बाबई वाले, छावनी कोटा ने 27 की तपस्या के प्रत्याख्यान किये हैं।

कोटा संघ बाहर से पधारने वाले दर्शनार्थियों के आतिथ्य का लाभ अंतरंगता से ले रहा है। संघ की स्वधर्मि-वात्सल्य भावना प्रमोदजन्य है। संघाध्यक्ष श्री राजेन्द्रसिंहजी मेहता एवं मंत्री श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन तथा अन्य सभी सहयोगी कार्यकर्ताओं की समयदान एवं सार संभाल की भावना अनुकरणीय है।

उपाध्यायप्रवर एवं शासनप्रभाविकाजी के सान्निध्य में धर्माराधन एवं तपाराधन में उत्साह की निरन्तरता

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 के पावन सान्निध्य में अब तक 7 मासक्षपण पूर्ण हो गये हैं। सितम्बर-2014 के जिनवाणी अंक में प्रकाशित 5 मासक्षपण की सूचना के क्रम में 2 नये मासक्षपण इस प्रकार हैं- 6. श्री चंचलमल जी सुपुत्र स्व. श्री अनराजजी बोथरा ने 11 सितम्बर को 30 दिवसीय मासक्षपण तप पूर्ण किया। साथ ही एक वर्ष के शीलव्रत का नियम अंगीकार किया। इस अवसर पर उनके लघु भ्राता श्री शांतिलालजी बोथरा ने अठाई तप तथा उन्होंने एवं उनकी धर्मपत्नी

श्रीमती बसन्तीदेवीजी ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। 7. श्रीमती प्रेमलताजी धर्मपत्नी श्री नौरतनमलजी चौधरी ने 12 सितम्बर को 31 दिवसीय तपस्या पूर्ण की। इस अवसर पर उनके माता-पिता श्रीमती दरियाव देवीजी एवं श्री सुमतमलजी चतुर मेहता ने आजीवन शीलव्रत का नियम स्वीकार किया।

12 सितमबर को श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल जोधपुर की वार्षिक संगोष्ठी का आयोजन पावटा स्थानक में हुआ। शक्तिनगर संघ ने संगोष्ठी का लाभ लिया। 12 एवं 13 सितम्बर को दर्शन-वंदन एवं प्रवचन श्रवण हेतु चेन्नई संघ, 17 सितम्बर को धुलिया संघ उपस्थित हुआ। संघ द्वारा धुलिया की मुमुक्षु बहन शोभा जी खिंवसरा का अभिनन्दन किया गया। 19 सितम्बर को श्रीमती संगीताजी धर्मपत्नी श्री शांतिलाल जी सुराणा लाम्बा जाटान ने 28 दिवसीय तप के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

20 सितम्बर को पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री गुलाबचन्द जी कटारिया ने पूज्य उपाध्यायप्रवर के दर्शन-वंदन का लाभ लिया एवं श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. के प्रवचनों का श्रवण किया। श्री कटारिया साहब ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमें संस्कारों के माध्यम से जैनत्व की पहचान बनाये रखना चाहिए। 21 एवं 22 सितम्बर को जलगांव संघ के 60 स्वाध्यायी एवं 60 श्रावक-श्राविकाओं ने दर्शन-वंदन-प्रवचन श्रवण का लाभ लिया तथा पूरे दो दिन धर्म स्थानक में रहकर धर्माराधना की। इस दृष्टि से जलगांव का संघ असाधारण संघ के नाम से जाना गया। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने जलगांव संघ की गतिविधियों में वृद्धि हेतु विशेष प्रेरणा की। 28 सितम्बर को युवक-युवतियों के संस्कार शिविर में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री कंवरलाल जी ने उद्बोधन दिया।

इन दिनों मुनिश्री का व्याख्यान उत्तराध्ययन सूत्र पर चल रहा है। स्वरचित पद्यों के माध्यम से उत्तराध्ययन की सुन्दर व्याख्या की जा रही है। शक्तिनगर के श्रावक-श्राविका समागतों के आवास एवं आतिथ्य सेवा में पूरे मनोयोग से तत्पर हैं।

तत्त्वचिन्तक मुनि श्री के सान्निध्य में साधना की निरन्तरता

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 तथा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 का चातुर्मास तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान, पौषध-संवर आदि की आराधना के साथ उत्साहपूर्वक चल रहा है। आपश्री की सन्निधि में महावीर नगर में 1 से 11 सितम्बर तक वीतराग ध्यान-शिविर का

आयोजन हुआ। महावीर नगर में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास चल रहा है। 13 सितम्बर को जयपुर में आयोजित अहिंसा सम्मेलन में समागत प्रतिभागीजन श्री डी.आर.मेहता साहब के साथ मुनि श्री की सेवा में उपस्थित हुए, जिन्हें मुनि श्री ने सम्बोधित किया। इस चातुर्मास में श्रीमती रेणु जी हीरावत, श्रीमती कविता जी बैद, श्री नवरतन जी लूंकड़ एवं श्रीमती विमल जी सुकलेचा ने मासक्षपण तप किया। यहाँ अठाई एवं तेले की अनेक तपस्याएँ हुईं। तेले की लड़ी चातुर्मास काल में बराबर चल रही है। विभिन्न ग्राम नगरों से दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है।

महासती मण्डल के सान्निध्य में धर्माराधना

सरस्वती नगर, जोधपुर- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा., महासती श्री सुमनलताजी म.सा. आदि ठाणा 10 के सान्निध्य में धर्म-ध्यान एवं तप-त्याग की निरन्तरता बनी हुई है। संवत्सरी महापर्व के अवसर पर (सितम्बर माह में प्रकाशित रिपोर्ट के अतिरिक्त) सरस्वती नगर के स्वाध्याय भवन में अच्छी संख्या में तेले एवं उपवास के प्रत्याख्यान हुए। सायंकाल प्रतिक्रमण में 300-350 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर क्षमायाचना की। दूसरे दिन महासतीवृन्द से क्षमायाचना हेतु आने वाले श्रावक-श्राविकाओं का तांता लगा रहा। सम्प्रति महासती श्री सुमनलताजी म.सा. के प्रवचन 'सुख कहाँ' विषय पर चल रहे हैं। सामूहिक भोज में रात्रिभोजन त्याग हेतु प्रेरित किया जा रहा है। 7-8 बहनों के एकाशन से सिद्धि तप चल रहा है। दान/द्रव्य/सामायिक से भद्रोत्तर तप चल रहा है। आयंबिल, नींवी आदि के प्रत्याख्यान नियमित हो रहे हैं।

चौथ का बरवाड़ा- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में तप-त्याग एवं धर्माराधन का क्रम निरन्तर बना हुआ है। पर्युषण में नवकार मंत्र का अखण्ड जाप सम्पन्न हुआ तथा अनेक धार्मिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। संवत्सरी महापर्व पर प्रतिष्ठान बंद रखे गए। यहाँ तेले, पचोले, अठाई, नौ, ग्यारह एवं सोलह दिवसीय तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। क्षमापना के प्रसंग पर वैलूर, सवाईमाधोपुर, बजरिया, आदर्शनगर, आवासन मण्डल, कुश्तला, पचाला, चौरु, अलीगढ़, उनियारा, देई, समिधी, जरखोदा, सुमेरगंजमण्डी आदि श्रीसंघों ने प्रवचन श्रवण कर धर्मलाभ लिया। यहाँ एकाशन, आयंबिल, उपवास आदि की तपस्याएँ नियमित रूप से चल रही हैं। महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. द्वारा शास्त्र एवं जैन रामायण पर प्रवचन फरमाया जा रहा है। पर्युषण पर महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा. ने अंतगड सूत्र का वाचन किया तथा महासती श्री रक्षिताजी म.सा. ने विशेष प्रवचन फरमाने के साथ उत्तराध्ययन सूत्र के 23 वें अध्ययन पर प्रकाश डाला।

मालवीयनगर, जयपुर- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 पर्युषण पर्व तक मालवीय नगर विराजे। व्याख्यात्री महासतीजी के स्वास्थ्य में काफी सुधार है। महासती जी के सान्निध्य में बेले, तेले, चार,पाँच, छह, आठ, ग्यारह आदि की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। एकाशन की 31 अठाई, आयंबिल की एक अठाई सम्पन्न हुई तथा 5 उपवास के एकान्तर तप चल रहे हैं। भाई-बहनों में एक पचरंगी तथा बहनों में भिक्षु दया सम्पन्न हुई। आठ दिन नवकार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ। श्री विमलचन्द जी जैन-भरतपुर ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया।

अहमदाबाद- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में शाहीबाग में चल रहे चातुर्मास में 15-16 अगस्त को अविवाहित बालिकाओं एवं युवतियों का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 150 बालिकाओं एवं युवतियों ने भाग लिया। इस शिविर में लक्ष्य बनाओ, कदम बढ़ाओ, 'मेरे साथ ही ऐसा क्यों?', 'अदृश्य जगत की अद्भुत शक्ति', 'आपकी समस्या-हमारा समाधान' विषयों पर प्रकाश डाला गया। शिविर का अच्छा प्रभाव पड़ा। पर्युषण पर्व के अवसर पर प्रातः 7.30 बजे से 8.30 बजे तक युवक-युवतियों के लिए परिवार, माता-पिता, बेटी-बेटे, सास-बहू, पति-पत्नी आदि विषयों पर प्रेरणाप्रद उद्बोधन हुए। जिसमें लगभग 200 से 250 के बीच उपस्थिति रहती थी। व्रत-नियम भी स्वीकार किए गए। अंतगडदसासूत्र पर पर्युषण में श्रोता वर्ग से 10 प्रश्न किए जाते थे। दोपहर में 2 से 4 बजे तक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम चला। दो बार सामूहिक जाप का आयोजन हुआ तथा आठों दिन अखण्ड जाप भी जारी रहा। पर्युषण के प्रथम तीन दिनों में लगभग 250-275 तेले तथा अंतिम तीन दिनों में 150 से 175 तेले हुए। संवत्सरी के दिन 440 पौषध हुए। श्री अरूण जी भण्डारी ने 55 दिवसीय तप के प्रत्याख्यान 3 सितम्बर को ग्रहण किए। श्री नंदलाल जी साल्वी (बुनकर) ने 33 दिवसीय तप किया। यहाँ 16, 11 एवं 9 दिवसीय तप के साथ 20 अठाई तप हुए हैं। बेला-तेला, चोला-पचोला एवं 6 दिवसीय तप के अतिरिक्त एकाशन, दयाव्रत आदि काफी संख्या में हुए हैं। संवत्सरी के दिन तीन स्थानों पर प्रतिक्रमण की व्यवस्था रही। श्राविका मण्डल की प्रत्येक सोमवार, बुधवार एवं शुक्रवार को दोपहर में 2 से 3 बजे तक, युवक परिषद् की रविवार को प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक कक्षा चलती है। प्रत्येक रविवार को जैन शाला प्रातः 9.30 से 11 बजे तक चल रही है। 1 से 4 अक्टूबर 2014 तक श्राविका मण्डल का धार्मिक शिविर आयोज्य है। उल्लेखनीय है कि महासती जी के पालनपुर से अहमदाबाद तक के 150 किलोमीटर के विहार में प्रतिदिन युवक रत्नों ने सेवाएँ दी थी।

बैंगलोर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में '24 तीर्थंकर की आराधना एवं 20 बोलों की साधना' कार्यक्रम में 4 श्रावकों एवं 98 श्राविकाओं ने भाग लेकर अपने जीवन को उज्ज्वल बनाया। 24 दिन बहनों ने 40 नियमों का पालन किया। इस कार्यक्रम में सहयोग हेतु एक वैयावच्च टीम का भी गठन हुआ, जिसमें प्रतिदिन 6-6 श्राविकाओं ने पूर्ण रूप से अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। 16 एवं 17 अगस्त को युवक-युवतियों की कार्यशाला Fruitful Inspiration in Life विषय पर आयोजित हुई, जिसमें लगभग 500 जनों ने भाग लिया। इसमें मौखिक उपदेश न दिया जाकर लगभग 70 अच्छी बातों के लिए उत्साहित किया गया। सभी को 40 नियमों का प्रपत्र दिया गया, जिसमें से सभी ने यथाशक्ति प्रत्याख्यान लिए। 20 अगस्त को श्रीमती कविता जी सुराणा का संथारा परिपूर्ण हुआ। पर्युषण पर्व अखण्ड नवकार मंत्र के जाप के साथ तथा तप और जप की आराधना के साथ सम्पन्न हुआ। पर्युषण में लगभग 300 तेले और संवत्सरी को लगभग 350 पौषध हुए। क्षमापना के कार्यक्रम में भी लगभग 350-400 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

बैंगलोर के 15 उपनगरों की 375 बहनों ने सप्ताह में एक बार आकर महासती मण्डल की सेवा में ज्ञानाभ्यास किया। आगम एकेडमी का यह कार्यक्रम 5 सप्ताह तक चला। अंतगड सूत्र, भजन तथा तत्त्व के विषय पर रोचक कक्षाएँ हुईं। अरिहंत शासन एकेडमी कार्यक्रम के अन्तर्गत 6 से 13 वर्ष के लगभग 200 बालक-बालिकाओं ने प्रत्येक रविवार को ढाई घण्टे ज्ञानाभ्यास किया। राइट स्टेप्स कार्यक्रम में प्रत्येक रविवार को 14 से 25 वर्ष के 225 युवक-युवतियों ने भाग लेकर जैन धर्म पर श्रद्धा एवं संस्कारों का विकास किया।

साप्ताहिक तप-आराधना के अन्तर्गत प्रथम सप्ताह में 900 एकाशन, द्वितीय में 500 आयंबिल, तृतीय में 600 चार खंदों के पालन, चतुर्थ में 600 रस-परित्याग (तीन विगय त्याग), पाँचवें सप्ताह में 200 नीवी, छठें में 900 बियासना, सातवें में 1600 उपवास की आराधना हुई। पर्युषण एवं उसके अनन्तर 600 तेले, 42 अठाई व नौ, 1 सोलह, 18 पचोले, 7 ग्यारह, 1 इक्कीस, एवं 1 मासक्षपण तप सम्पन्न हुए। विशेष प्रेरणा से संवत्सरी को 715 पौषध हुए, जिसमें युवक-युवतियों की भागीदारी अधिक रही। महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.के जन्म दिवस पर वर्ष भर में 30000 पौरसी करने के प्रत्याख्यान हुए।

काचीगुड़ा-हैदराबाद- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में 24 तीर्थंकरों की आराधना, युवति-संस्कार शिविर आदि कार्यक्रम उत्साह से सम्पन्न हुए। यहाँ जिनशासन की अच्छी प्रभावना हो रही है। पर्युषण पर्व के अवसर पर हैदराबाद ग्रेटर संघ के तत्त्वावधान में आशातीत तप-त्याग सम्पन्न हुए। 40 अठाई, 200

तेले, 300 पौषध सम्पन्न हुए। सामूहिक दया आराधना हुई। नवकार महामंत्र का अखण्ड जाप आठों दिन चला। महासती श्री निष्ठा जी ने अंतगड सूत्र का वाचन रोचक ढंग से किया।

सतारा (महा.)- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा., महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 की सन्निधि में चातुर्मास के प्रारम्भ से एकाशन, आयंबिल एवं तेले की लड़ी चल रही है। एक घण्टे का जाप नियमित चल रहा है, जो चातुर्मास पर्यन्त जारी रहेगा। प्रार्थना प्रवचन, प्रतिक्रमण, ज्ञानार्जन प्रतियोगिताओं, प्रश्नमंच आदि में सभी उत्साह एवं उमंग से भाग ले रहे हैं। पर्युषण के आठ दिन प्रतिदिन 12-12 घण्टे का जाप हुआ। अठाई, 28 तेले, चौला, नौ, ग्यारह की तपस्या के साथ यहाँ एकान्तर उपवास का मासक्षपण, एकाशन, बियासन के 9 मासक्षपण तप सम्पन्न हुए। 9 दिनों तक सामूहिक उपवास, एकाशन, सामायिक साधना सम्पन्न हुई। प्रतिदिन अनेक नियम ग्रहण किए गए। पर्युषण के आठ दिन 40 नियम ग्रहण किए गए। यह चातुर्मास सतारा के नये स्थानक में चल रहा है।

कानपुर- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के चातुर्मास में भव्यात्माओं ने अनेकविध जप-तप एवं साधना कर अपनी आत्मा का उत्थान किया है। बियासन, एकाशन, आयंबिल, उपवास की लड़ी निरन्तर चल रही है। पर्युषण महापर्व पर संवर, पौषध एवं अठाई तप सम्पन्न हुए। आठ दिन नवकार मंत्र की आराधना हुई। महासती मण्डल के मधुर व्यवहार से तेरापंथी, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी समाज के भाई-बहिन प्रभावित हैं। अंतगडसूत्र का वाचन महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ने किया तथा प्रवचन में महासती श्री संयमप्रभाजी का पूर्ण सहयोग रहा। यहाँ अनेक प्रकार की साप्ताहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। कई भाई-बहन बड़ी साधु वंदना, सामायिक-प्रतिक्रमण, लघुदण्डक, जीवधड़ा, गुणस्थान आदि थोकड़े तथा कल्याण मंदिर स्तोत्र सीखते हुए ज्ञानाराधना का क्रम बनाये हुए हैं।

भीलवाड़ा- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा., महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व के दौरान श्रावक-श्राविकाओं एवं बालक-बालिकाओं हेतु सात-सात प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। प्रवचन के समय लगभग 1000 भाई-बहिनों की गरिमामय उपस्थिति रही। संवत्सरी के दिन सूर्य महल में प्रवचन रखा गया, जहाँ लगभग 2500 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति थी। प्रातः 8.30 बजे अंतगडसूत्र का वाचन महासती श्री संवेगप्रभाजी द्वारा किया गया। 9.30 बजे से 11.00 बजे तक महासती श्री विवेकप्रभाजी एवं महासती रुचिताजी म.सा. के प्रवचन सम्पन्न हुए। दिन में कल्पसूत्र का वाचन महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा. द्वारा कराया गया। नवरंगी, पचरंगी, धर्म

चक्र तथा अखण्ड नवकार मंत्र का जाप पर्युषण पर्व में सम्पन्न हुए। संवत्सरी के दिन लगभग 250 सामूहिक पौषध हुए। इस चातुर्मास में गत वर्षों की तुलना में सर्वाधिक तपस्याएँ हुईं जो अहिंसा भवन के लिए कीर्तिमान है। यहाँ 25 बेले, 300 तेले, 5 चोले, 15 पचोले, 2 छह, 4 सात, 15 अठाई, 11 नौ, 2 दस, 7 ग्यारह, 1 चौदह, 1 पन्द्रह एवं 1 मासक्षपण की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। इसके अतिरिक्त एकाशन, आयंबिल, नींवी की अठाइयाँ तथा एकाशन के 13 मासक्षपण एवं उपवास के 15 एकान्तर तप सम्पन्न हुए। वर्तमान संघाध्यक्ष श्री दिनेशकुमार जी बम्ब ने प्रथम बार अध्यक्ष पद पर रहते हुए अठाई तप करने का गौरव प्राप्त किया। श्रीमती विमलादेवी जी मेहता ने 31 दिवसीय मासक्षपण तप चौदह सितम्बर को पूर्ण किया। आध्यात्मिक वनडे मैच में 9-9 प्रतियोगियों की ग्यारह टीमों ने भाग लिया। 8 से 12 सितम्बर तक श्राविकाओं का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 125 बहनों ने भाग लिया।

पाली- व्याख्यात्री महासती श्री निरंजनाजी म.सा., श्रद्धेय श्री पदमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 की सन्निधि में यह चातुर्मास तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान एवं साधना-आराधना के साथ चल रहा है। प्रतिदिन तेला, उपवास, आयंबिल एवं एकाशन की लड़ियाँ चल रही हैं। पर्युषण में प्रतिदिन अच्छी संख्या में उपवास सम्पन्न हुए। संवत्सरी के दिन 80 पौषध तथा 350 प्रतिक्रमण हुए। सुश्रावक श्री मेघराजजी लोढ़ा की पुत्रवधू श्रीमती चंदनाजी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री बंसतजी लोढ़ा ने मासक्षपण तप सम्पन्न किया। पर्युषण पश्चात् 4 सितम्बर को श्रावकों द्वारा धर्मगोठ आयोजित की गई। महासती मण्डल के प्रवचन श्रोताओं को रुचिकर लग रहे हैं। महासती श्री पद्मप्रभाजी एवं ज्योतिप्रभाजी ने 'वर्तमान में सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग?'', 'जन एवं जैन में अंतर', 'शील और शैली', 'ज़िन्दगी जीने के तरीके' (सात सूत्र) 'Super Doctor' आदि विषयों पर प्रवचन फरमाया। यहाँ पर्युषण काल में एक ग्यारह रंगी, एक पचरंगी सम्पन्न हुई। अष्टकर्म नाशन तप, चन्द्रकला तप, भद्रोत्तर तप भी सम्पन्न हुए।

श्राविका मण्डल का कोटा में 'अध्यात्म-चेतना आयाम' शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 19 से 21 सितम्बर, 2014 तक त्रिदिवसीय अध्यात्म-चेतना-आयाम शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में जोधपुर, जयपुर, पाली, कोलकाता, पीपाड़, सवाईमाधोपुर, अलीगढ़-रामपुरा, सुमेरगंजमण्डी, कुश्तला, बारां, कोटा, बून्दी, आलनपुर, भरतपुर, गंगापुरसिटी,

सिंगोली, मकराणा आदि विभिन्न क्षेत्रों से 400 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

पूज्य गुरुदेव की कषाय-विजय की प्रेरणा को ध्यान में रखते हुए यह शिविर 'कषाय-विजय' विषय को लेकर आयोजित किया गया। प्रातःकालीन सत्र में सुश्री नेहाजी चोरड़िया, जलगांव द्वारा शुद्ध सामायिक आराधन के साथ ध्यान का अभ्यास करवाया गया।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा कषाय विजय हेतु प्रवचन में प्रभावी प्रेरणा की गई। प्रतिदिन प्रवचन के पश्चात् श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. का इसी विषय को लेकर कक्षा के रूप में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अध्यापन में (श्रीमती) डॉ. ताराजी डागा, जयपुर एवं श्री प्रकाशजी सालेचा, जोधपुर द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। नियमित प्रतियोगिताओं के माध्यम से कार्यक्रम प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। अतः समापन के दिन अनेक श्राविकाओं ने कषाय विजय एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रत्याख्यान ग्रहण किये।

शिविर समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ समाज-सेवी श्री पंकजजी जैन, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पवनजी जैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक-कोटा विराजमान थे। श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रसिंहजी मेहता एवं संघमंत्री श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन भी उपस्थित रहे। शिविर के सफल आयोजन में कोटा की श्रीमती सुनीताजी नवलखा, श्रीमती मंजूजी लुंकड़, श्रीमती रेखाजी हिंगड़, श्रीमती कुसुमजी जैन आदि श्राविकाओं तथा कोटा संघ के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं का महनीय सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर में पधारने वाले शिविरार्थियों की आवास-निवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था कोटा संघ द्वारा समुचित रूप से की गई।

श्राविका मण्डल की महासचिव ने शिविर-रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन शिविर प्रभारी श्रीमती मोहनकौरजी जैन ने किया। *-बीना मेहता, महासचिव*

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर एवं ब्यावर के चुनाव सम्पन्न

अजमेर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर की आमसभा की बैठक 15 सितम्बर, 2014 को स्वाध्याय भवन, पुष्कर रोड़, अजमेर में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता श्री पारसमलजी रांका ने की। बैठक में रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-जोधपुर, रत्नसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री हस्तीमलजी डोसी-मेड़तासिटी, संयुक्त महामंत्री श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल-जोधपुर का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ।

बैठक में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना द्वारा शाखा नियमावली एवं संघ विधान के प्रमुख प्रावधानों की जानकारी दी गई जिसका अनुमोदन हर्ष-हर्ष, जय-जय के साथ किया गया।

अजमेर संघ के सभी सदस्यों के अनुरोध के अनुरूप संघाध्यक्ष महोदय ने परामर्शदाता मण्डल एवं नई कार्यकारिणी हेतु निम्नलिखित व्यक्तियों के नाम प्रस्तावित किये :- **परामर्शदातागण**-श्री मूलराजजी चौधरी(पूर्व शाखाध्यक्ष),श्री पारसमलजी रांका(निवर्तमान अध्यक्ष), श्री नेमीचन्दजी कटारिया (निवर्तमान मंत्री), **अध्यक्ष**-श्री विवेकजी महनोत, **मंत्री**- श्री चन्द्रप्रकाशजी कटारिया, **कोषाध्यक्ष**-श्री अशोकजी गाँधी। शेष पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों का सहवरण नवमनोनीत पदाधिकारीगण परामर्शदाता मण्डल के साथ विचार-विमर्श कर करेंगे। उपर्युक्त नामों का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया। संघाध्यक्ष महोदय ने यह भी घोषणा की कि अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पारमार्थिक ट्रस्ट इन्दौर की अजमेर स्थित सम्पत्ति केसरीसिंहजी की हवेली के प्रबन्ध का कार्य ट्रस्ट प्रतिनिधि के रूप में सुश्रावक श्री अनिलजी दुधेड़िया करेंगे।

ब्यावर- 17 मार्च, 2014 को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, ब्यावर की बैठक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना की अध्यक्षता व शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा एवं संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा की सन्निधि में सम्पन्न हुई, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का सर्वानुमति से मनोनयन किया गया। **परामर्शदाता**- श्री शांतिलाल जी सुराणा, श्री मूलचन्द जी भण्डारी, श्री किस्तूरचन्द जी डोसी, श्री मिलापचन्द जी बुरड़, श्री विजयराजजी सिंघवी, **अध्यक्ष**- श्री विमलचन्द जी सुराणा, **उपाध्यक्ष**- श्री महेन्द्र जी गुलेच्छा, **मंत्री**- श्री वैभव जी संकलेचा, **कोषाध्यक्ष**- श्री विजयराज जी कोठारी।

मेवाड़ में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 12 से 14 अगस्त तक मेवाड़ क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें स्वाध्याय संघ के सह संयोजक श्री राजेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, मेवाड़ शाखा संयोजक श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा, कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी-जोधपुर तथा श्रीमती संगीता जी नागौरी-भीलवाड़ा की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रचार कार्यक्रम में ब्यावर, धनोप, भीलवाड़ा, पारसोली, बेगूं, सिंगोली, मोरबंध बांध,

बाड़ी, अरनोदा, भादसोड़ा, सुरपुर, कपासन, दरीबा माइन्स आदि क्षेत्रों में प्रवास हुआ। प्रचार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायी बुलाने की पुरजोर प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 13 मांगें प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से 9 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण सेवा स्वीकृति भी प्राप्त की गई। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवारीय संस्कार शिविरों की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए नये केन्द्र प्रारम्भ किए गए तथा आगामी परीक्षा हेतु फार्म भरवाए गए।

-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक

जोधपुर में रविवारीय संस्कार शिविर निरंतर गतिमान

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचंद जी म.सा. के जोधपुर वर्षावास के बाद से जोधपुर में निरंतर रविवारीय संस्कार शिविर 12 केन्द्रों शक्तिनगर, पावटा, महामंदिर, घोड़ों का चौक, सिंहपोल, प्रताप नगर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, नेहरू पार्क, सरस्वती नगर, गुलाब नगर, गोल्फ फोर्स, कुड़ी हाउसिंग बोर्ड में गतिमान हैं। शिविर में बोर्ड पाठ्यक्रम के अनुसार सभी बालक-बालिकाओं को ज्ञानार्जन करवाया जा रहा है। शिविर के माध्यम से लगभग 50 बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण पूर्ण कर लिया है तथा इस वर्ष पयुर्षण महापर्व में कुछ स्थानों पर बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण भी करवाये। शिविर के संचालन हेतु दानदाताओं का सहयोग भी निरंतर रूप से प्राप्त हो रहा है। सभी अभिभावकों से निवेदन है कि वे अपने बालक-बालिकाओं को संस्कारित करने हेतु इस शिविर में अपने नज़दीक के क्षेत्र में अवश्य भेजें, जिससे वे धार्मिक जानकारी प्राप्त कर सके।

-राजेश भण्डारी, शिविर प्रभारी

संक्षिप्त-समाचार

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 21 सितम्बर 2014 को मुमुक्षु बहिन श्रीमती मंजुदेवीजी मेहता-बैंगलोर, श्रीमती सरोजदेवीजी सुराणा-चेन्नई, सुश्री खुशबु जी बागरेचा-हुबली एवं सुश्री आशा जी सुराणा-चेन्नई की भव्य शोभा यात्रा एवं अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। चार रथों पर मुमुक्षु बहिनें अपने उपकारी माता-पिता एवं परिवारजन के साथ सुशोभित हो रही थीं। शोभा यात्रा कल्पवृक्ष अपार्टमेंट से प्रारम्भ होकर चेन्नई महानगर के सूले, पेरियामेट, एलिफेन्ट गेट एवं साहुकारपेट के मुख्य मार्ग से होते हुए अभिनंदन समारोह स्थल तेरापंथ जैन विद्यालय, वडमल्लई स्ट्रीट, साहुकार पेट पहुँची।

श्राविका मण्डल के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। WINGS TO FLY

के शिविरार्थियों ने संयम पर सुन्दर नाटक की प्रस्तुति दी तथा श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडु ने भी नाटिका मंचित की। मुमुक्षु बहिनों का परिचय देते हुए संघ की ओर से उनका चुंदड़ी, माल्यार्पण व खोल के द्वारा अभिनंदन किया गया तथा अभिनन्दन-पत्र भेंट किए गए। शोभा यात्रा और अभिनंदन समारोह में लगभग 2500 श्रावक-श्राविकाएँ विशाल जनसमूह के रूप में उपस्थित थे। चेन्नई में ही इससे पूर्व 13 सितम्बर 2014 को पुरुषवाक्कम स्थित आचार्य आनन्द ऋषिजी म.सा. की शिष्या महाश्रमणी श्री पुष्पकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में मुमुक्षु सरोज जी सुराणा और मुमुक्षु आशा जी सुराणा का भावपूर्ण अभिनन्दन किया गया।

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में 14 सितम्बर, 2014 को 'इण्टरनेट का अनियन्त्रित उपयोग' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। विशेष रूप से 13 से 25 वर्ष की आयु वर्ग के युवक-युवतियों के लिये आयोजित इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य उन्हें इण्टरनेट और उसके माध्यम से Facebook, Whatsapp आदि Social Media के अनियन्त्रित उपयोग से होने वाली अनेक सम्भावित हानियों के बारे में सावधान करना है ताकि वे इन साधनों का प्रयोग करते समय अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक मर्यादाओं को ध्यान में रखें।

कार्यशाला के प्रथम वक्ता डॉ. जी.सी. मेहता ने अपने वक्तव्य में कहा कि Internet व Social Media आज के युग में बहुत महत्त्वपूर्ण व उपयोगी साधन बन गये हैं। जिनसे हम दुनियाभर में किसी से भी सम्पर्क कर सकते हैं और कोई भी जानकारी हासिल कर सकते हैं। लेकिन इन पर काम करते समय यह विवेक रखना बहुत जरूरी है कि इनसे हमारे व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन को कोई नुकसान न पहुँचे और हमारी अशान्ति का कारण न बन जायें। द्वितीय वक्ता साइबर क्राइम केसेज देखने वाले श्री मुकेश जी चौधरी ने कहा कि किसी व्यक्ति का Face book Page या Website को hack करना बहुत आसान है। Face book आदि पर जो भी व्यक्तिगत प्रोफाइल या Status और फोटो आदि डालें तो काफी सोच-समझकर डालें। एक बार इण्टरनेट पर डाली गई फोटो को आप चाहे बाद में हटा दें, परन्तु वह इन्टरनेट की दुनिया से हट नहीं सकती। साथ ही अपने मोबाइल में भी अपनी पर्सनल फोटो कम से कम रखें, क्योंकि उसके खो जाने पर न जाने कौन व्यक्ति उनका किस रूप में इस्तेमाल कर लेगा। Internet के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की सभी प्रकार की जानकारी आपके पास है, परन्तु यह आप पर निर्भर करता है कि आप उसमें से अपने ज्ञान को बढ़ाने की सामग्री लेते हैं या अपने व्यक्तित्व व चरित्र को गिराने वाली। कार्यशाला के अन्त में अनेक युवाओं ने इस विषय में तरह-तरह के प्रश्न पूछे जिनके बड़े ही सटीक और संतोषप्रद उत्तर उन्हें प्राप्त हुए।

हैदराबाद- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ग्रेटर हैदराबाद के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय युवति-सक्षमीकरण शिविर व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी आदि ठाणा के सान्निध्य में 15 से 17 अगस्त को सम्पन्न हुआ। अविवाहित बेटियों को वर्तमान समय में दूषित वातावरण से बचने का प्रशिक्षण दिया गया। विभिन्न कक्षाओं के माध्यम से साध्वीवृन्द ने मर्यादापूर्वक जीवन शैली के तौर-तरीके बताये। भारतीय जैन संघटना की ट्रेनर श्रीमती रक्षिताजी बोहरा एवं युवारत्न तरुणजी कर्णावट ने 21 वीं सदी में पनपी समस्याओं की जानकारी एवं समाधान के अनेक गुरु मंत्र प्रस्तुत किये।

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा सपरिवार 7 सितम्बर 2014 को जयपुर के विभिन्न स्थानकों में विराजित संत-सतियों से सांवत्सरिक क्षमायाचना की गई। श्रमण संघ के उपाध्याय श्री मूल मुनि जी म.सा. आदि ठाणा , आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री कमलप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा, आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा, महावीर नगर में विराजित श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा., मालवीय नगर में स्थित महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा से सामूहिक सांवत्सरिक क्षमायाचना की। अन्तिम चरण में लालभवन स्थानक में विराजित श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. एवं आदर्शनगर स्थानक में विराजित श्री रमणिक मुनिजी म.सा. आदि ठाणा से सामूहिक सांवत्सरिक क्षमायाचना की।

जलगांव- करुणा अन्तरराष्ट्रीय की हिन्दी भाषी क्षेत्रीय सभा 13 सितम्बर 2014 को अहिंसा तीर्थ कुसुम्बा, जलगांव में आयोजित की गई। राजस्थान, महाराष्ट्र आदि विभिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। श्री रतनलाल जी बाफना द्वारा प्रवर्तित अहिंसा तीर्थ का शुभारम्भ 300 गायों की गौशाला से हुआ, जिसमें अभी 3500 देशी गाएँ हैं, जिनके आवास-चारे पानी की सुन्दर व्यवस्था है। क्षेत्रीय सभा में करुणा क्लबों की भूमिका आदि विषयों पर सामूहिक चिन्तन किया गया। 17 वां राष्ट्रीय अधिवेशन जोधपुर केन्द्र के सौजन्य से 27-28 दिसम्बर 2014 को नाकोड़ा में होना सम्भावित है।

मुम्बई- जैन फुलवारी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 21 दिसम्बर 2014 को सर्व जैन विवाह योग्य ग्रेज्युएट एवं उच्च शिक्षा प्राप्त युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। यह सम्मेलन आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन, 32, दादीसेठ अग्यारी लेन, कालबादेवी, मुम्बई-400002 में प्रातः 9.00 बजे से प्रारम्भ होगा। इस सम्मेलन में राजस्थानी, गुजराती, कच्छी, महाराष्ट्री तथा हिन्दी भाषी प्रदेशों सहित देश के सभी भागों के श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी, सहित सभी जैन समुदाय के उच्च शिक्षित युवक-युवती भाग ले सकते हैं। सम्मेलन में भाग लेने के लिए उम्मीदवार को

5 दिसम्बर 2014 तक संस्था कार्यालय में अपना आवेदन दो फोटो और 500 रुपये शुल्क के साथ जमा कराना अनिवार्य है। **सम्पर्क सूत्र-** जैन फुलवारी, हिन्द इलेक्ट्रिक प्रिमाइसेस, नागु सयाजी वाड़ी, सामना प्रेस के पास, न्यू प्रभादेवी रोड़, मुम्बई-400025 (महा.), मोबाइल नं. 09930756598

नई दिल्ली- गच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेवसूरिश्वर जी म.सा., आचार्य श्री महाश्रमण जी म.सा. एवं दिगम्बराचार्य श्री श्रुतसागर जी म.सा. की निश्रा व शताधिक साधु-साध्वियों के सान्निध्य में **'जीतो नई दिल्ली चैप्टर'** के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन 9 अगस्त, 2014 को सम्पन्न हुआ। 'जीतो नई दिल्ली चैप्टर' के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री हेमन्त जैन पटवारी ने अपनी टीम के साथ जीतो एपेक्स चेयरमैन श्री नरेन्द्र बालदोटा से शपथ ग्रहण की। जीतो द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाती है। मुम्बई और दिल्ली दोनों स्थानों पर इसके केन्द्र हैं। सम्पर्क सूत्र-(1) B-101, Business Square, solitaire Park, 1st Floor, Opp. Apple Heritage & Bank of Baroda, Andheri-Kurla Road, Andheri (East) Mumbai-400093 (Mh.), Tel. No.:022-42877777, E-mail: ceo@jito.org, Website : www.jito.org, (2) Jain International Trade Organisation (New Delhi Chapter), 6th Floor, Arunachal Building, 19, Barakhamba Road, New Delhi-110001, Ph. No. :011-43010517, Fax : 011-23315400, E-mail : contact@jitodelhi.com, Website : www. jitodelhi.com

जयपुर- जैन विद्या संस्थान द्वारा 1. महावीर पुरस्कार वर्ष-2014 (51001/-), 2. स्वयंभू पुरस्कार वर्ष-2014 (31001/-) एवं 3. ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलतता लुहाड़िया पुरस्कार वर्ष-2014 (5001/-) पुरस्कार दिए जाने हैं। वर्ष 2014 के पुरस्कार हेतु पुस्तकें 31 अक्टूबर 2014 तक आमन्त्रित हैं। पुरस्कार की नियमावली, आवेदनपत्र व विस्तृत जानकारी के लिए जयपुर कार्यालय से सम्पर्क करें। सम्पर्क सूत्र- डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक-0141-2385247, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई मानसिंह रोड़, जयपुर-302004 (राज.)।

जोधपुर- 'ओसवाल महिमा' की ओर से 'देश की आजादी में ओसवालों का योगदान' विषय पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता, जिसका विवरण जिनवाणी के अगस्त 2014 के अंक में पृष्ठ 117 पर प्रकाशित है, निबन्ध-प्रेषण के लिए अंतिम तिथि अब 31 अक्टूबर 2014 कर दी गई है।

दुबई- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में द्विदिवसीय कार्यक्रम श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दुबई के द्वारा यू.ए.ई जैन संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में दुबई में आयोजित किया गया, जिसमें समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी एवं समणी आगमप्रज्ञाजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ तथा मुख्य अतिथि के रूप में आचार्य तुलसी जन्म-शताब्दी समारोह

समिति के मुख्य संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़ थे।

बधाई

दिल्ली- प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', निदेशक, बी.एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली को एम.जी.सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता द्वारा 'महादेव लाल सरावगी जैन आगम मनीषा सम्मान-2012' प्रदान किया गया, जिसमें प्रशस्तिपत्र, अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिह्न के साथ एक लाख रुपये का चैक भेंट किया गया। यह समारोह आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में दिल्ली में 1 अगस्त 2014 को सम्पन्न हुआ। आप सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में जैन दर्शन विभाग के प्रोफेसर रह चुके हैं।

चेन्नई- अहिंसा विचार मंच, उदयपुर के संस्थापक अध्यक्ष साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग

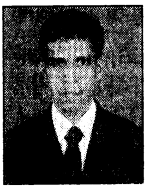

का आचार्य श्री हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड हेतु आर.सी.बाफना फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा चयन किया गया है। अहिंसा, शाकाहार, प्राणिरक्षा और जीवदया के क्षेत्र में श्रेष्ठ साहित्य-सृजन, विविध उत्प्रेरक कार्य तथा व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें यह अवार्ड प्रदान किया जा रहा है। सम्मान के अन्तर्गत उन्हें प्रशस्ति-पत्र और एक लाख रुपये प्रदान किये जायेंगे।

अहमदाबाद- श्री श्रेयांश नागोरी सुपुत्र डॉ. जितेश नागोरी (कमिश्नर, सेन्ट्रल एक्साइज

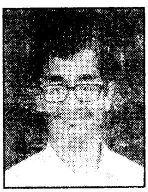

एण्ड कस्टम, अहमदाबाद) ने टाटा स्काई स्कोलरशिप की ऑन लाइन क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। पुरस्कार स्वरूप दो लाख रुपये का चैक उपन्यासकार चेतन भगत के द्वारा भेंट किया गया। आप बून्दी के प्रसिद्ध इतिहासविद् व लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स से सम्मानित डॉ. एस. एल. नागोरी के पौत्र हैं।

करौली- श्री अशोक कुमार जैन (व.अ.) पुत्र श्री रोशनलाल जी जैन को जनगणना-2011

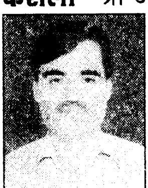

के दौरान असाधारण उत्साह और उच्च कोटि की सेवाओं के उपलक्ष्य में 15 अगस्त 2014 को भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त सम्मान पत्र एवं रजत पदक जिला कलक्टर, करौली ने प्रदान कर सम्मानित किया।

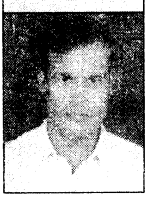

जोधपुर- श्री पवनकुमार जी जैन को 'जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण विरचित विशेषावश्यक-भाष्य का मलधारी हेमचन्द्रसूरि रचित बृहद्वृत्ति के आलोक में ज्ञानमीमांसीय अध्ययन' विषयक शोधकार्य पूर्ण करने पर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा पी-एच्.डी की उपाधि प्रदान की गई है। यह शोधकार्य आपने जिनवाणी के मानद सम्पादक

प्रोफेसर (डॉ.) धर्मचन्द जी जैन के निर्देशन में सम्पन्न किया है।

यश चोरडिया

अभितन मेहता

सिद्धार्थ जैन

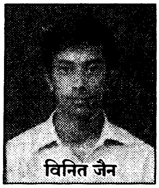
विनित जैन

सचिन कोठारी

इन्दौर- श्री यश चौरडिया सुपुत्र राजेन्द्रजी-सुनयनाजी चौरडिया ने सी.एस.परीक्षा में सम्पूर्ण भारत में सातवां एवं मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

अहमदाबाद- श्री अभितन मेहता सुपुत्र श्री मुकेशजी मेहता, सुपौत्र श्री स्व. अजयराज जी मेहता (भोपालगढ़) ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

चालीसगाँव- श्री महावीर सुपुत्र श्रीमती संगीता-नैनसुख जी आलिझाड़ ने डिप्लोमा सिविल इंजीनियर के अंतिम सेमेस्टर में 87.16 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

मालपुरा- सिद्धार्थ जैन सुपुत्र सूरज कुमारी-सुशीलकुमार जी गोखरू एवं सुपौत्र स्व. श्रीमती अचरजकंवर-पारसमल जी गोखरू ने सी.ए. फाइनल परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की है। आपने सी.एस. की परीक्षा भी दिसम्बर-2013 में उत्तीर्ण की तथा सीनियर सैकण्डरी (वाणिज्य) की परीक्षा 2010 में मेरिट में बारहवां स्थान प्राप्त किया था।

जोधपुर- श्री विनीत जैन सुपुत्र श्री राजकुमार जी जैन सुपौत्र स्व. श्री नेमीचन्द जी जैन 'भावुक' ने प्रथम प्रयास में सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

दूदू- श्री सचिन कोठारी सुपुत्र श्री माणकचन्द जी कोठारी ने कम्पनी सेक्रेटरी की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप स्व.श्री नौरतमलजी एवं स्व. श्रीमती चाँदकंवरजी कोठारी के सुपौत्र हैं।

मावली- संस्कार ज्योति के संस्थापक-संपादक श्री दलीचन्दजी 'दिव्येश' को उत्कृष्ट समाज सेवा हेतु गुरु सौभाग्य महिला सेवा संस्थान द्वारा समाज सेवा रत्न अलंकरण से विभूषित किया गया है।

श्रद्धांजलि

जोधपुर- संघ-सेवी, संघ समर्पित श्राविकारत्न श्रीमती किशोरकंवरजी सिंघवी धर्मपत्नी स्व. श्री मनोहरराज जी सिंघवी का 6 सितम्बर 2014 को संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त श्रीमती किशोरकंवरजी सिंघवी का जीवन सरलता, मधुरता,

उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से सुवासित था। संघ-समाज की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहीं। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहती थीं। संघ-संरक्षक डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत का अबोध बालवय से ही आप ने यशोदा मैया की तरह लालन-पालन करते हुए सुसंस्कार प्रदान किये। भले ही वे भाण्डावत परिवार की कुलवधू नहीं थी, लेकिन भाण्डावत परिवार में उनके संस्कारों का, उनकी सेवा का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। प्रतिवर्ष आचार्य भगवन्त-उपाध्याय भगवन्त एवं संत-सतीवर्ग की सेवा में चौका खोलकर संत-सतियों का सान्निध्य प्राप्त करना उनके जीवन का अंग था।

चेन्नई- अनन्य गुरुभक्त संघनिष्ठ सुश्रावक श्री चैनरूपचन्दजी बाफना का देवलोकगमन हो

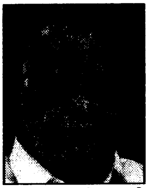

गया। आप का जीवन सामायिक साधना, गुरुभक्ति, संघनिष्ठा व स्वधर्मी वात्सल्य से सदा सम्पूरित रहा। गुरु भगवन्तों की पावन सन्निधि में उन्होंने नियमित सामायिक साधना, आजीवन शीलव्रत आदि अनेक व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण कर अपने जीवन को सुरभित किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन के अध्यक्ष के रूप में आपकी सेवाएँ चिरस्मरणीय रहेंगी। उपाध्यायप्रवर के गोटन वर्षावास में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा। उनके स्व. पूज्य पिताजी श्री पारसमल जी बाफना ने वर्षों तक श्री जैन रत्न विद्यालय के मानद मंत्री के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ दीं।

बेंगलुरु- सेवाभावी धर्मनिष्ठ परम गुरुभक्त सुश्रावक श्री पारसमल जी ओस्तवाल सुपुत्र

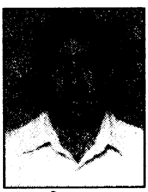

स्व. श्री चम्पालाल जी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले) का 6 सितम्बर 2014 को देहावसान हो गया। आप स्पष्टवादी, मिलनसार व व्यवहार कुशल श्रावक थे। आपके पूज्य पिताजी ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के बेंगलूरु-चेन्नई पदार्पण के समय वर्षों तक विहार सेवा की। आपने भी पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के बेंगलूरु पदार्पण के पूर्व विहार सेवा का लाभ लिया तथा शूले-अशोकनगर बेंगलूरु चातुर्मास में लगातार पाँच माह तक सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती चंचलबाई ओस्तवाल ने आचार्य श्री के सन् 2004 के बेंगलूरु वर्षावास में मासक्षपण तप की आराधना की। प्रतिवर्ष आचार्य देव के दर्शनार्थ सजोड़े आप पधारते व गुरुभक्ति करते थे। श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़, श्री भोपालगढ़ गौशाला, श्री अमरबकरा शाला भोपालगढ़ में आप नियमित रूप से सहयोग करते थे।

बेंगलुरु- समतामूर्ति, दृढ़निश्चयी सुश्राविका श्रीमती कविताजी सुराणा धर्मपत्नी श्री

सुनील जी सुराणा का 34 वर्ष की अल्पायु में 20 अगस्त 2014 को संलेखना-संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। संयम पथ की कामना से अनुप्राणित चित्त वाली सुश्राविका की मनःस्थिति रुग्णता होने पर भी धर्ममार्ग के प्रति सुदृढ़ थी। उन्होंने अपना अंतिम समय अशोकनगर जैन स्थानक में साध्वी श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में शुद्ध भावों के साथ संयम की प्रबल इच्छा से युक्त होकर पूर्ण किया।

कोलकात्ता- धर्मानुरागी, उदारहृदय सुश्राविका श्रीमती प्रेमकंवरजी बच्छावत धर्म

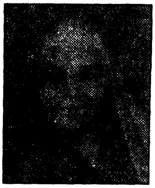

सहायिका स्व. श्री मूलचन्दजी बच्छावत (नागौर वाले) का 84 वर्ष की वय में 7 सितम्बर 2014 को संथारे के साथ महाप्रयाण हो गया। आपका जीवन उदारता, सरलता, विनम्रता, मधुरता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के प्रति दृढ़ श्रद्धावान थीं। आप सुश्रावक श्री सी.एम.बच्छावत(आई.ए.एस.) की मातुश्री थी।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती चंचलदेवी जी भण्डारी धर्मपत्नी श्री पुनमोहनचंदजी भण्डारी का 29 अगस्त 2014 को स्वर्गारोहण हो गया। आपकी रत्नसंघ के प्रति अनन्य आस्था थी। आप ज्ञान-ध्यान के साथ तप-त्याग में भी अग्रणी थीं। आप जोधपुर शहर विधायक सुश्रावक श्री कैलाश जी भंसाली की बहिन थीं। पर्यावरण-संरक्षण के प्रयोजन सेआपके परिवारजनों ने ओसवाल स्वर्गाश्रम में नवनिर्मित गैस आधारित चिता-मशीन में प्रथम दाह-संस्कार करवाया।

जयपुर- सेवाभावी कर्मठ सुश्रावक श्री ज्ञानचन्द जी वैद का 12 सितम्बर 2014 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय, दया, पौषध आदि करते रहते थे। आप सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष श्रीमान् श्रीचंदजी बेताला के समधी थे। आप सभी सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे।

जयपुर- धर्मपरायण सुश्रावक श्री कमलचन्द जी मूसल का 14 सितम्बर 2014 को देवलोकगमन हो गया। अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप सदैव सामायिक स्वाध्याय करते थे। आपके जीवन पर आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

खेतिया (म.प्र.)-तपोनिष्ठ सुश्रावक श्री मोहनलालजी सुपुत्र स्व. श्री रेखचन्द जी बिनायकिया का 4 सितम्बर 2014 को 64 वर्ष की उम्र में परलोक गमन हो गया। आपकी चारित्रनिष्ठ संत-सतियों के प्रति पूर्ण श्रद्धा थी। आप नियमित रूप से 5-7 सामायिक,

स्वाध्याय, आगम-वाचन, उभयकाल प्रतिक्रमण, जमीकन्द का त्याग, 14 नियम, शीलव्रत का पालन करने वाले चिन्तनशील सुश्रावक थे। आप सरल स्वभावी, मिलनसार हँसमुख एवं उदारमना थे।

नगरी- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पारसमल जी छाजेड़ का 84 वर्ष की वय में स्वर्गारोहण हो गया। प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय के साथ ही आप वर्षों से रात्रिभोजन, जमीकंद-त्याग एवं शीलव्रत का पालन करते थे। आप आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. के सांसारिक मामाजी थे।

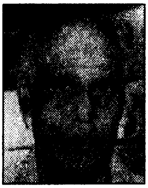

चेन्नई- सुश्रावक श्री त्रिलोकचन्द जी नाहटा का 78 वर्ष की वय में 17 सितम्बर 2014 को देहावसान हो गया। गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के बंगारपेट चातुर्मास सन् 2006 में सेवा का आपने पूर्ण लाभ लिया। चातुर्मास में आपने शीलव्रत एवं प्रतिदिन सामायिक करने के नियम ग्रहण किए।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती लालकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती सवाईसिंह जी मेहता

(लुणावत) का 95 वर्ष की वय में 1 सितम्बर 2014 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक तथा कई तरह के प्रत्याख्यान करती थीं। आपकी रत्नसंघ के संत-सतियों फे प्रति गहरी श्रद्धाभक्ति थी। आपकी पुत्रवधू श्रीमती शांतिजी मेहता स्वाध्याय संघ की वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं तथा निरन्तर संघ को सेवा प्रदान कर रही हैं।

अलीगढ़-रामपुरा- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मूलचन्द जी जैन का 82 वर्ष की वय में 21

सितम्बर 2014 को स्वर्गारोहण हो गया। आप नियमित सामायिक करने वाले धार्मिक प्रवृत्ति के श्रावक थे। आपने श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अलीगढ़ की अध्यक्षता का दायित्व निर्वहन किया। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

इन्दौर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रतनदेवी जी धर्मपत्नी श्री सुजानमल जी नाहर का 72 वर्ष की आयु में 27 अगस्त 2014 को पंचदिवसीय निर्जल उपवास सहित संथारा-संल्लेखना पूर्वक मरण हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार, मृदुभाषी, कोकिल कंठी, साधु-संत प्रेमी व हँसमुख स्वभाव की धार्मिक महिला थीं। आयंबिल, उपवास, बेला, तेला, पाँच, आठ व नौ उपवास एवं ओलीजी की तपस्या आपने अनेक बार की।

प्रतिदिन 5 सामायिक, प्रतिक्रमण आपके जीवन का अंग था। आपकी सेवा से समाज में नयी प्रेरणा का संचार हुआ।

जलगाँव- सुश्राविका श्रीमती गटुबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री कपूरचन्द जी कांकरिया

(भोपालगढ़ वाले) का 82 वर्ष की आयु में 30 अगस्त 2014 को स्वर्गवास हो गया। आप नित्य पाँच-सात सामायिक करती थीं। धर्मनिष्ठ श्राविका की पूज्य साधु-संतों के प्रति अटूट श्रद्धा थी। भोपालगढ़ रहते हुए साधु-संतों की एवं वैरागिन भाई-बहनों की सेवा में हमेशा तत्पर रहती थीं।

जयपुर- संतसेवी श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सम्पत कुमारीजी धर्मसहायिका स्व. श्री मनोहरसिंहजी कर्णावट का स्वर्गवास 27 अगस्त 2014 को हो गया। सरलता से युक्त आपका जीवन कई गुणों से सुरभित था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। आपके जीवन पर साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

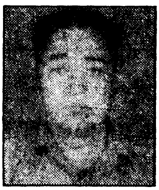

सतारा- अनन्य गुरुभक्त संघसेवी सुश्रावक श्री गिरधारीचंदजी मेहता सुपुत्र श्री किशनचन्द जी मेहता (नाहर) का स्वर्गगमन 22 सितम्बर 2014 को हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय एवं तपाराधन किया करते थे। आप सतारा संघ के कर्मठ कार्यकर्ता थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

न लगाएँ जीवन में बट्टा

(अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा युवकों के लिए प्रसारित ये नारे श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी द्वारा रचित हैं।)

1. F&O में मत लगा मन, वर्ना व्यर्थ गवाँएगा धन।।
2. चल रही आजकल एक हवा, NCDEX में मूल धन भी रहे गँवा।
3. जिन्हें लगा Commodity का स्वाद, वे हो गए बर्बाद।
4. मत पकड़ NCDEX की राह, हार कर कइयों ने करली आत्मदाह।
5. भले ही खा लो सादा रोटी, पर मत चाहो कमाई खोटी।
6. NCDEX लाता है बर्बादी का पैगाम, नहीं है सद्गृहस्थ का काम।
   मत लगाओ इसमें भूलकर भी दाम, वरना दिवालिया होकर बिगड़ेगा नाम।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता (अधिकतम 20 वर्ष) हेतु प्रत्येक

769 श्री कमलजी सिपानी, बेंगलुरु(कर्नाटक)
770 श्री आनन्द कुमारजी पटवा, मैसूर (कर्नाटक)

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता(अधिकतम 20 वर्ष) हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15302 से 15336 तक 35 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

5100/- डॉ. विमलचन्द जी दिलीपकुमारजी जैन, हिण्डौनसिटी।

5100/- श्री महिपालचंद जी दिलीपचंदजी भण्डारी 'वारणी वाले', चेन्नई।

5100/- श्री सज्जनराजजी, महेन्द्र कुमारजी बाफणा, जलगाँव, कुमारी कोमलजी बाफणा के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

5100/- श्री पारसमलजी, शांतिलालजी, महावीरचन्दजी, अशोक कुमारजी कांकरिया (भोपालगढ़ वाले), जलगाँव, पूज्य मातुश्री श्रीमती गटुबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री कपूरचन्दजी कांकरिया का 30 अगस्त, 2014 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

5100/- श्री हेमन्त कुमारजी, पारसमलजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), बेंगलोर, श्री पारसमलजी ओस्तवाल का 06 सितम्बर, 2014 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

5000/- श्रीमती दिव्याजी सुमितजी डागा, जयपुर, श्रीमती कविनाजी धर्मसहायिका श्री सुनीलचन्दजी डागा के 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

4100/- श्री अभयकुमारजी उत्तमचंदजी खिंवसरा, माण्डल (महा.)।

3100/- श्री सागरमलजी, महावीरजी, राजेशजी छाजेड़, चेन्नई।

3100/- श्री कस्तूरचन्दजी सुशीलाजी डोसी, ब्यावर।

2100/- श्री मदनलालजी, पारसमलजी बोथरा, बीजापुर।

2100/- श्रीमती पदमाबाईजी, विजयराजजी, आनन्दराजजी बाघमार, बेंगलोर।

2100/- श्री धनरूपचन्दजी, अमित जी मेहता, बेंगलोर।

2100/- श्री अशोक कुमारजी सिंगी, जोबनेर।

2100/- श्री नवरतनमलजी बम्ब, भीलवाड़ा, शास्त्रीनगर अहिंसा भवन भीलवाड़ा के अध्यक्ष श्री दिनेशजी बम्ब के प्रथम बार अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्री रामदयालजी, उम्मेदचन्दजी जैन (सवाईमाधोपुर वाले), कोटा, श्रीमती हेमलताजी धर्मसहायिका श्री उम्मेदचन्दजी जैन के मासक्षपण (31 दिन) की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्रीमती आशाबाईजी बम्ब धर्मपत्नी श्री करणजी बम्ब के 21 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्रीमती बसंताबाईजी एवं श्री नन्दकिशोरजी दुधेड़िया, बेंगलोर, श्रीमती सुनीताबाईजी धर्मसहायिका श्री नन्दकिशोरजी पुत्रवधू स्व. श्री उगमचन्दजी दुधेड़िया के मासखमण की

तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्री दलीचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, अशोक कुमारजी नाहटा (बंगारपेठ वाले), टी नगर-चेन्नई, श्री त्रिलोकचन्दजी नाहटा का 17 सितम्बर 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

2100/- श्री मनमोहनराजजी, दिलखुशराजजी, रविजी, दिनेशजी, चंदनजी, अभिषेकजी, पीपाड़सिटी हाल मुकाम जोधपुर, पूज्य माताजी एवं दादीजी श्रीमती सूरतदेवी जी मुथा धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचंदजी मुथा की प्रथम पुण्यस्मृति में।

2100/- श्री डूंगरचंदजी, अनिलकुमारजी, नरेशकुमारजी भुरट, जलगांव (महा.)।

2100/- श्री नेमीचंदजी, नीलमचंदजी, प्रकाशचंदजी चोरडिया, जलगाँव (महा.)।

1511/- डॉ. पी.एम. कुम्भट, जोधपुर, धर्मसहायिका श्रीमती कुसुम जी कुम्भट, सुपुत्री श्रीमती बेलाजी पारख एवं नाती दामाद श्री राकेश जी कवाड़ के अठाई तपश्चर्या के उपलक्ष्य में।

1121/- श्री गणपतजी-मंजूश्रीजी सुराणा, श्री आर्जवजी, अग्रीणा जी, गर्विशजी, जोधपुर, श्री उम्मेदमलजी सुराणा सुपुत्र श्री सुजानमलजी सुराणा की पन्द्रहवीं पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि स्वरूप।

1121/- श्रीमती आस्था जी जैन, श्रीमती अल्फाजी जैन, श्रीमती आकांक्षा जी प्रजापति, जोधपुर, श्रीमती लाडकंवरजी सुराणा धर्मसहायिका स्व. श्री उम्मेदमल जी सुराणा, जोधपुर की पाँचवीं पुण्यतिथि पर भावांजलि स्वरूप।

1121/- श्रीमती मंजूश्रीजी-श्री गणपतजी सुराणा, जोधपुर, श्रीमती सुकनकंवरजी एवं श्री सुजानमलजी सुराणा की पुण्यस्मृति में।

1111/- श्रीमती शकुनदेवीजी, मदनलालजी बाघमार, जबलपुर।

1100/- श्री प्रवीणजी, नितिनजी, दीपकजी रूणवाल, माधवनगर-बीजापुर।

1100/- श्री बसंतकुमारजी हीरावत,जयपुर, श्रीमती रमाजी धर्मसहायिका श्री अभिषेकजी पुत्रवधू श्रीमती राजकुमारीजी-बसंतजी हीरावत द्वारा पी-एच्.डी. डिग्री प्राप्त करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री दाढमचन्दजी रांका, भीलवाड़ा, धर्मसहयिका श्रीमती अनुराधाजी एवं सुपुत्र श्री मुकेश कुमारजी रांका के क्रमश: 9 व 8 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती स्नेहलताजी सुपुत्र श्री अनिल कुमारजी तालेरा, मन्दसौर।

1100/- श्री जैन श्वेताम्बार प्रगति संघ, जोबनेर।

1100/- श्री नेमीचन्दजी, राजेन्द्रजी कटारिया (बिलाड़ा निवासी), हैदराबाद, कुमारी सोनमजी सुपुत्री श्री राजेन्द्रजी कटारिया के द्वारा 24 दिन तीर्थंकर आराधना करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री शांतिलालजी, जितेन्द्र कुमारजी बागरेचा, हैदराबाद, वीरपिता श्री शांतिलालजी बागरेचा के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री भंवरलालजी, दिलपुष्पराजजी, दीपक कुमारजी दफ्तरी, हैदराबाद, श्री दीपक कुमारजी के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री गौतमचन्दजी, प्रमोद कुमारजी मूथा, हैदराबाद।

1100/- श्री मोहनलालजी, मुकेश कुमारजी बागरेचा, हैदराबाद, वीरपिता श्री शांतिलालजी बागरेचा के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री ईश्वरलालजी, हर्षल कुमारजी लोढ़ा, जलगाँव।

1100/- श्री सुभाषचन्दजी, नितिन कुमारजी रांका, पिंपलनेर।

1100/- श्री जम्बूकुमारजी, सिद्धार्थकुमारजी ओस्तवाल, जोधपुर, शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती शांतिदेवीजी सुरेशचंदजी, मानचंदजी, कैलाशजी, सुधीरजी मेहता (लुणावत), जोधपुर, पूज्य माताजी श्रीमती लालकंवरजी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री सवाईचंद जी मेहता का 01 सितम्बर, 2014 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- एस.एस. जैन संघ, पल्लीपट, सहयोग हेतु।

1100/- श्रीमती संतोषकंवर जी लूंकड़ धर्मपत्नी श्री करोड़ीमल जी लूंकड़, जोधपुर, श्रीमती संतोष जी लूंकड़ के नौ उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती पुष्पाजी एवं श्री गणपतराजजी बागमार, चिंतादरीपेट, चेन्नई, सुपुत्र श्री विक्रम बागमार के बी.ई. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री सुरेशचन्द जी मूथा, बैंगलुरु, सुपुत्र श्री अनिल जी मूथा के अठाई तप के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री प्रेमचन्द जी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़, पुत्रवधू श्रीमती शर्मिलाजी धर्मसहायिका श्री राजेश जी मोदी की 8 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती विद्याजी मेहता, श्री विनितजी मेहता, सतारा (महा.), श्री गिरधारीचन्द जी मेहता के 22 सितम्बर 2014 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी स्मृति में।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

300000/- श्री सुभाषचन्दजी, श्रीमती ललिताजी, श्री अशोककुमारजी, श्रीमती सुषमाजी, श्री बिपीन जी, श्रीमती ममताजी, श्री पुनीतजी, श्री यशजी धोका परिवार, मैसूर, स्वाध्याय निधि संरक्षक, शिक्षा निधि संरक्षक एवं वात्सल्य निधि सदस्यता हेतु सहयोग।(संशोधित नाम)

11000/- महिला मण्डल, रालेगाँव, जिला-यवतमाल (महा.), संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री मुकेश जी मेहता, अहमदाबाद, संघ सहायतार्थ।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

5000/- श्रीमती विमलकंवरजी चम्पालाल जी कर्णावट चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई, श्रीमती चंद्रा सज्जन जी कर्णावट एवं निशा सिद्धार्थ जी कर्णावट, मुम्बई द्वारा श्री सज्जन जी कर्णावट के रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3140 के 2014-2015 के लिए असिस्टेंट गवर्नर के पद पर मनोनीत होने पर।

3100/- डॉ. विमलचंदजी, दिलीपकुमारजी जैन, हिण्डौनसिटी।

1101/- श्री महेन्द्रकुमारजी राहुलजी जैन रामपुरा वाले, सवाईमाधोपुर, पंचायत प्रसार अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त होने पर।

1100/- श्री दिनेशमल क्षमेन्द्रलक्ष्य खींवसरा, जोधपुर, श्रीमती खुशबू धर्मपत्नी अनुज बुरड़ के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री बाबूलालजी ललितकुमारजी पितलिया, कडोदरा, सूरत, पर्युषण सहयोग।

पर्युषण सहयोग

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
21000	मजल	15000	पल्लीपट
10001	कोलकाता	9100	आनंदपुरी (कानपुर)
7100	कृष्णानगर	7100	ईरोड़

7000	पल्लीपट	1500	बडनेरा
5100	चिंतादरीपेट	5100	तिरूवन्मियूर
5100	पोलुर	5100	आदित्यपुरम्
5000	करईकल	4101	कडोदरा
4100	सिलवासा	3300	पम्मल
3100	नुंगाम्बकम	3100	कलाडीपेट
3100	चेतपेट	3100	रेणिगुंटा
3100	कलाकुरची	3100	विरदाचलम
3100	चलथान	3100	विकरोली(मुम्बई)
3100	पुत्तुर	3100	नारनोल
3100	छिंदवाडा	3000	गुडवांचरी
2500	डोम्बीवली	2500	केलसी
2500	बेरछामण्डी	2151	उन्हैल
2100	चित्तुर	2100	पेरूंगलाथुर
2100	पाउंटा साहिब(हि.प्र.)	2000	वागली
2000	बेगूं	1151	श्योपुरकलां
1100	गंगापुरसिटी	1100	उलुंदूरपेट
1100	कदम्बाथुर	1100	नीमचसिटी
1100	आकोदियामण्डी	1100	वालोद

मध्यप्रदेश स्वाध्याय संघ को प्राप्त पर्युषण सहयोग

3100	बालाघाट	2500	टुकलिया
2100	गरोठ		

महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ को प्राप्त पर्युषण सहयोग

24500	पाचोरा	4401	कलवाडी
3600	डोम्बीवली	3000	वाकोद
2100	पारसिवनी	2100	शिरपुर
2000	छिंदवाडा	1511	वालुज
1500	बडवानी	1500	चिखली
1500	नसीराबाद	1500	दूसरबीड
1500	मांडल	1200	देऊर
1111	तोंडापुर	1100	वरणगांव
1100	वरखेडी	1100	भडगांव
1100	उम्बरखेड	1100	इच्छापुर
1100	होलनाथा	1100	कजगांव
1100	पारोला		

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

35000/- श्री रतनलाल सी. बाफणा, जलगाँव, नूतन साहित्य 'विचारों के आभूषण' के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

3100/- श्री सागरमलजी, महावीरजी, राजेशजी छाजेड़, चेन्नई।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

12000/- श्रीमती रेणु परमलाल जी मालकस, मुम्बई, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु।
7000/- वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, सोजत रोड़, सहयोगार्थ।
5555/- श्री गणपतराज जी सिंघवी, सहयोगार्थ
2100/- श्रीमती प्रकाशकंवरजी मोहनोत,जोधपुर,स्व.श्री श्याम जी मोहनोत की चतुर्थ पुण्यस्मृति में।
2100/- श्रीमती पूजा जी जैन (सोमानी), कोलकाता, सहयोगार्थ।
1100/- श्रीमती कुमकुम धर्मपत्नी श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर, सहयोगार्थ।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

12000/- श्री अनिल समिता जी डागा, मुम्बई।
12000/- श्री दलीचन्दजी, किशनलाल जी नाहटा, के.जी.एफ., बैंगलुरु।
12000/- श्रीमती लीलाबाई, यशवन्तकुमारजी, प्रवीणकुमारजी छाजेड़, बंगारपेट, पूजा संग अभिषेक के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
12000/- श्री सज्जनराजजी, महेन्द्र जी बाफना, जलगांव, सुश्री कोमल के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।
6000/- सुश्री निकी जैन सुपुत्री श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, कुण्डेरा, सवाईमाधोपुर।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व

कार्तिक कृष्णा 8 गुरुवार	**16.10.2014**	**अष्टमी, आचार्य गुमानचन्द्र जी म.सा. की 213 वीं पुण्यतिथि**
कार्तिक कृष्णा 14 बुधवार	**22.10.2014**	**चतुर्दशी**
कार्तिक कृष्णा 30 गुरुवार	**23.10.2014**	**पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस**
कार्तिक शुक्ला 5 मंगलवार	**28.10.2014**	**ज्ञान पंचमी**
कार्तिक शुक्ला 6 बुधवार	**29.10.2014**	**आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 52 वां दीक्षा दिवस**
कार्तिक शुक्ला 8 शुक्रवार	**31.10.2014**	**अष्टमी**
कार्तिक शुक्ला 14 बुधवार	**05.11.2014**	**चतुर्दशी**
कार्तिक शुक्ला 15 गुरुवार	**06.11.2014**	**चातुर्मासिक पक्खी एवं वीर लोंकाशाह जन्म जयन्ती**
मार्गशीर्ष कृष्ण 8 शनिवार	**15.11.2014**	**अष्टमी**
मार्गशीर्ष कृष्ण 14 गुरुवार	**21.11.2014**	**चतुर्दशी, पक्खी**

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है। यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड़, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

– आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari
Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

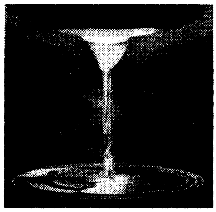
Electric Arc Furnace

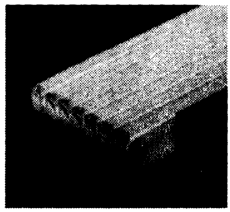
Billets

Rolling Mill

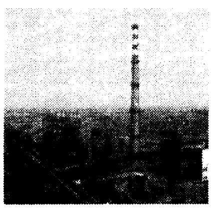
Captive Power Plant

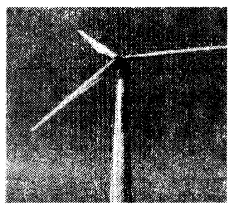
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

 # 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित
आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तरता के लिए आप योजना में अर्थ सहयोग की भावना को प्रबल करें एवं अर्थ सहयोग करने वालों को प्रेरणा करावें।

आप जैसे श्रीमंतों के पूर्ण समर्पण एवं अर्थ सहयोग से यह योजना अपने गुरु भाईयों के छात्र-छात्राओं को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में निरन्तर रूप से सहयोग कर रही है। छात्रवृत्ति योजना को अपने लक्ष्यों की ओर प्रगति करने के लिए आपके निरन्तर अर्थ सहयोग की आवश्यकता है।

निवेदन है कि अपने परिवार में होने वाली खुशियों के दिवस को मूर्त रूप देने के लिए छात्रवृत्ति योजना में रुपये 3000/-, 6000/-, 9000/- या एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र अर्थ सहयोग करके दिवस विशेष को चिरस्थायी बनायें एवं पुण्य कमायें।

ज्ञान का एक दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइये।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं एवं अन्य को अर्थ सहयोग की प्रेरणा करके योजना को गतिशील करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है।

A/c Name-Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address-AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN) IFSC Code- UTIB0000168 PAN No. AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.
सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पत पर भेजें-

B. Budhmal Bohra
Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn.,
CHENNAI-600101 (Tamilnadu)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (Mob. 95430 68382)

Name	Place	Contact No.	Name	Place	Contact No.
Ashok Kavad	Chennai	9381041097	Sumtichand Mehta	Pipar	9414462729
Budhmal Bohra	Chennai	9444235065	Manoj Kankaria	Jodhpur	9414563597
Praveen Karnaavat	Mumbai	9821055932	Kushalchand Jain	Sawai Madhopur	9460441570
Mahendra Bafna	Jalgaon	9422773411	Rajkumar Golecha	Pali	9829020742
Ravindra Jain	Sawai Madhopur	9413401835	Harish Kavad	Chennai	9500114455
Suresh Chordia	Chennai	9444028841	Jitendra Daga	Jaipur	9829011589
Vikram Bagmar	Chennai	9841090292	Sheryansh Mehta	Jodhpur	9799506999

नोट- विनम्र निवेदन है कि आपके द्वारा जमा कराये गये अर्थसहयोग की राशि जमा कराई जायें उसकी सूचना CALL या MSG के द्वारा इस नम्बर Mob. 95430-68382 पर भेज देवें।

जय गुरु हीरा जय गुरु हस्ती जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।
- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते हैं और श्रावक भी।

- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

धर्म मानव-जीवन के लिए उतना
ही आवश्यक है, जितना वायु सेवन।

- आचार्य हस्ती

समाज व राष्ट्र में मांसाहार के
विरोध में प्रबल आवाज उठाएँ।
मरने वाले जानवरों को अपनी अर्जित
कमाई से बचाने के लिए सक्रिय बनें।

- आचार्य हीरा

आत्मा में स्वभाव से ज्ञान रहा हुआ है।
उसे प्रकट करने वाला स्वाध्यायी है।
स्वाध्यायी ही साधना करता है।

- उपाध्याय मान

विज्ञापन सौजन्य गुप्तदानी

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अक्टूबर, 2014
वर्ष : 72 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अक्टूबर, 2014 ★ कार्तिक, 2071

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन